तीन बहनें

चार अंकों का ड्रामा

पात्र

प्रोज़ोरोव, अन्द्रेई सेर्गेयेविच (अन्द्रूशा)
नताल्या इवानोव्ना- उसकी प्रेमिका, बाद में पत्नी
ओल्गा :
माशा : } अन्द्रेई की तीन बहनें
इरीना :
कुलीगिन, फ़्योदोर इल्यीच – अध्यापक, माशा का पति
वेर्शीनिन, अलेक्सान्द्र इग्नात्येविच – लेफ़्टिनेंट कर्नल, तोपख़ाने का कमांडर
तुज़ेनबाख़, निकोलाई ल्वोविच – नवाब, लेफ़्टिनेंट
सोल्योनी, वसीली वसील्येविच – छोटा कप्तान
चेबुतीकिन, इवान रोमानोविच – फ़ौजी डाक्टर
फ़ेदोतिक, अलेक्सेई पेत्रोविच – छोटा लेफ़्टिनेंट
रोदे, व्लादीमिर कार्लोविच – छोटा लेफ़्टिनेंट
फ़ेरापोन्त – नगर-पंचायत का बूढ़ा चौकीदार
अनफ़ीसा – अस्सी बरस की बूढ़ी आया

(घटना-स्थल – एक छोटा नगर)

पहला अंक

(प्रोज़ोरोव परिवार का घर। स्तम्भोंवाला दीवानख़ाना जिसके पीछे एक बड़ा कमरा दिखाई दे रहा है। दोपहर। बाहर धूप खिली हुई है, सुखद वातावरण है। बड़े कमरे में मेज़ पर नाश्ता लगाया जा रहा है।

हाई स्कूल की अध्यापिका की गहरे नीले रंग की पोशाक पहने हुए ओल्गा कभी खड़े-खड़े और कभी चलते-फिरते हुए कापियां जांचती रहती है। काले कपड़े पहने और अपनी टोपी को घुटनों पर रखे हुए माशा बैठी किताब पढ़ रही है। सफ़ेद फ़्राक पहने हुए इरीना विचारों में डूबी-डूबी-सी खड़ी है।)

ओल्गा : पूरा एक साल हो गया पिता जी का देहान्त हुए। वह आज, पांच मई को, तुम्हारे जन्मदिन पर ही चल बसे थे, इरीना। उस दिन बहुत ठण्ड थी, बर्फ़ गिर रही थी। मुझे लग रहा था कि मैं यह सदमा सहन नहीं कर पाऊंगी, तुम मुर्दे की तरह बेहोश पड़ी थीं। लेकिन अब एक साल बीत चुका है, हम साधारण ढंग से इस बात की चर्चा कर सकती हैं, तुमने सफ़ेद पोशाक भी पहन ली है और तुम्हारा चेहरा खिला हुआ है। **(घड़ी बारह बजाती है)** घड़ी ने तब भी ऐसे ही घण्टे बजाये थे।

(ख़ामोशी)

मुझे याद है कि जब पिता जी का जनाज़ा ले जाया जा रहा था तो बैंड बज रहा था और क़ब्रिस्तान में गोलियां दाग़कर सलामी दी गयी थी। वह जनरल थे, ब्रिगेड-कमांडर थे, फिर भी उनके

जनाज़े के पीछे चलनेवालों की संख्या बहुत नहीं थी। वैसे, उस वक़्त बारिश भी हो रही थी। बहुत ज़ोर की बारिश थी और बर्फ़ गिर रही थी।

इरीना : नहीं याद दिलाओ यह सब!

(स्तम्भों के पीछे बड़े कमरे में मेज़ के पास नवाब तुज़ेनबाख़, चेबुतीकिन और सोल्योनी दिखाई देते हैं)

ओल्गा : आज ठण्ड नहीं है, खिड़कियां खुली रखी जा सकती हैं, मगर भोजवृक्षों पर अभी कोंपलें नहीं निकलीं। पिता जी ब्रिगेड-कमांडर बने और ग्यारह साल पहले हमें अपने साथ लेकर मास्को से यहां आ गये थे। मुझे बहुत अच्छी तरह से याद है कि इसी वक़्त यानी मई के शुरू में मास्को में बहार का रंग छा गया था, सब कुछ खिल उठा था, तन सहलाती हल्की गर्माहट थी, सब कुछ धूप में नहा उठा था। ग्यारह साल बीत चुके हैं और मुझे वहां की हर चीज़ ऐसे याद है मानो यह कल की ही बात हो। हे भगवान! आज सुबह जब मेरी आंख खुली तो धूप का सागर-सा नज़र आया, वसन्त की छटा दिखाई दी और मेरा मन ख़ुशी से नाच उठा, मास्को जाने के लिये बुरी तरह से छटपटाने लगा।

चेबुतीकिन : तुम बेपर की उड़ा रहे हो!

तुज़ेनबाख़ : बेशक, सब बकवास है।

(किताब के विचारों में डूबी-खोयी माशा किसी गाने की धुन पर धीरे-धीरे सीटी बजाती है)

ओल्गा : माशा, सीटी नहीं बजाओ। तुम यह कर ही कैसे सकती हो!

(ख़ामोशी)

चूंकि मैं हर दिन स्कूल में पढ़ाती हूं और उसके बाद रात होने तक ट्यूशनों के चक्कर में रहती हूं, इसलिये मेरे सिर में हर वक़्त दर्द होता रहता है और मुझे ऐसे लगता है मानो मैं बुढ़ा चुकी हूं। सच, इन चार सालों में, जब से मैं स्कूल में पढ़ाने लगी हूं, मैं ऐसे महसूस करती हूं मानो मेरे शरीर में से मेरी सारी शक्ति और जवानी धीरे-धीरे, बूंद-बूंद करके निकलती जा रही है। और बस, एक ही चाह लगातार बढ़ती तथा दृढ़ होती जा रही है...

इरीना : मास्को चलें! यह मकान बेच दिया जाये, यहां सब कुछ ख़त्म किया जाये और मास्को चल दें...

ओल्गा : हां! जल्दी से जल्दी मास्को चलें।

(चेबुतीकिन और तुज़ेनबाख़ हंसते हैं)

इरीना : भैया तो शायद प्रोफ़ेसर हो जायेंगे और फिर किसी हालत में भी यहां नहीं रहेंगे। बस बेचारी माशा ही यहां रह जायेगी।

ओल्गा : माशा हर साल पूरी गर्मियों के लिये मास्को आ जाया करेगी।

(माशा किसी गाने की धुन पर धीरे-धीरे सीटी बजाती है)

इरीना : भगवान ने चाहा तो सब कुछ ठीक हो जायेगा। **(खिड़की से देखती है)** बहुत ही प्यारा मौसम है आज। मैं नहीं जानती कि क्यों मेरा दिल इतना ख़ुश है! आज सुबह ही याद आया कि मेरा जन्मदिन है और मुझे अपने बचपन का स्मरण हो आया जब अम्मां ज़िन्दा थीं। कैसे अद्‌भुत विचारों, कैसे

अनोखे विचारों ने मुझे विह्वल कर दिया!

ओल्गा: आज तो तुम खूब चमक रही हो, बहुत ही सुन्दर लग रही हो। माशा भी बड़ी प्यारी लग रही है। अन्द्रेई भैया भी अच्छा लगता, लेकिन वह बहुत मोटा हो गया है। मुटापा उसे जंचता नहीं। और मैं बुढ़ा गयी हूं, बहुत दुबली हो गयी हूं और शायद इसलिये कि स्कूल में लड़कियों पर झल्लाती रहती हूं। आज मेरी छुट्टी है, मैं घर पर हूं, मेरे सिर में दर्द नहीं और कल की तुलना मैं आज अपने को जवान महसूस कर रही हूं। मैं अट्ठाइस साल की ही हूं लेकिन ... सब कुछ अच्छा है, जो कुछ करता है भगवान ही करता है, फिर भी मुझे लगता है कि अगर मेरी शादी हो जाती और मैं दिन भर घर में ही बैठी रहती तो यह कहीं बेहतर होता।

(**खामोशी**)

मैं अपने पति को प्यार करती।

तुज़ेनबाख़ (सोल्योनी से): आप बड़ी बेसिरपैर की बातें करते हैं, तंग आ गये हैं हम आपकी बातें सुनते हुए। (**दीवान-खाने में आकर**) मैं आपको बताना भूल गया। आज हमारे तोपखाने का नया कमांडर वेर्शीनिन आपके यहां पधारनेवाला है। (**पियानो के पास बैठ जाता है**)

ओल्गा: सच! बड़ी खुशी की बात है!

इरीना: बूढ़ा है क्या?

तुज़ेनबाख़: नहीं, बूढ़ा तो नहीं। ज़्यादा से' ज़्यादा चालीस-पैंतालीस होगा। (**धीरे-धीरे पियानो बजाता है**) भला आदमी लगता है। बुद्धू नहीं है – इतनी बात बिल्कुल पक्की है। लेकिन बोलता बहुत है।

इरीना: दिलचस्प आदमी है?

तुज़ेनबाख़ : हा , कुछ बुरा नहीं , लेकिन उसके साथ बीवी , सास और दो बच्चियां भी हैं। शादी भी उसने दूसरी बार की है। वह लोगों के यहां जाता है और सब से यही कहता है कि उसकी बीवी है और दो बच्चियां हैं। वह यहां भी यही कहेगा। उसकी वीवी के कुछ पेच ढीले हैं, छोकरियों जैसी लम्बी चोटी है उसकी, भारी-भरकम शब्दों का उपयोग करती है, फ़लसफ़ा बघारती है और सम्भवत: पति की ज़िन्दगी में ज़हर घोलने के लिये अक्सर आत्महत्या की कोशिशें करती रहती है। मैंने तो कभी का ऐसी बीवी को छोड़ दिया होता, लेकिन वह उसे बर्दाश्त करता है और सिर्फ़ इसका रोना ही रोता रहता है।

सोल्योनी (चेबुतीकिन के साथ बड़े कमरे से दीवानख़ाने में आते हुए) : एक हाथ से मैं केवल डेढ़ पूड* वज़न उठाता हूं, जबकि दो हाथों से पांच या छ: पूड तक उठा लेता हूं। इससे मैं यह नतीजा निकालता हूं कि एक आदमी की तुलना में दो आदमी दुगुने नहीं, बल्कि तिगुने या इससे भी ज़्यादा ताक़तवर होते हैं ...

चेबुतीकिन (चलते-चलते अख़बार पढ़ता है) : अगर सिर के बाल झड़ते हों तो ... स्पिरिट की आधी बोतल में दो तोले नैप्थेलीन डाल दीजिये ... अच्छी तरह से मिला लीजिये और हर दिन इस्तेमाल कीजिये ... **(नोटबुक में लिखता है)** तो हम यह लिख लेते हैं ! **(सोल्योनी से)** हां मैं कह रहा था कि बोतल में डाट लगायी जाती है और उसमें से शीशे की नली गुज़ारी जाती है ... इसके बाद चुटकी भर साधारण, बिल्कुल मामूली फिटकरी ली जाती है ...

इरीना : इवान रोमानोविच, प्यारे इवान रोमानोविच !

---

* पूड – सोलह सेर के बराबर होता है। – अनु०

चेबुतीकिन: क्या बात है बिटिया, मेरे दिल की ख़ुशी?

इरीना: मुझे यह बताइये कि मैं आज इतनी ख़ुश क्यों हूं? मैं तो जैसे पालोंवाली नाव में बही जा रही हूं, मेरे ऊपर नीलाकाश फैला हुआ है और उसमें बड़े-बड़े सफ़ेद पक्षी उड़े जा रहे हैं। भला ऐसा क्यों है? भला क्यों?

चेबुतीकिन (उसके दोनों हाथ चूमकर प्यार से): मेरी सफ़ेद चिड़िया...

इरीना: आज जब मेरी आंख खुली, मैं सोकर उठी, मैंने हाथ-मुंह धोया तो मुझे अचानक ऐसे लगा कि इस दुनिया की हर चीज़ मेरे लिये स्पष्ट हो गयी है और मैं यह जानती हूं कि कैसे जीना चाहिये। प्यारे इवान रोमानोविच, मैं सब कुछ जानती हूं। आदमी को कड़ी मेहनत करनी चाहिये, वह कोई भी क्यों न हो, उसे एड़ी-चोटी का पसीना एक करना चाहिये। इसी में उसकी ज़िन्दगी की सार्थकता है, उसके जीवन का लक्ष्य, उसका सुख, उसका उल्लास है। कितना अच्छा है वह मज़दूर होना जो मुंह-अंधेरे ही उठता है और सड़क पर पत्थर तोड़ता है या फिर चरवाहा या अध्यापक होना जो बच्चों को पढ़ाता है या फिर रेलगाड़ी का ड्राइवर होना... हे भगवान, इन्सान ही नहीं, बैल या घोड़ा बनना भी बेहतर है ताकि काम में जुटा रहा जा सके। ऐसी युवती से तो जानवर होना भी अच्छा है जो दिन के बारह बजे जागती है, फिर बिस्तर में ही कॉफ़ी पीती है और इसके बाद दो घण्टे साज-सिंगार में बरबाद कर देती है... ओह, यह कैसी भयानक बात है! सख़्त गर्मी में जैसे बेहद प्यास लगती है, वैसे ही मेरा काम करने को मन हो रहा है। अगर मैं अब सुबह ही न उठा करूं और ख़ूब मेहनत न किया करूं तो आप मेरे साथ अपनी दोस्ती ख़त्म कर दीजियेगा, इवान रोमानोविच।

चेबुतीकिन (प्यार से) : ऐसा ही करूंगा, ऐसा ही करूंगा ...

ओल्गा : पिता जी ने हमें सुबह सात बजे उठने की आदत डाली। अब इरीना जाग तो सात बजे जाती है, लेकिन कम से कम दो घण्टे तक बिस्तर में पड़ी कुछ सोचती रहती है। और चेहरा संजीदा बनाये रखती है! **(हंसती है)**

इरीना : तुम मुझे बच्ची मानने की आदी हो गयी हो और जब मेरा चेहरा संजीदा होता है तो तुम्हें अजीब-सा लगता है। मैं बीस साल की हो चुकी हूं!

तुज़ेनबाख़ काम करने की हुड़क, हे भगवान, कितनी अच्छी तरह से मैं इसे समझ सकता हूं! मैंने ज़िंदगी में कभी काम नहीं किया। मैंने ठण्डे और काहिलों के पीटर्सबर्ग के एक ऐसे परिवार में जन्म लिया जहां काम और किसी तरह की चिन्ताओं से कभी किसी का वास्ता ही नहीं पड़ा था। मुझे याद है कि जब मैं सैनिक विद्यालय से घर आता था तो मेरा निजी नौकर मेरे बूट उतारता था, मैं सभी तरह के नखरे करता था और मेरी मां बड़े आदर से मेरी ओर देखा करती थी। जब कोई दूसरा आदमी ऐसे नहीं करता था तो उसे हैरानी होती थी। मुझे काम के पास भी नहीं फटकने दिया जाता था। लेकिन उन्हें मुझे काम से दूर रखने में शायद ही कामयाबी मिली! अब वह वक़्त आ गया है, जब एक भारी चट्टान हम सभी की तरफ़ बढ़ती चली आ रही, एक स्वस्थ, बहुत ज़ोरदार तूफ़ान उमड़-घुमड़ रहा है, अधिकाधिक निकट आता जा रहा है और वह हमारे समाज से काहिली, उदासीनता, श्रम के प्रति घृणा तथा गली-सड़ी हुई हमारी मान्यताओं को जड़ से उखाड़ फेंकेगा। मैं काम करूंगा और कोई पच्चीस-तीस साल बाद हर आदमी काम करेगा! हर आदमी!

चेबुतीकिन : लेकिन मैं काम नहीं करूंगा।

तुज़ेनबाख़ : आपकी परवाह ही कौन करता है?

सोल्योनी : भला हो भगवान का कि पच्चीस साल बाद आप इस दुनिया में ही नहीं होंगे। दो-तीन साल बाद या तो मस्तिष्क के रक्त-स्राव से आप ख़ुद ही इस दुनिया से चल बसेंगे या फिर मैं आपकी खोपड़ी में गोली दाग़ दूंगा, मेरे मेहरबान। (**जेब से इत्र की शीशी निकालकर अपनी छाती और हाथों पर छिड़कता है**)

चेबुतीकिन (**हंसता है**) **:** मैंने तो सचमुच कभी कुछ नहीं किया। विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद कभी हाथ तक नहीं हिलाया, एक किताब तक नहीं पढ़ी, सिर्फ़ अख़बार ही पढ़ता रहा हूं... (**जेब से दूसरा अख़बार निकालता है**) तो... अख़बारों से यह जानता हूं कि, मिसाल के तौर पर, कोई दोब्रोल्यूबोव था, लेकिन उसने क्या लिखा – ... भगवान ही जाने, मैं नहीं जानता...

(**नीचे की मंज़िल से फ़र्श को खटखटाने की आवाज़ सुनाई देती है**)

लीजिये... मुझे नीचे बुलाया जा रहा है, लगता है कि कोई मेरे यहां आया है। बस, अभी वापस आ रहा हूं (**दाढ़ी को ठीक करते हुए जल्दी-जल्दी जाता है**)

इरीना : ज़रूर कोई न कोई उल्टी-सीधी बात आ गयी है डाक्टर के दिमाग़ में।

तुज़ेनबाख़ : हां, बहुत ही गम्भीर सूरत बनाकर गया है, शायद अभी आपके लिये कोई उपहार लेकर आयेगा।

इरीना : कितनी बुरी बात है यह!

ओल्गा : हां, बहुत भयानक बात है यह! वह हमेशा कोई न कोई बेवक़ूफ़ी करता रहता है।

माशा : सागर के उस ढालू तट पर, शाहबलूत का पेड़ हरा,

उस बलूत पर सोने की ज़ंजीर बंधी * ... (**उठकर धीरे-धीरे गुनगुनाती है**)

ओल्गा : माशा, तुम आज बुझी-बुझी-सी हो।

(माशा गुनगुनाती हुई टोपी पहनती है)

कहां चल दीं ?

माशा : घर।

इरीना : अजीब बात है ...

तुज़ेनबाख़ : जन्मदिन के समारोह से ऐसे जा रही है !

माशा : कोई बात नहीं ... शाम को आऊंगी। तो नमस्कार मेरी प्यारी ... (**इरीना को चूमती है**) फिर से तुम्हारे लिये यह कामना करती हूं कि तुम स्वस्थ और सुखी रहो ... पहले जब पिता जी ज़िन्दा थे तो जन्मदिन के मौक़ों पर तीस-चालीस अफ़सर हमारे यहां आते थे, ख़ूब हल्ला-गुल्ला और रौनक़ रहती थी, लेकिन आज ले-देकर ढाई आदमी हैं और वीराने का सा सन्नाटा है ... मैं जा रही हूं ... आज मन बड़ा डूबा-डूबा और उदास-उदास है, तुम मेरी बातों की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दो। (**आंसू बहाते हुए हंसती है**) हम बाद में बात करेंगी, फ़िलहाल नमस्कार, मैं कहीं न कहीं जाना चाहती हूं।

इरीना (बुरा मानते हुए) : कैसी हो तुम ...

ओल्गा (रोते हुए) : मैं तुम्हें समझती हूं, माशा।

सोल्योनी : अगर मर्द फ़लसफ़ा बघारते हैं तो वह फ़लसफ़ा या फिर फ़लसफ़े की टांग तोड़ना होगा। लेकिन अगर कोई औरत या दो औरतें फ़लसफ़ा बघारती हैं तो यह होगा – बचाओ

---

* अ० स० पुश्किन की 'रुस्लान और ल्युदमीला' कविता से। – अनु०

मुझे, मेरे भगवान।

माशा : क्या मतलब है आपके यह कहने का, राक्षसराज?

सोल्योनी : कुछ भी नहीं। वह आह भी नहीं भर पाया कि उसे भालू ने आ दबाया*।

(ख़ामोशी)

माशा (खीझकर ओल्गा से) : रोना बन्द करो!

(अनफ़ीसा और फ़ेरापोन्त केक लेकर आते हैं)

अनफ़ीसा : इधर ले आओ भैया। आ जाओ, तुम्हारे जूते तो साफ़ हैं न। **(इरीना से)** नगर-पंचायत से मिख़ाईल इवानोविच प्रोतोपोपोव ने भेजा है... केक।

इरीना : धन्यवाद! उन्हें धन्यवाद देना। **(केक लेती है)**

फ़ेरापोन्त : क्या कहा?

इरीना (ऊंचे स्वर में) : उन्हें धन्यवाद देना!

ओल्गा : आया, इसे थोड़ा केक दे दो। फ़ेरापोन्त, जाओ, वहां तुम्हें केक मिल जायेगा।

फ़ेरापोन्त : क्या कहा?

अनफ़ीसा : आओ चलें, भैया फ़ेरापोन्त स्पीरिदोनोविच। आओ चलें... **(फ़ेरापोन्त को साथ लेकर जाती है)**

माशा : मुझे यह प्रोतोपोपोव, यह मिख़ाईल पोतापोविच या इवानोविच बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। उसे आमन्त्रित नहीं करना चाहिये।

इरीना : मैंने आमन्त्रित नहीं किया।

---

* रूसी व्यंगकार इ० क्रिलोव के एक क़िस्से से। – अनु०

माशा : बहुत अच्छा किया है।

(चेबुतीकिन और उसके पीछे चांदी का समोवार उठाये हुए सैनिक आता है। हैरानी और नाराज़गी की खुसर-फुसर)

ओल्गा (हाथों से मुंह ढांप लेती है) : समोवार ! अरे, क्यों ? **(बड़े कमरे में मेज़ के पास जाती है)**

इरीना : प्योरे इवान रोमानोविच, यह आप किस फेर में पड़ गये !

तुज़ेनबाख़ (हंसता है) : मैंने कहा था न !

माशा : इवान रोमानोविच, आपको तो कोई शर्म-हया ही नहीं रही !

चेबुतीकिन : मेरी प्यारी, मेरी अच्छी बेटियो, तुम्हारे सिवा मेरा और है ही कौन, इस दुनिया में मुझे तुमसे अधिक प्यारा तो कुछ है ही नहीं। जल्द ही मैं साठ साल का हो जाऊंगा, मैं बुड्ढा, एकाकी और किसी भी काम-काज का आदमी नहीं ... तुम लोगों के प्रति प्यार के सिवा मुझमें कोई भी अच्छाई नहीं और अगर तुम न होतीं तो मैं कभी का इस दुनिया से चल बसा होता ... **(इरीना से)** मेरी प्यारी बिटिया, मैं तुम्हें तो तुम्हारे पैदा होने के दिन से जानता हूं ... गोद में खिलाया है मैंने तुम्हें ... भगवान को प्यारी हो गयी तुम्हारी मां को भी मैं बहुत चाहता था ...

इरीना : लेकिन ऐसा क़ीमती उपहार किसलिये !

चेबुतीकिन (आंसू बहाते हुए, खीझकर) : क़ीमती उपहार ... बड़ी आयीं तुम मुझे अक़्ल सिखानेवाली ! **(अर्दली से)** समोवार वहां ले जाकर रख दो ... **(चिढ़ाते हुए)** क़ीमती उपहार ...

(अर्दली समोवार को बड़े कमरे में ले जाकर रखता है)

अनफ़ीसा (दीवानख़ाने को लांघते हुए) : प्यारी बेटियो, कोई अपरिचित कर्नल आये हैं! ओवरकोट उतार चुके हैं, इधर ही आ रहे हैं। बिटिया इरीना, तुम स्नेह और शिष्टता से पेश आना ... **(जाते हुए)** और नाश्ता करने का भी कभी का वक़्त हो चुका है ... हे भगवान, हमारी भी सुध लो ...

तुज़ेनबाख़ : वेर्शीनिन को ही होना चाहिये।

(वेर्शीनिन आता है)

लेफ़्टिनेंट कर्नल वेर्शीनिन!

वेर्शीनिन (माशा और इरीना से) : मुझे वेर्शीनिन कहते हैं। इस बात की बहुत ख़ुशी है, बेहद ख़ुशी है कि आख़िर आपको देख रहा हूं। अरे, कितनी बड़ी-बड़ी हो गयी हैं आप। ओह! ओह!

इरीना : कृपया बैठिये। बहुत ख़ुशी हुई आपके आने से।

वेर्शीनिन (ख़ुशी की तरंग में) : कितनी ख़ुशी हो रही है मुझे, कितनी अधिक ख़ुशी! आप तो तीन बहनें ही हैं न! मुझे छोटी-छोटी तीन गुड़ियों की याद है। शक्ल-सूरत तो मुझे याद नहीं, लेकिन आपके पिता, कर्नल प्रोज़ोरोव के तीन छोटी-छोटी बेटियां थीं, यह मुझे बहुत ही अच्छी तरह से याद है और मैंने आप तीनों को अपनी आंखों से भी देखा था। वक़्त कितनी तेज़ी से उड़ता जाता है! ओह, ओह, कितनी तेज़ी से उड़ता जाता है वक़्त!

तुज़ेनबाख़ : अलेक्सान्द्र इग्नात्येविच मास्को से आये हैं।

इरीना : मास्को से? आप मास्को से आये हैं?

वेर्शीनिन : हां, मास्को से। आपके दिवंगत पिता वहां तोपख़ाने के कमांडर थे और मैं उसी ब्रिगेड में अफ़सर था। **(माशा से)**

लगता है कि आपका चेहरा मुझे कुछ-कुछ याद है।

माशा : लेकिन मुझे आपका चेहरा – याद नहीं।

इरीना : ओल्गा! ओल्गा! (**बड़े कमरे में पुकारती है**) ओल्गा, जल्दी से यहां आओ तो!

(ओल्गा बड़े कमरे से दीवानखाने में आती है)

पता चला है कि लेफ़्टिनेंट कर्नल वेर्शीनिन मास्को से आये हैं।

वेर्शीनिन : तो यों मानना चाहिये कि आप सबसे बड़ी बहन ओल्गा सेर्गेयेव्ना हैं... और आप मारीया... और आप सबसे छोटी इरीना...

ओल्गा : आप मास्को से आये हैं?

वेर्शीनिन : हां! मैंने मास्को में ही तालीम पायी, वहीं फ़ौजी नौकरी शुरू की, बहुत सालों तक वहीं फ़ौज में रहा और आख़िर तोपख़ाने का कमांडर बनाकर यहां भेज दिया गया और जैसे कि आप देख रही हैं, अब यहां हूं। आपकी मुझे याद नहीं, सिर्फ़ इतना याद है कि आप तीन बहनें थीं। आपके पिता जी मुझे अभी भी याद हैं। आंखें मूंदने पर उन्हें ऐसे देखता हूं मानो वह जीते-जागते मेरे सामने खड़े हों। मास्को में मैं आपके घर आया करता था...

ओल्गा : मुझे हमेशा ऐसा लगता था कि मास्को में हमारे यहां आनेवाले सभी लोग मुझे याद हैं, लेकिन अब अचानक...

वेर्शीनिन : मेरा पूरा नाम है अलेक्सान्द्र इग्नात्येविच!

इरीना : अलेक्सान्द्र इग्नात्येविच, आप मास्को से आये हैं... हमने तो ऐसी कल्पना भी नहीं की थी!

ओल्गा : हम वहीं लौटनेवाली हैं।

इरीना : उम्मीद है कि पतझर तक वहां चली जायेंगी। हमारा

अपना शहर है वह, हम वहीं जन्मी थीं... पुरानी बासमान्नाया सड़क पर...

(दोनों ख़ुशी से हंसती हैं)

माशा : अपने शहर के आदमी से ऐसे अचानक मुलाक़ात हो गयी। **(सजीवता से)** हां, अब याद आया! ओल्गा, तुम्हें याद है, हमारे यहां एक "मजनूं-मेजर" की चर्चा हुआ करती थी। आप तब लेफ़्टिनेंट थे और किसी की मुहब्बत में दीवाने थे। न जाने क्यों, सभी आपको चिढ़ाने के लिये मजनूं-मेजर कहा करते थे...

वेर्शीनिन (हंसता है) : हां, हां, मजनूं-मेजर, यही कहा करते थे तब मुझे...

माशा : तब आपकी सिर्फ़ मूंछें ही थीं... ओह, कितने बुढ़ा गये हैं अब आप! **(आंखें छलछला आती हैं)** कितने बुढ़ा गये हैं अब आप!

वेर्शीनिन : हां, जब मुझे मजनूं-मेजर कहा जाता था, तब मैं जवान था, किसी का प्रेम-दीवाना था। अब वह सब नहीं रहा।

ओल्गा : लेकिन आपके सिर का बाल तो एक भी सफ़ेद नहीं। उम्र ज़रूर आपकी ज़्यादा हो गयी, लेकिन अभी बुढ़ाये नहीं।

वेर्शीनिन : फिर भी तैंतालीसवां साल चल रहा है। बहुत अरसा हो गया आप लोगों को मास्को छोड़े हुए?

इरीना : ग्यारह साल। अरे, कैसी बुद्धू हो तुम माशा, रोने लगीं... **(डबडबाई आंखों से)** मैं भी रोने लगूंगी...

माशा : नहीं, कोई बात नहीं। आप किस सड़क पर रहते थे?

वेर्शीनिन : पुरानी बासमान्नाया सड़क पर।

ओल्गा : और हम भी वहीं रहते थे...

वेर्शीनिन : कभी मैं नेमेत्स्काया सड़क पर भी रहता था। वहां से मैं क्रास्नी बैरकों तक पैदल जाया करता था। वहां रास्ते में एक मनहूस-सा पुल आता है, पुल के नीचे पानी शोर मचाता रहता है। अकेले आदमी का तो वहां बुरी तरह से मन उदास हो जाता है।

(ख़ामोशी)

लेकिन यहां कितनी चौड़ी, कितनी बढ़िया नदी है! बहुत कमाल की नदी है!

ओल्गा : हां, लेकिन यहां ठण्ड है। ठण्ड है और मच्छर भी ...

वेर्शीनिन : यह आप क्या कह रही हैं! यहां का जलवायु बहुत ही अच्छा है, स्वास्थ्यप्रद, असली रूसी जलवायु। जंगल, नदी ... और यहां भोज के वृक्ष भी हैं। प्यारे-प्यारे, साधारण भोज के वृक्ष। मैं उन्हें अन्य सभी वृक्षों से अधिक चाहता हूं। बड़ा मज़ा है यहां रहने में। बस, एक ही अजीब बात है कि रेलवे स्टेशन कोई पन्द्रह मील दूर है ... और ऐसा क्यों है, किसी को भी यह मालूम नहीं।

सोल्योनी : लेकिन मैं जानता हूं कि ऐसा क्यों है।

(सभी उसकी तरफ़ देखते हैं)

ऐसा इसलिये है कि अगर स्टेशन पास होता तो दूर न होता और अगर दूर है तो पास नहीं है।

(अटपटी-सी ख़ामोशी)

तुज़ेनबाख़ : आप हमेशा मज़ाक़ ही किया करते हैं, वसीली वसील्येविच।

ओल्गा : अब आप याद आ गये मुझे। याद आ गये।

वेर्शीनिन : आपकी अम्मां से भी मेरा परिचय था।

चेबुतीकिन : बहुत भली थीं वह! भगवान उन्हें स्वर्ग में स्थान दे।

इरीना : अम्मां की क़ब्र तो मास्को में ही है।

ओल्गा : नोवो-देवीचिये क़ब्रिस्तान में...

माशा : आप कल्पना कीजिये, मैं अम्मां का चेहरा भूलने लगी हूं। ऐसे ही लोग हमें भी भूल जायेंगे।

वेर्शीनिन : हां। भूल जायेंगे। यही लिखा है हमारी क़िस्मत में, हमारा कुछ ज़ोर नहीं इस पर। हमें जो कुछ गम्भीर, महत्त्वपूर्ण और ज़रूरी लगता है, ऐसा समय आयेगा, जब वह सब भुला दिया जायेगा या फिर ज़रूरी नहीं लगेगा।

(ख़ामोशी)

और मज़े की बात तो यह है कि अब हम बिल्कुल नहीं जान सकते कि क्या उच्च और महत्त्वपूर्ण माना जायेगा तथा क्या तुच्छ और हास्यास्पद। क्या कोपेरनिक या फिर कोलम्बस की खोजें शुरू में अनावश्यक और हास्यास्पद प्रतीत नहीं हुई थीं तथा किसी ख़ब्ती द्वारा लिखी गयी बकवास हमें सचाई नहीं लगी थी? और ऐसा भी हो सकता है कि हमारी आज की ज़िन्दगी जिसे हम ऐसे अपनाये हुए हैं, वक़्त बीतने पर अजीब, अटपटी, बेतुकी, गन्दी, यहां तक कि पापभरी भी लग सकती है...

तुज़ेनबाख़ : कौन जाने? यह भी तो हो सकता है कि हमारी ज़िन्दगी को ऊंचा माना जाये और लोग आदर से इसे याद करें। अब न तो लोगों को पहले की तरह सता-सताकर उनका बुरा हाल किया जाता है, न मौत की सज़ायें दी जाती हैं, न पहले

की तरह हमले-चढ़ाइयां होती हैं, लेकिन फिर भी कितने दुख-दर्द हैं इस दुनिया में!

सोल्योनी (पतली आवाज़ में) : कुड़, कुड़, कुड़ ... हमारे नवाब साहब को बेशक खाने को नहीं दीजिये, लेकिन फ़लसफ़ा बघारने दीजिये।

तुज़ेनबाख़ : वसीली वसील्येविच, आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मेरे पीछे नहीं पड़े रहा करें ... **(दूसरी जगह जा बैठता है)** आख़िर यह तो उबा देनेवाली बात है।

सोल्योनी (पतली आवाज़ में) : कुड़, कुड़, कुड़ ...

तुज़ेनबाख़ (वेर्शीनिन से) : जो दुख-दर्द हम आजकल देखते हैं – और वे बहुत ज़्यादा हैं! – उसी नैतिक उत्थान के बारे में बताते हैं जिसे हमारा समाज प्राप्त कर चुका है ...

वेर्शीनिन : हां, हां, बेशक।

चेबुतीकिन : नवाब साहब, आपने अभी-अभी यह कहा था कि हमारी ज़िन्दगी को ऊंचा माना जायेगा, लेकिन लोग तो छोटे-छोटे ही हैं। **(उठकर खड़ा होता है)** देखिये तो, मैं कितना छोटा हूं। बस, मेरे दिल को तसल्ली देने के लिये कहना चाहिये कि मेरे जीवन का उत्थान हो रहा है, यह समझ में आनेवाली बात है।

(मंच के पीछे से वायलिन सुनाई देता है)

माशा : यह तो अन्द्रेई, हमारा भैया वायलिन बजा रहा है।

इरीना : वह तो बड़ा विद्वान है। शायद प्रोफ़ेसर बनेगा। पिता जी फ़ौजी आदमी थे, लेकिन उनके बेटे ने पढ़ने-लिखने को अपना धन्धा बनाया है।

माशा : पिता जी ऐसा ही चाहते थे।

ओल्गा : हमने आज उसे चिढ़ाया है। लगता है कि वह किसी के प्रेम-जाल में थोड़ा फंस गया है।

इरीना : यहीं की एक लड़की है। उम्मीद तो है कि आज वह हमारे यहां आयेगी।

माशा : ओह, कैसे कपड़े पहनती है वह! कपड़े सुन्दर न हों, फ़ैशनदार न हों, यह भी कोई बात नहीं, लेकिन यहां तो भगवान ही मालिक है। वह कोई अजीब-सा, चटक पीले रंग का स्कर्ट, जिस पर भोंडी-सी झालर लगी होती है, और उसके साथ लाल ब्लाउज़ पहन लेती है। और गालों को ऐसे रगड़-रगड़कर चमकाती है कि कुछ न पूछिये! अन्द्रेई को उससे इश्क़-मुहब्बत हो – यह मैं नहीं मानती क्योंकि उसकी अपनी कुछ पसन्द है। लेकिन वह हमें चिढ़ाता है, बुद्धू बनने का नाटक कर रहा है। मैंने कल यह सुना था कि वह यहां की नगर-पंचायत के अध्यक्ष प्रोतोपोपोव से शादी कर रही है। बहुत अच्छी बात है यह... (**बग़ल के कमरे में आवाज़ देती है**) अन्द्रेई, इधर आओ! भैया, एक मिनट को!

(**अन्द्रेई आता है**)

ओल्गा : यह मेरा भाई अन्द्रेई सेर्गेयेविच है।

वेर्शीनिन : मैं वेर्शीनिन हूं।

अन्द्रेई : मैं प्रोज़ोरोव। (**मुंह से पसीना पोंछता है**) आप हमारे यहां तोपख़ाने के कमांडर बनकर आये हैं न?

ओल्गा : ज़रा ख़्याल करो, अलेक्सान्द्र इग्नात्येविच मास्को से आये हैं।

अन्द्रेई : सच? तो बधाई लीजिये, अब मेरी बहनें आपको चैन नहीं लेने देंगी।

वेर्शीनिन : आपकी बहनों को तो मैं उबा भी चुका हूं।

इरीना : देखिये तो, अन्द्रेई भैया ने मेरी तस्वीर के लिये आज कितना बढ़िया फ़्रेम मुझे भेंट किया है! (**फ़्रेम दिखाती है**) इसने खुद बनाया है।

वेर्शीनिन (फ़्रेम को देखते और यह न समझ पाते हुए कि क्या कहे) : हां... बढ़िया चीज़ है...

इरीना : वह फ़्रेम जो पियानो के ऊपर रखा हुआ है, वह भी भैया ने बनाया है।•

(**अन्द्रेई हाथ झटककर एक ओर को हट जाता है**)

ओल्गा : हमारा अन्द्रेई विद्वान है, वायलिन बजाता है, लकड़ी की तरह-तरह की चीज़ें बनाता है – मतलब यह कि हर फ़न मौला है। अन्द्रेई, जाओ नहीं! उसका यही ढंग है – हमेशा खिसक जाता है। इधर आओ!

(**माशा और इरीना उसके हाथ पकड़कर हंसती हुई उसे वापस ले आती हैं**)

माशा : चलो, चलो!

अन्द्रेई : कृपया मुझे छोड़ दो।

माशा : बड़े अजीब आदमी हो तुम! अलेक्सान्द्र इग्नात्येविच को कभी मजनूं-मेजर कहा जाता था और वह इसका ज़रा भी बुरा नहीं मानते थे।

वेर्शीनिन : हां,• ज़रा भी नहीं।

माशा : और मैं तुम्हें मजनूं-वायलिनिस्ट कहना चाहती हूं।

इरीना : या फिर मजनूं-प्रोफ़ेसर!..

ओल्गा : वह किसी का प्रेम-दीवाना है! अन्द्रेई भैया प्रेम-दीवाना है!

15–912

इरीना (तालियां बजाती है) : वाह, वाह! बहुत ख़ूब! अन्द्रेई प्रेम-दीवाना है।

चेबुतीकिन (पीछे से अन्द्रेई के पास जाकर उसकी कमर में बांहें डाल लेता है) : सिर्फ़ प्यार के लिये हमारा जन्म हुआ है धरती पर! **(ज़ोर से हंसता है। अख़बार हमेशा साथ लिये रहता है)**

अन्द्रेई : अब बस कीजिये, बहुत हो गया ... **(मुंह पोंछता है)** मैं रात भर नहीं सोया और जैसा कि कहा जाता है, अभी भी मेरा मूड अच्छा नहीं है। सुबह के चार बजे तक पढ़ता रहा, उसके बाद लेट गया, मगर नींद नहीं आयी। इधर-उधर की बातें सोचता रहा और इसी वक़्त पौ फटने लगी, सूरज की किरणें घुस ही आयीं मेरे सोने के कमरे में। चाहता हूं कि जब तक मैं यहां हूं, इस गर्मी में अंग्रेज़ी की एक किताब का अनुवाद कर डालूं।

वेर्शीनिन : आप अंग्रेज़ी जानते हैं?

अन्द्रेई : हां। पिता जी, भगवान उन्हें स्वर्ग में जगह दे, शिक्षा के मामले में हमारे नाक में दम किये रहे। बात हंसी की और बेहूदा है, लेकिन फिर भी यह मानना होगा कि पिता जी की मृत्यु के बाद मैं मुटाने लगा और एक ही साल में ख़ासा मोटा हो गया हूं मानो मुझ पर से भारी बोझ हट गया है। पिता जी की कृपा से ही मैं और मेरी बहनें फ़्रांसीसी, जर्मन और अंग्रेज़ी जानती हैं और इरीना को इतालवी भाषा भी आती है। लेकिन कितनी जान खपानी पड़ी है हमें इसके लिये!

माशा : इस शहर में तीन भाषाओं की जानकारी तो ऐसी ऐयाशी है जिसकी किसी को ज़रूरत नहीं। ऐयाशी ही नहीं, छठी उंगली की तरह बेकार का बोझ भी है। हमारी बहुत-सी जानकारी फ़ालतू है।

वेर्शीनिन: यह भी खूब रही! (**हंसता है**) आपकी बहुत-सी जानकारी फ़ालतू है! मुझे तो ऐसे लगता है कि इतना गया-बीता और जहालत का मारा हुआ कोई शहर नहीं हो सकता जिसमें समझदार और पढ़े-लिखे आदमी की ज़रूरत न हो। चलिये, हम यह मान लेते हैं कि इस शहर की एक लाख उजड्ड और जाहिल आबादी में आपके जैसे केवल तीन आदमी हैं। ज़ाहिर है कि आप अपने इर्द-गिर्द के इतने अधिक वज्रमूर्खों पर हावी नहीं हो सकेंगे। धीरे-धीरे आपको उनके सामने झुकना पड़ेगा, आप भी इसी भीड़ का अंग बन जायेंगे, ज़िन्दगी आपको कुचल डालेगी। लेकिन आपका नाम-निशान ही मिट जाये, आप अपना कोई असर न छोड़ें, ऐसा नहीं होगा। आपके बाद आपके जैसे ही शायद छः, फिर बारह और इसी तरह अधिकाधिक लोग सामने आते जायेंगे, यहां तक कि जाहिलों के मुक़ाबले में इनकी संख्या ज़्यादा हो जायेगी। दो सौ, तीन सौ साल के बाद धरती पर ज़िन्दगी इतनी सुन्दर, इतनी अद्‌भुत हो जायेगी कि कल्पना करना कठिन है। इन्सान को ऐसी ज़िन्दगी चाहिये और अगर अभी वह नहीं है तो उसे ऐसी ज़िन्दगी को पहले से अनुभव करना चाहिये, उसकी प्रतीक्षा और कल्पना करनी चाहिये, इसके लिये अपने को तैयार करना चाहिये। इसके लिये ज़रूरी है कि वह अपने बाप-दादाओं की तुलना में जीवन को कहीं अधिक देखे-समझे, उनसे कहीं ज़्यादा ज्ञान अर्जित करे। (**हंसता है**) और आप यह शिकायत करती हैं कि आपकी बहुत-सी जानकारी फ़ालतू है।

माशा (**टोपी उतारती है**): मैं अब भोजन करके ही जाऊंगी।

इरीना (**आह भरकर**): सच, यह सब तो लिख लेना चाहिये था ...

(**अन्द्रेई चुपके से खिसक चुका है**)

तुज़ेनबाख़ : आप कहते हैं कि अनेक सालों बाद धरती पर ज़िन्दगी बहुत सुन्दर और अद्‌भुत हो जायेगी। यह सच है। लेकिन उसमें अभी से अपना योग देने, चाहे थोड़ा-सा ही हाथ बंटाने के लिये उसकी तैयारी करनी चाहिये, काम करना चाहिये...

वेर्शीनिन (उठकर खड़ा हो जाता है) : हां। ओह, कितने फूल हैं आपके यहां! (**चारों ओर नज़र दौड़ाते हुए**) और घर भी कमाल का है। ईर्ष्या होती है मुझे! अपनी तो सारी ज़िन्दगी ही दो कुर्सियों, एक सोफ़े और धुआं छोड़नेवाली अंगीठियों के घरों में बीती है। जीवन में इन फूलों की कमी तो खलती ही रही... (**हाथ मलता है**) ओह ख़ैर! कोई बात नहीं!

तुज़ेनबाख़ : हां, काम करना चाहिये। शायद आप सोचते होंगे कि मेरे भीतर का जर्मन भावुक हो उठा है। लेकिन मैं क़सम खाकर कहता हूं कि मैं ठेठ रूसी हूं और जर्मन बोलता तक नहीं। मेरे पिता जी प्राच्य चर्च के अनुयायी हैं...

(**ख़ामोशी**)

वेर्शीनिन (मंच पर इधर-उधर आते-जाते हुए) : मैं अक्सर सोचता हूं – अगर हम नये सिरे से अपनी ज़िन्दगी शुरू करते और वह भी ख़ूब सोच समझकर तो कैसा होता? काश, बितायी जा चुकी ज़िन्दगी एक कच्चा ख़ाका होती और दूसरी ज़िन्दगी उसका निखरा हुआ रूप! मेरे ख़्याल में तब हम सभी फिर से अपनी पुरानी राह पर चलने से बचने की कोशिश करते, कम से कम अपने लिये जीवन का दूसरा ही वातावरण पैदा करते, इसी तरह का घर बनाते जिसमें ढेरों फूल हों, रोशनी की चमक हो... मेरी बीवी और दो बच्चियां हैं, बीवी की

तबीयत ढीली रहती है, इत्यादि, इत्यादि। अगर मैं नये सिरे से ज़िन्दगी शुरू करूं तो शादी करने की बात ही न सोचूं ... नहीं, हरगिज़ नहीं!

(अध्यापक की पोशाक पहने हुए कुलीगिन का प्रवेश)

कुलीगिन (इरीना के पास जाकर) : प्यारी बहन, तुम्हें जन्मदिन की बधाई देता हूं और सच्चे दिल से तुम्हारे स्वास्थ्य तथा इस बात की कामना करता हूं कि तुम्हारी उम्र की लड़कियों के जो भी सपने हो सकते हों, वे सभी पूरे हो जायें। और यह किताब तुम्हें उपहारस्वरूप भेंट करता हूं। **(किताब देता है)** यह हमारे हाई स्कूल का पचास साल का इतिहास है जिसे मैंने ही लिखा है। यों ही मामूली-सी किताब है और चूंकि करने-कराने को कुछ नहीं था, इसलिये लिख डाली। फिर भी तुम इसे पढ़ लेना। नमस्ते, महानुभावो! **(वेर्शीनिन से)** मुझे कुलीगिन कहते हैं, यहां के हाई स्कूल का अध्यापक हूं। **(इरीना से)** इस किताब में तुम्हें इन पचास सालों में हमारे हाई स्कूल की पढ़ाई ख़त्म करनेवाले सभी लोगों के नामों की सूची मिल जायेगी। मुझसे जो हो सका, मैंने कर दिया, कोई और बेहतर कर सकता है तो करे! **(माशा को चूमता है)**

इरीना : लेकिन तुम तो ईस्टर पर मुझे यही किताब भेंट कर चुके हो।

कुलीगिन (हंसता है) : ऐसा नहीं हो सकता! अगर ऐसी ही बात है तो मुझे वापस कर दो या यह ज़्यादा अच्छा होगा कि कर्नल साहब को दे दो। ले लीजिये कर्नल साहब। जब मन ऊब रहा हो तो इसे पढ़ डालिये।

वेर्शीनिन : बहुत धन्यवाद। **(जाना चाहता है)** आप लोगों से परिचित होकर बड़ी प्रसन्नता हुई ...

ओल्गा: आप जा रहे हैं? नहीं, नहीं!

इरीना: आपको हमारे साथ भोजन करने के लिये रुकना होगा। कृपया रुक जाइये।

ओल्गा: आपसे अनुरोध करती हूं!

वेर्शीनिन (सिर झुकाता है): लगता है कि मैं आपके जन्म-दिन पर आ गया हूं। क्षमा कीजिये, मुझे मालूम नहीं था, आपको बधाई नहीं दी... **(ओल्गा के साथ बड़े कमरे में जाता है)**

कुलीगिन: महानुभावो, आज इतवार है, आराम का दिन, हम सभी अपनी-अपनी उम्र और हैसियत के मुताबिक़ आराम करेंगे, मज़े लूटेंगे। क़ालीनों को गर्मी भर के लिये लपेटकर जाड़ों तक कहीं रख देना चाहिये... इनमें कीड़ों-टिड्डियों को मारनेवाला पाउडर या नेप्थलीन छिड़क देनी चाहिये... रोम के लोग स्वस्थ होते थे, क्योंकि ख़ूब डटकर काम करना और अच्छी तरह से आराम करना जानते थे। उनके स्वस्थ तन और स्वस्थ मन थे। उनकी ज़िन्दगी एक ख़ास अन्दाज़ से चलती थी। हमारे स्कूल के डायरेक्टर का कहना है कि सभी तरह की ज़िन्दगी में मुख्य चीज़ तो उसका अन्दाज़ ही है... जो अपना अन्दाज़ गंवा देता है, वह ख़त्म हो जाता है – हमारे हर दिन के जीवन के बारे में भी यही बात है। **(हंसते हुए माशा की कमर में बांह डाल देता है)** माशा मुझे प्यार करती है। और खिड़कियों के परदों को भी उतारकर क़ालीनों के साथ ही रख देना चाहिये... आज मैं बहुत ख़ुश हूं, बड़े रंग में हूं। माशा, आज दिन के चार बजे हम डायरेक्टर के यहां जायेंगे। अध्यापकों और उनके परिवारों के लिये सैर-सपाटे का प्रबन्ध किया गया है।

माशा: मैं नहीं जाऊंगी।

कुलीगिन (दुखी होकर): मेरी प्यारी माशा, तुम क्यों नहीं जाओगी?

माशा : हम इसकी बाद में चर्चा करेंगे ... (**झल्लाकर**) अच्छी बात है, मैं चलूंगी, लेकिन मेहरबानी करके मेरा पिंड छोड़ दो ... (**दूर हट जाती है**)

कुलीगिन : इसके बाद डायरेक्टर के यहां ही शाम बितायेंगे। स्वास्थ्य अच्छा न होने के बावजूद यह आदमी दूसरों से मिलने-जुलने की कोशिश करता है। बहुत बढ़िया, बहुत ही कमाल का आदमी है। ग़ज़ब का इन्सान है। कल अध्यापकों की बैठक के बाद वह मुझसे कहने लगा : "थक गया हूं, फ़्योदर इल्यीच !" (**दीवारी घड़ी और फिर अपनी घड़ी पर नज़र डालता है**) आपकी घड़ी सात मिनट आगे है। हां, तो उसने कहा कि वह थक गया है !

(**मंच के पीछे वायलिन की आवाज़**)

ओल्गा : महानुभावो, खाने की मेज़ पर पधारने की कृपा करें। केक हाज़िर है।

कुलीगिन : ओह मेरी प्यारी ओल्गा, मेरी प्यारी। कल मैंने सुबह से रात के ग्यारह बजे तक काम किया, थक गया और आज बहुत खुश हूं। (**बड़े कमरे में खाने की मेज़ की तरफ़ जाता है**) मेरी प्यारी ...

चेबुतीकिन (अख़बार को जेब में रख लेता है और दाढ़ी को संवारता है) : केक है ? मज़ा आ गया !

माशा (चेबुतीकिन से कड़ाई से) : देखिये, आज आप पियेंगे कुछ नहीं। सुनते हैं ? शराब आपके लिये बहुत बुरी है।

चेबुतीकिन : अरे, हटाओ भी इस पुराने क़िस्से को। दो साल हो गये छककर पिये हुए। मेरी गुड़िया, आख़िर इससे फ़र्क़ ही क्या पड़ता है !

माशा : फिर भी आप पियेंगे नहीं। ऐसी जुर्रत नहीं करेंगे। (**झल्लाते हुए, लेकिन इस तरह कि पति को सुनाई न दे**) बुरा हो शैतान का, आज फिर सारी शाम स्कूल के डायरेक्टर के यहां ऊबना पड़ेगा!

तुज़ेनबाख़ : अगर आपकी जगह मैं होता तो जाता ही नहीं... बस, क़िस्सा ख़त्म।

चेबुतीकिन : तुम नहीं जाओ, मेरी लाड़ली।

माशा : हां, यह कहना आसान है कि नहीं जाओ... यह क़िस्मत की मारी ज़िन्दगी, इसे बर्दाश्त करना मुश्किल है... (**बड़े कमरे में जाती है**)

चेबुतीकिन (**उसके पीछे-पीछे जाता है**) : ऐसा नहीं कहो!

सोल्योनी (**बड़े कमरे में जाते हुए**) : कुड़, कुड़, कुड़...

तुज़ेनबाख़ : बस, काफ़ी है वसीली वसील्येविच। हटाओ भी इस मज़ाक़ को!

सोल्योनी : कुड़, कुड़, कुड़...

कुलीगिन (**ख़ुशी से**) : आपकी सेहत का जाम, कर्नल साहब! मैं अध्यापक हूं और यहां, इस घर का अपना आदमी, माशा का पति हूं... वह दयालु, बहुत दयालु है...

वेर्शीनिन : मैं वह काले रंग की वोद्‌का पिऊंगा। (**पीता है**) आपकी सेहत के लिये! (**ओल्गा से**) आपके यहां मुझे बहुत अच्छा लग रहा है!...

(दीवानख़ाने में इरीना और तुज़ेनबाख़ ही रह जाते हैं)

इरीना : माशा आज बुझी-बुझी-सी है। उसकी अठारह साल की अम्र में शादी हो गयी थी, जब उसे ऐसा लगा था कि उसका पति दुनिया में सबसे ज़्यादा समझदार आदमी है। लेकिन अब वह

बात नहीं रही। वह बहुत दयालु तो है, मगर बहुत समझदार नहीं।

ओल्गा (तनिक खीझकर): अन्द्रेई, आख़िर तुम आओ भी!

अन्द्रेई (मंच के पीछे से): अभी आ रहा हूं। (**आता है और मेज़ पर चला जाता है**)

तुज़ेनबाख़: आप क्या सोच रही हैं?

इरीना: कुछ ख़ास नहीं। आपका यह सोल्योनी मुझे अच्छा नहीं लगता और मैं उससे डरती हूं। वह हमेशा बेवकूफ़ी की बातें करता रहता है...

तुज़ेनबाख़: अजीब-सा आदमी है वह। मुझे उस पर तरस भी आता है और उससे झल्लाहट भी होती है। लेकिन तरस ज़्यादा आता है। मुझे लगता है कि वह संकोची है... जब हम दोनों होते हैं तो वह बड़ी समझदारी की बातें करता है, स्नेह-शील होता है, लेकिन दूसरों के सामने बदतमीज़ी से पेश आता है, झगड़ालू बन जाता है। अभी वहां नहीं जाइये, सबको बैठ जाने दीजिये। मुझे अपने साथ कुछ समय और बिता लेने दें। आप क्या सोच रही हैं?

(ख़ामोशी)

आप बीस साल की हैं, मैं अभी तीस का नहीं हुआ। आपके प्रति प्यार से ओत-प्रोत अभी कितने सालों, कितने दिनों की लम्बी शृंखला हमारे सामने है...

इरीना: निकोलाई ल्वोविच, आप मुझसे प्यार की बात नहीं करें।

तुज़ेनबाख़ (उसकी बात सुने बिना): मुझमें जीने की,

संघर्ष और श्रम करने की तीव्र चाह हिलोरें ले रही है और यह चाह मेरी आत्मा में आपके प्रति प्यार से घुल-मिल गयी है। और मज़े की बात यह है इरीना, कि आप इतनी सुन्दर हैं और ज़िन्दगी भी मुझे बहुत सुन्दर लगती है! आप क्या सोच रही हैं?

इरीना: आप कहते हैं – ज़िन्दगी बहुत सुन्दर लगती है। हां, लेकिन उसके केवल ऐसा लगने से क्या होता है! हमारी, हम तीनों बहनों की ज़िन्दगी में अभी तक ऐसा कुछ सुन्दर नहीं है, वह तो झाड़-झंखाड़ की तरह हमें दबाती-कचोटती ही रही है... मेरी आंखों से आंसू बह चले। यह नहीं होना चाहिये... **(जल्दी से आंसू पोंछती है, मुस्कराती है)** काम करना चाहिये, काम। हमारी ज़िन्दगी में इसीलिये ख़ुशी नहीं है और हम उसे निराशा की दृष्टि से देखते हैं कि काम करना नहीं जानते। हम मेहनत से जी चुरानेवाले लोगों की सन्तानें हैं...

(नताल्या इवानोव्ना आती है। वह गुलाबी रंग का फ़्राक पहने है और उस पर हरा कमरबन्द बांधे है)

नताल्या: वहां तो लोग खाने के लिये भी बैठ रहे हैं... मुझे आने में देर हो गयी... **(दर्पण में अपने पर एक नज़र डालकर कपड़े ठीक-ठाक करती है)** लगता है कि बाल तो ढंग से संवरे हुए हैं... **(इरीना को देखकर)** प्यारी इरीना सेर्गेयेव्ना, मेरी बधाई स्वीकारें! **(ज़ोर से और देर तक चूमती है)** आपके यहां तो बहुत-से मेहमान हैं, मुझे शर्म आ रही है... नमस्कार, नवाब साहब!

ओल्गा (दीवानख़ाने में आते हुए): अरे, नताल्या इवानोव्ना भी आ गयीं। नसस्कार, मेरी प्यारी!

(दोनों एक-दूसरी को चूमती हैं)

नताल्या : इरीना के जन्मदिन की बधाई। आपके यहां तो इतने अधिक लोग हैं, मुझे बड़ी झेंप महसूस हो रही है...

ओल्गा : ऐसी कोई बात नहीं, सब अपने ही लोग हैं। **(चौंक-कर, धीरे से)** आप हरे रंग का कमरबन्द बांधे हैं! यह तो अच्छा नहीं, मेरी प्यारी !

नताल्या : क्या यह अपशकुन होता है ?

ओल्गा : नहीं, ऐसा कुछ नहीं। केवल तुम्हारी पोशाक के साथ फबता नहीं... अजीब-सा लगता है...

नताल्या (रुआंसी आवाज़ में) : सच ? लेकिन यह तो हरे रंग का नहीं, बल्कि बेरंगा-सा है। **(ओल्गा के पीछे-पीछे बड़े कमरे में जाती है)**

(बड़े कमरे में सभी खाने की मेज़ पर बैठते हैं, दीवानखाने में कोई नहीं)

कुलीगिन : इरीना, कामना करता हूं कि तुम्हें अच्छा-सा दूल्हा मिले। अब तो तुम्हें शादी कर लेनी चाहिये।

चेबुतीकिन : नताल्या इवानोव्ना, मैं भी आपके लिये दूल्हे की कामना करता हूं।

कुलीगिन : नताल्या इवानोव्ना को तो दूल्हा मिल भी गया है।

माशा : अंगूरी शराब का एक जाम पी लेती हूं। कभी तो हर किसी के अच्छे दिन आते हैं !

कुलीगिन : तुम्हारा आचरण ऐसा है कि तुम्हें न्यूनतम अंक दिये जाने चाहिये।

वेर्शीनिन : शराब बड़ी मज़ेदार है। किस चीज़ से बनायी गयी है ?

सोल्योनी : तिलचटों से।

इरीना (रुआंसी आवाज़ में) : छिः। छिः। कैसी घिनौनी बात कही है! ...

ओल्गा : शाम के खाने के वक़्त तला हुआ टर्की और सेबों से भरा हुआ मीठा केक होगा। शुक्र है भगवान का, आज मैं दिन भर घर पर हूं – शाम को भी ... महानुभावो, शाम को पधारिये।

वेर्शीनिन : मुझे भी शाम को आने की अनुमति देने की कृपा करें!

इरीना : ख़ुशी से आइये।

नताल्या : इनके यहां तकल्लुफ़ नाम की चीज़ नहीं।

चेबुतीकिन : सिर्फ़ प्यार के लिये हमारा जन्म हुआ है धरती पर। (**हंसता है**)

अन्द्रेई (खीझकर) : अब, बन्द भी कीजिये प्यार की इस रट को, महानुभावो! अभी तक ऊबे नहीं?

(फ़ेदोतिक और रोदे फूलों की एक बड़ी डलिया लेकर आते हैं)

फ़ेदोतिक : अरे यहां तो खाना भी शुरू हो गया।

रोदे (ऊंचे और तुतलाते हुए) : खाना शुरू हो गया? हां, खाना तो शुरू हो चुका है ...

फ़ेदोतिक : ज़रा रुको! (**फ़ोटो खींचता है**) एक! थोड़ा और रुक जाओ ... (**दूसरा फ़ोटो खींचता है**) दो! बस, अब ठीक है!

(डलिया लेकर बड़े कमरे में जाते हैं जहां शोर-गुल से इनका स्वागत होता है)

रोदे (ऊंची आवाज़ में) : बधाई देता हूं और आपके लिये सभी तरह की शुभ कामनायें करता हूं! आज मौसम बहुत बढ़िया है, बहुत ही प्यारा। आज मैं सारी सुबह छात्रों के साथ घूमता रहा हूं। मैं हाई स्कूल में व्यायाम करना सिखाता हूं ...

फ़ेदोतिक : हिल-डुल सकती हैं, इरीना सेर्गेयेव्ना, हिल-डुल सकती हैं! **(फ़ोटो खींचता है)** आप तो आज बहुत ही सुन्दर लग रही हैं। **(जेब से लट्टू निकालता है)** लीजिये, यह आपके लिये लट्टू है ... बड़ी प्यारी आवाज़ है इसकी ...

इरीना : ओह, कितना सुन्दर है!

माशा : सागर के उस ढालू तट पर शाह बलूत का पेड़ हरा ... सोने की ज़ंजीर बंधी उस पर ... सोने की ज़ंजीर बंधी उस पर ... **(रुआंसी आवाज़ में)** किसलिये मैं यह कह रही हूं? आज सुबह से ही यह वाक्य मेरे दिमाग़ में घुसकर रह गया है ...

कुलीगिन : तेरह लोग हैं खाने की मेज़ पर!

रोदे (ऊंची आवाज़ में) : महानुभावो, क्या आप सचमुच सभी तरह के अन्धविश्वासों को महत्त्व देते हैं?

(सब हंसते हैं)

कुलीगिन : अगर खाने की मेज़ पर तेरह लोग हों, तो इसका यह मतलब होता है कि उनमें प्यार करनेवाले भी हैं। कहीं यह आप ही तो नहीं हैं इवान रोमानोविच ...

(सब हंसते हैं)

चेबुतीकिन : मैं तो ख़ैर पुराना पापी हूं, लेकिन मेरी समझ में

बिल्कुल नहीं आ रहा कि नताल्या इवानोव्ना ऐसे क्यों झेंप रही हैं।

(सब बहुत ज़ोर से हंसते हैं। नताल्या बड़े कमरे से दीवानख़ाने में भाग जाती है, अन्द्रेई उसके पीछे-पीछे जाता है)

अन्द्रेई : अरे, हटाइये, आप इनकी तरफ़ ध्यान नहीं दीजिये! रुक जाइये... रुकिये तो, आपकी मिन्नत करता हूं...

नताल्या : मैं शर्म से मरी जा रही हूं... मालूम नहीं कि मुझे क्या हो रहा है और ये लोग मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं। मैं जो मेज़ पर से भाग खड़ी हुई, यह अच्छी बात नहीं, लेकिन मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती... बर्दाश्त नहीं कर सकती... **(हाथों से मुंह ढांप लेती है)**

अन्द्रेई : मेरी प्यारी, आपकी मिन्नत करता हूं, बिनती करता हूं आपसे कि आप ऐसे परेशान नहीं हों। आपको विश्वास दिलाता हूं कि वे तो यों ही अच्छे दिल से हंसी-मज़ाक़ कर रहे हैं। मेरी प्यारी, मेरी अच्छी रानी, वे सभी दिल के अच्छे, स्नेहशील लोग हैं, आपको और मुझे प्यार करते हैं। यहां खिड़की के पास आ जाइये, यहां हम पर उनकी नज़र नहीं पड़ सकेगी... **(सभी ओर दृष्टि घुमाता है)**

नताल्या : लोगों के बीच बैठने-उठने की मुझे बिल्कुल आदत नहीं।...

अन्द्रेई : ओह जवानी, अद्भुत-अनूठी जवानी! मेरी प्यारी, मेरी अच्छी रानी, ऐसे परेशान नहीं होइये!... विश्वास कीजिये, मेरी बात का विश्वास कीजिये... बहुत अच्छा लग रहा है मुझे, मेरा दिल प्यार से, उल्लास से छलछला रहा है... ओह, वे हमें नहीं देखते! नहीं देखते! किसलिये और कब प्यार करने लगा मैं आपको – ओह, मैं कुछ भी नहीं समझ पा रहा। मेरी

प्यारी, मेरी अच्छी रानी, निर्मल-पावन, आप मेरी पत्नी बनना स्वीकार करें! जैसे कभी, किसी को प्यार नहीं किया, ऐसे प्यार करता हूं मैं आपको, ऐसे प्यार करता हूं...

(चुम्बन)

(दो फ़ौजी अफ़सर भीतर आते हैं, लेकिन इस जोड़ी को चुम्बन में व्यस्त देखकर हैरानी से वहीं ठिठक जाते हैं)

(परदा गिरता है)

दूसरा अंक

(मंच-सज्जा पहले अंक जैसी)

(रात के आठ बजे हैं। मंच के पीछे सड़क पर बजनेवाले अकार्डियन बाजे की बहुत ही धीमी आवाज़ सुनाई दे रही है। मंच पर अंधेरा है)

(ड्रेसिंग गाउन पहने और हाथ में मोमबत्ती लिये हुए नताल्या इवानोव्ना आती है, अन्द्रेई के कमरे के दरवाज़े के पास रुक जाती है)

नताल्या : क्या कर रहे हो, प्यारे अन्द्रेई ? पढ़ रहे हो ? नहीं, कोई ख़ास बात नहीं, मैं तो यों ही ... **(जाकर दूसरे कमरे का दरवाज़ा खोलती है, भीतर झांककर उसे बन्द कर देती है)** बत्ती तो नहीं जल रही ...

अन्द्रेई (किताब हाथ में लिये हुए आता है) : क्या बात है, नताल्या ?

नताल्या : यह देख रही हूं कि कहीं कोई बत्ती तो नहीं जल रही ... आज बड़ा पर्व है, नौकर-चाकर पीकर होश-हवास भूले हुए हैं, कहीं कोई उल्टी-सीधी बात न हो जाये। कल आधी रात को मैं खाने के कमरे में चली गयी तो क्या देखा कि वहां मोमबत्ती जल रही है। किसने उसे जलाया अभी तक पता ही नहीं चल सका। **(मोमबत्ती को नीचे टिका देती है)** क्या बजा है ?

अन्द्रेई (घड़ी पर नज़र डालकर) : सवा आठ।

नताल्या : ओल्गा और इरीना अभी तक घर नहीं लौटीं। बाहर ही हैं। काम कर रही हैं अभी तक, बेचारियां। ओल्गा

अध्यापकों की परिषद में होगी और इरीना तारघर में ... (**गहरी सांस लेती है**) आज सुबह मैंने तुम्हारी बहन से कहा : "प्यारी इरीना, अपनी सेहत का ध्यान रखो।" लेकिन वह इस बात पर कान ही नहीं देती। तुमने सवा आठ का ही वक़्त बताया था न? मुझे अन्देशा है कि हमारे मुन्ने की तबीयत पूरी तरह से ठीक नहीं हुई। उसका बदन इतना ठण्डा क्यों है? कल वह बुख़ार से जल रहा था और आज उसका सारा बदन ठण्डा है ... मेरा दिल बहुत डर रहा है!

अन्द्रेई : ऐसी कोई बात नहीं है, नताल्या। बच्चा बिल्कुल स्वस्थ है।

नताल्या : फिर भी उसके खाने-पीने के मामले में ध्यान रखना ज़रूरी है। मेरा मन बहुत डरता है। मैंने सुना है कि आज नौ बजे के बाद खेल-तमाशे करनेवाले भी हमारे यहां आ रहे हैं। वे न ही आयें तो ज़्यादा अच्छा हो, अन्द्रूशा।

अन्द्रेई : मैं इस बारे में कुछ भी नहीं कह सकता। बात यह है कि उन्हें बुलाया गया है।

नताल्या : आज मुन्ना सुबह जागा, मुझे देखता रहा और अचानक मुस्करा दिया – मतलब यह कि उसने मुझे पहचान लिया। "नमस्ते, मुन्ना! नमस्ते, मेरे लाड़ले!" मैंने कहा। और वह हंस पड़ा। बच्चे सब कुछ समझते हैं, बहुत अच्छी तरह से सब कुछ समझते हैं। तो अन्द्रूशा मैं तो यही कहूंगी कि खेल-तमाशेवालों को यहां न आने दिया जाये।

अन्द्रेई (हिचकिचाते हुए) : यह तो जैसे बहनें तय करेंगी, वैसे होगा। यहां तो वही मालकिनें हैं।

नताल्या : हां, वे भी हैं। मैं उनसे कह दूंगी। वे बहुत भली हैं ... (**जाती है**) रात के भोजन के लिये मैंने दही का आदेश दिया है। डाक्टर का कहना है कि तुम्हें सिर्फ़ दही खाना

16-912

चाहिये वरना तुम्हारी चर्बी कम नहीं होगी। (**रुकती है**) मुन्ने का बदन बिल्कुल ठण्डा है। मुझे लगता है कि शायद उसके इस कमरे में ठण्डक रहती है। कम से कम मौसम के कुछ गर्म हो जाने तक तो उसे दूसरे कमरे में रखना चाहिये। मिसाल के तौर पर इरीना का कमरा बच्चे के लिये बहुत अच्छा है – वहां सीलन नहीं है और दिन भर धूप रहती है। उससे कहना चाहिये, वह फ़िलहाल ओल्गा के साथ उसके कमरे में ही रह सकती है... वैसे भी वह दिन भर घर पर नहीं रहती, सिर्फ़ रात को सोती ही है...

(**ख़ामोशी**)

अन्द्रूशा, तुम चुप क्यों हो?

अन्द्रेई: ऐसे ही, कुछ सोचने लग गया था... और फिर कहने को कुछ है भी तो नहीं...

नताल्या: अरे हां... मैं तुमसे कुछ कहना चाहती थी... हां, याद आया, नगर-पंचायत से फ़ेरापोन्त आया है, तुमसे मिलना चाहता है।

अन्द्रेई (जम्हाई लेता है): उसे यहां भेज दो।

(**नताल्या जाती है। वह जो मोमबत्ती जलती छोड़ गयी है, अन्द्रेई उसकी तरफ़ झुककर किताब पढ़ता है। फ़ेरापोन्त आता है, वह फटा-पुराना ओवरकोट पहने है जिसका कालर ऊपर उठा हुआ है। ठण्ड से बचाने के लिये उसने कानों पर गुलूबन्द बांध रखा है**)

नमस्कार, प्यारे बुढ़ऊ। कहो, किसलिये आये हो?

फ़ेरापोन्त: अध्यक्ष जी ने यह किताब और यह एक काग़ज़

भेजा है। यह लीजिये ... (**किताब और एक पैकेट देता है**)

अन्द्रेई : धन्यवाद। ठीक है। तुम कुछ पहले क्यों नहीं आये? आठ से अधिक का समय हो चुका है।

फ़ेरापोन्त : क्या कहा?

अन्द्रेई (अधिक ज़ोर से) : मैंने कहा कि देर से आये हो, आठ से अधिक का समय हो चुका है।

फ़ेरापोन्त : सो तो है ही। मैं जब आया था तो अन्धेरा नहीं हुआ था, लेकिन मुझे आपके पास आने ही नहीं दिया गया। बताया गया – साहब किसी काम में व्यस्त हैं। अच्छी बात है। व्यस्त हैं, तो व्यस्त सही, मुझे भी कहीं जाने की जल्दी नहीं। (**इस ख़्याल से कि अन्द्रेई ने उससे कुछ पूछा है**) क्या कहा?

अन्द्रेई : कुछ नहीं। (**पुस्तक को उलट-पलटकर देखता है**) कल शुक्रवार है, नगर-पंचायत में जाने का दिन तो नहीं, लेकिन मैं फिर भी वहां जाऊंगा ... कुछ काम करूंगा। घर पर मन नहीं लगता ...

(**ख़ामोशी**)

प्यारे दादा, ज़िन्दगी कैसे बदलती है, कैसे धोखा देती है! आज करने-धरने को कुछ नहीं था, मैंने ऊब मिटाने को यह किताब हाथ में ले ली – इसमें विश्वविद्यालय के दिनों के पुराने व्याख्यान हैं और इन्हें देखकर मुझे हंसी आ गयी ... हे भगवान, मैं नगर-पंचायत का सेक्रेटरी हूं, उसी नगर-पंचायत का जिसका अध्यक्ष है प्रोतोपोपोव। मैं अधिक से अधिक किस चीज़ की आशा कर सकता हूं? यही कि ग्राम-पंचायत का सदस्य बन जाऊंगा! मैं और यहां की नगर-पंचायत का सदस्य! मैं, जिसे हर रात यह सपने आते हैं कि मैं मास्को विश्वविद्यालय का प्रोफ़ेसर, जाना-माना विद्वान हूं और सारा रूस मुझ पर गर्व करता है!

फ़ेरापोन्त : मैं तो कुछ कह नहीं सकता ... मुझे तो अच्छी तरह से सुनाई नहीं देता ...

अन्द्रेई : अगर तुम्हें अच्छी तरह से सुनाई देता होता तो शायद मैंने तुमसे यह बात ही न कही होती। मुझे किसी से अपने दिल की बात कहनी चाहिये, लेकिन बीवी मेरी बात समझती नहीं और, न जाने क्यों बहनों से मुझे डर होती है, मैं घबराता हूं कि वे मेरी खिल्ली उड़ायेंगी, मुझे शर्मिन्दा करेंगी ... मुझे पीने की लत नहीं, रेस्तरानों में जाकर बैठना मुझे पसन्द नहीं, फिर भी कितनी ख़ुशी होती अब मुझे मास्को के तेस्तोव या बोल्शोई मास्कोव्स्की रेस्तरां में जाकर बैठने से, मेरे प्यारे बुढ़ऊ।

फ़ेरापोन्त : आज नगर-पंचायत में ठेकेदार बता रहा था कि मास्को में कुछ व्यापारी लोग मालपूड़े खा रहे थे। उनमें से एक, जिसने चालीस मालपूड़े खाये, कहते हैं, वह मर गया। शायद चालीस या पचास मालपूड़े। ठीक से याद नहीं आ रहा।

अन्द्रेई : मास्को के रेस्तरां के बहुत बड़े हॉल में आप बैठे होते हैं, आप किसी को नहीं जानते और आपको भी कोई नहीं जानता, फिर भी आप अपने को अजनबी महसूस नहीं करते। यहां आप सबको जानते हैं और सब आपको जानते हैं, फिर भी आप अजनबी हैं, एकदम अजनबी ... अजनबी और एकाकी।

फ़ेरापोन्त : क्या कहा ?

(ख़ामोशी)

और वही ठेकेदार कह रहा था – शायद झूठ बोलता हो – मानो सारे मास्को में एक रस्सा ताना जा रहा है।

अन्द्रेई : किसलिये ?

फ़ेरापोन्त : कह नहीं सकता। ठेकेदार कह रहा था।

अन्द्रेई : बकवास है। (**किताब पढ़ता है**) तुम कभी मास्को गये हो ?

फ़ेरापोन्त (कुछ रुककर) : नहीं गया। भगवान ने ऐसा मौक़ा ही नहीं दिया।

• (**ख़ामोशी**)

मैं जाऊं ?

अन्द्रेई : हां, जा सकते हो। नमस्कार।

(**फ़ेरापोन्त जाता है**)

नमस्कार। (**पढ़ते हुए**) कल सुबह आकर कुछ काग़ज़ ले जाना ... जाओ ...

(**ख़ामोशी**)

वह चला गया।

(**दरवाज़े की घण्टी बजती है**)

हां, काम-काज तो सभी को लगे ही रहते हैं ... (**अंगड़ाई लेता है और धीरे-धीरे अपने कमरे में चला जाता है**)

•

(**नेपथ्य में बच्चे को गोद में झुलाती हुई आया गा रही है। माशा और वेर्शीनिन आते हैं। जब तक ये बातें करते हैं, नौकरानी लैम्प और मोमबत्तियां जलाती है**)

माशा : मुझे मालूम नहीं।

मुझे मालूम नहीं। यह सही है कि आदत बहुत बड़ी चीज़ है। मिसाल के तौर पर पिता जी की मौत के बाद हम बहुत अरसे तक इस चीज़ के आदी नहीं हो सके कि अब हमारे यहां अर्दली नहीं हैं। लेकिन मुझे लगता है कि आदत के अलावा न्याय की भावना भी मुझे ऐसा कहने को प्रेरित कर रही है। शायद दूसरी जगहों पर ऐसा न हो, किन्तु हमारे शहर में तो सबसे ज़्यादा भले और ढंग के लोग – फ़ौजी ही हैं।

वेर्शीनिन : मुझे प्यास लगी है। मैं ख़ुशी से चाय पी लेता।

माशा (घड़ी पर नज़र डालकर) : जल्दी ही चाय आ जायेगी। जब मेरी शादी हुई तो मैं अठारह साल की थी और अपने पति से बहुत डरती थी, क्योंकि वह अध्यापक थे और मैंने तभी स्कूल की पढ़ाई ख़त्म की थी। वह तब मुझे बड़े विद्वान, बुद्धिमान और महत्त्वपूर्ण लगते थे। लेकिन अफ़सोस की बात है कि अब ऐसा नहीं है।

वेर्शीनिन : तो यह मामला है ... समझा ...

माशा : मैं अपने पति की बात नहीं कर रही हूं, उनकी तो मैं आदी हो गयी हूं, लेकिन आम तौर पर ग़ैरफ़ौजियों में बहुत ज़्यादा अशिष्ट, रूखे और सलीका न जानेवाले लोग होते हैं। मुझे लोगों का गंवारपन बहुत परेशान करता है, दिल को ठेस लगाता है और जब मैं यह देखती हूं कि कोई व्यक्ति काफ़ी संवेदनशील, कोमल और शिष्ट नहीं है, तो मुझे बड़ा दुख होता है। जब कभी मैं पति के साथियों-सहयोगियों यानी अध्यापकों के बीच होती हूं तो मेरी बुरी हालत हो जाती है।

वेर्शीनिन : हां ... लेकिन मुझे लगता है कि कम से कम इस

शहर में तो क्या फ़ौजी और क्या ग़ैरफ़ौजी सभी एक जैसे हैं। एक जैसे उबानेवाले। आप यहां के फ़ौजी या ग़ैरफ़ौजी किसी भी बुद्धिजीवी की बातें सुनिये, आपको यही सुनने को मिलेगी कि बीवी के कारण उसके नाक में दम है, मकान उसके लिये आफ़त है, जागीर ने उसे परेशान कर डाला है, घोड़ों ने उसकी जान ले रखी है... रूसी आदमी को प्रकृति से ऊंचे चिन्तन का गुण मिला हुआ है, किन्तु वह वास्तविक जीवन में ऊंची उड़ान क्यों नहीं भरता? भला क्यों?

माशा: भला क्यों?

वेर्शीनिन: क्यों बच्चों और बीवी के कारण उसके नाक में दम है? क्यों बीवी और बच्चे उससे तंग आये रहते हैं?

माशा: आज आपका मूड कुछ अच्छा नहीं।

वेर्शीनिन: हो सकता है। मैंने आज खाना नहीं खाया, सुबह से पेट में कुछ भी नहीं गया। मेरी बच्ची कुछ बीमार है और जब मेरी बच्चियां ढीली होती हैं तो मेरी जान सूखने लगती है, मुझे मेरी आत्मा धिक्कारने लगती है कि उनकी ऐसी मां है। ओह, काश आपने उसे आज देखा होता! ऐसी कमीनी है कि कोई हद नहीं! हमारे बीच आज सुबह के सात बजे से ही तू-तू-मैं-मैं शुरू हो गयी और नौ बजे मैं फटाक से दरवाज़ा बन्द करके घर से निकल आया।

(**ख़ामोशी**)

मैं कभी इस बात की चर्चा नहीं करता हूं और अजीब चीज़ है कि सिर्फ़ आपके सामने ही यह रोना रोता हूं। (**उसका हाथ चूमता है**) मुझसे नाराज़ नहीं होइयेगा। आपके सिवा मेरा कोई, कोई भी नहीं...

(**ख़ामोशी**)

माशा : चूल्हे में कितने ज़ोर का शोर हो रहा है। पिता जी की मृत्यु के कुछ पहले भी चिमनी में ऐसा ही शोर होता रहा था। बिल्कुल ऐसा ही !

वेर्शीनिन : आप ऐसे अन्धविश्वासों को मानती हैं ?

माशा : हां !

वेर्शीनिन : बड़ी अजीब बात है यह। (**उसका हाथ चूमता है**) आप बहुत कमाल की, अद्भुत महिला हैं। बहुत कमाल की, अद्भुत ! यहां अन्धेरा है, मगर मुझे आपकी आंखों की चमक दिखाई दे रही है।

माशा (**दूसरी कुर्सी पर बैठ जाती है**) : यहां कुछ रोशनी है ...

वेर्शीनिन : मैं प्यार करता हूं, प्यार करता हूं, करता हूं ... आपकी आंखों को, आपकी हर गति-विधि को प्यार करता हूं जिनके मुझे सपने आते हैं ... बहुत कमाल की, अद्भुत महिला हैं !

माशा (**धीरे से हंसते हुए**) : जब आप मुझसे ऐसे कहते हैं तो बेशक मुझे घबराहट महसूस होती है, फिर भी न जाने क्यों, मैं हंसती हूं। आपसे अनुरोध करती हूं कि इसे दोहराइये नहीं ... (**धीमी आवाज़ में**) वैसे, कहते रहिये, मुझे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता ... (**चेहरे को हाथों से ढांप लेती है**) मुझे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। लोग इधर आ रहे हैं, कोई और बात कीजिये ...

(**इरीना और तुज़ेनबाख़ बड़े कमरे में से आते हैं**)

तुज़ेनबाख़ : मेरा नाम ख़ूब बड़ा, मानो तिमंज़िला है। मुझे बैरन तुज़ेनबाख़-क्रोने-आल्टशाउएर कहते हैं। लेकिन मैं रूसी हूं, आपकी तरह ही प्राच्य चर्च को मानता हूं। मुझमें जर्मन

अंश तो बहुत थोड़ा ही रह गया है – शायद वह धीरज और दृढ़ता ही जिससे मैं आपके नाक में दम किये रहता हूं। हर शाम को मैं आपको घर पहुंचाने आता हूं।

इरीना : उफ़, कितनी थक गयी हूं मैं।

तुज़ेनबाख़ : और हर शाम को तारघर आऊंगा और यहां तक आपके साथ आया करूंगा। दस – बीस साल तक, जब तक कि आप मुझे अपने से दूर नहीं भगा देंगी, ऐसा ही करता रहूंगा ... (**माशा और वेर्शीनिन को देखकर खुश होते हुए**) अरे, ये आप हैं ? नमस्कार।

इरीना : आख़िर तो मैं घर पहुंच गयी। (**माशा से**) अभी-अभी एक औरत सरातोव नगर में रहनेवाले अपने भाई को यह तार देने आई कि आज उसका बेटा मर गया है। उसे किसी तरह भी अपने भाई का पता याद नहीं आ रहा था। उसने पते के बिना सिर्फ़ सरातोव लिखकर ही तार भेज दिया। रो-रोकर उसका बुरा हाल हो रहा था। मैं अचानक ही उस पर झल्ला उठी। बोली : "मेरे पास बेकार वक़्त नहीं है।" बड़ी बेहूदा बात हुई यह। हमारे यहां आज खेल-तमाशे करनेवाले आयेंगे न ?

माशा : हां।

इरीना (**आरामकुर्सी पर बैठ जाती है**) : थोड़ा आराम कर लिया जाये। बहुत थक गयी हूं।

तुज़ेनबाख़ (**मुस्कराकर**) : ड्यूटी से लौटने पर आप बहुत छोटी और दुखी-दुखी लगती हैं ...

•

(**ख़ामोशी**)

इरीना : थकान से चूर-चूर हो गयी हूं। नहीं, यह तारघर का काम मुझे पसन्द नहीं है।

माशा : तुम दुबली हो गयी हो ... (**सीटी बजाती है**) और

उम्र भी जैसे तुम्हारी कम हो गयी है, चेहरा लड़कों-सा लगने लगा है।

तुज़ेनबाख़: यह तो इसलिये कि बाल लड़कों की तरह बनाने लगी हैं।

इरीना: कोई दूसरी नौकरी ढूंढ़नी चाहिये, यह मेरे मन के अनुकूल नहीं। मैं जो चाहती थी, जिसका सपना देखती थी, उसकी तो झलक तक नहीं है इस काम में। न कोई रस, न कोई उद्देश्य ...

(फ़र्श पर नीचे से ठक-ठक होती है)

यह तो डाक्टर साहब नीचे से फ़र्श पर ठक-ठक कर रहे हैं। (**तुज़ेनबाख़ से**) ज़रा आप ही इसका जवाब दे दें ... मैं नहीं दे सकती ... बेहद थक गयी हूं।

(तुज़ेनबाख़ फ़र्श पर ठक-ठक करता है)

अभी तशरीफ़ ले आयेंगे डाक्टर साहब। हमें ज़रूर कुछ उपाय करने चाहिये। कल डाक्टर और हमारा अन्द्रेई क्लब में गये थे और वहां फिर से जुए में पैसे हार गये। सुना है कि अन्द्रेई दो सौ रूबल हार गया।

माशा (उदासीनता से): हो ही क्या सकता है!

इरीना: दो हफ़्ते पहले भी उसने पैसे हारे, दिसम्बर में भी। अच्छा हो कि जल्दी से सब कुछ हार जाये, तब तो शायद हम यह शहर छोड़ दें। हे भगवान, हर रात ही मुझे मास्को के सपने आते हैं। मैं तो जैसे पागल हो गयी हूं। (**हंसती है**) हम जून में वहां जा रहे हैं, लेकिन अभी तो ... फ़रवरी,

मार्च, अप्रैल, मई... लगभग आधा साल बाक़ी है!

माशा: नताल्या भाभी को जुए में हारे गये इन पैसों की ख़बर नहीं मिलनी चाहिये।

इरीना: मेरे ख़्याल में उसकी बला से, हारता रहे।

(दोपहर के खाने के बाद अभी-अभी सोकर उठनेवाला चेबुतीकिन बड़े कमरे में आता है, दाढ़ी को ठीक-ठाक करता है, मेज़ के पास बैठकर जेब से अख़बार निकाल लेता है)

माशा: लीजिये, पधार गये... जनाब ने किराया दिया या नहीं?

इरीना (हंसती है): नहीं। आठ महीनों से एक कौड़ी भी नहीं। लगता है कि भूल गये।

माशा (हंसती है): कैसे धीर-गम्भीर बने बैठे हैं!

(सभी हंसते हैं। ख़ामोशी)

इरीना: आप ऐसे चुप-चुप क्यों हैं, अलेक्सान्द्र इग्नात्ये-विच?

वेर्शीनिन: मालूम नहीं। चाय पीना चाहता हूं। चाय के एक गिलास के लिये आधी ज़िन्दगी देने को तैयार हूं! सुबह से कुछ भी नहीं खाया...

चेबुतीकिन: इरीना सेर्गेयेव्ना!

इरीना: क्या बात है?

चेबुतीकिन: कृपया यहां आइये। मेरे पास आइये!

(इरीना जाकर मेज़ के निकट बैठ जाती है)

आपके बिना मन उदास होने लगता है।

(इरीना पेशेंस खेल के पत्ते मेज़ पर लगाती है)

वेर्शीनिन : क्या ख़्याल है ? अगर चाय नहीं आती तो हम लोग फ़लसफ़ा ही छांटें।

तुज़ेनबाख़ : नेक ख़्याल है। किस बारे में ?

वेर्शीनिन : किस बारे में ? आइये, मिसाल के तौर पर उस ज़िन्दगी की कल्पना करें जो हमारे दो सौ या तीन सौ साल बाद होगी।

तुज़ेनबाख़ : ऐसा ही सही। हमारे बाद लोग हवाई गुब्बारों में बैठकर उड़ेंगे, उनके कोटों के फ़ैशन बदल जायेंगे, हो सकता है कि वे छठी ज्ञानेंद्रिय को खोज निकालें और उसका विकास कर लें, किन्तु जीवन ऐसा ही रहेगा, कठिन, रहस्यमय और सुख से परिपूर्ण। एक हज़ार साल के बाद भी लोग ऐसे ही आह भर भरकर कहेंगे : "कितनी बोझल है यह ज़िन्दगी !" और साथ ही आज की तरह वे मौत से डरेंगे, उससे मुंह चुराते फिरेंगे।

वेर्शीनिन (सोचने के बाद) : क्या जवाब दिया जाये आपकी बात का ? मुझे ऐसे लगता है कि हमारी इस धरती पर सभी कुछ धीरे-धीरे बदल जाना चाहिये और हमारे देखते-देखते बदल भी रहा है। दो सौ, तीन सौ साल के बाद, शायद एक हज़ार साल के बाद – कितना वक़्त लगेगा यह महत्त्वपूर्ण नहीं, नयी सुखी ज़िन्दगी आयेगी। ज़ाहिर है कि उस ज़िन्दगी में हम हिस्सा नहीं ले सकेंगे, लेकिन हम उसके लिये अब जी रहे हैं, काम कर रहे हैं, दुख-दर्द सह रहे हैं, हम उसका निर्माण कर रहे हैं। इसी में हमारे अस्तित्व का उद्देश्य निहित है, आप कह सकते हैं, हमारा सुख-सौभाग्य छिपा है।

(माशा धीरे से हंसती है)

तुज़ेनबाख़: आप किसलिये हंस रही हैं?

माशा: मालूम नहीं। आज सैं सुबह से ही हंसती जा रही हूं।

वेर्शीनिन: मैंने भी उतनी ही पढ़ाई की है जितनी आपने। अकादमी में शिक्षा नहीं पा सका। मैं बहुत पढ़ता हूं, लेकिन किताबों का चुनाव करना नहीं जानता और सम्भव है कि जो पढ़ना चाहिये, बिल्कुल वह नहीं पढ़ता हूं। फिर भी जितनी अधिक मेरी उम्र गुज़रती जाती है, उतना ही अधिक मैं जानना चाहता हूं। मेरे बाल पक रहे हैं, मैं लगभग बूढ़ा हो गया हूं, लेकिन मेरी जानकारी बहुत कम है, ओह, कितनी कम है! फिर भी मुझे ऐसा लगता है कि सबसे मुख्य और वास्तविक बात मैं जानता हूं, बहुत अच्छी तरह से जानता हूं। काश, मैं आपको यह स्पष्ट कर सकता कि हमारे लिये सुख नहीं है, होना भी नहीं चाहिये और होगा भी नहीं... हमें तो बस, काम ही काम करना चाहिये और सुख – वह मिलेगा हमारे बहुत बाद की पीढ़ियों को।

(ख़ामोशी)

अगर मैं नहीं तो मेरे वंशजों के वंशज तो सुखी होंगे।

(फ़ेदोतिक और रोदे बड़े कमरे में आते हैं। वे बैठकर गिटार बजाते हुए धीरे-धीरे गाने लगते हैं)

तुज़ेनबाख़: आपके मतानुसार तो हमें सुख की कल्पना भी नहीं करनी चाहिये!

वेर्शीनिन: हां, नहीं करनी चाहिये।

तुज़ेनबाख़ (हाथ पर हाथ मारकर और हंसकर): स्पष्टतः

हम एक-दूसरे को समझ नहीं पा रहे हैं। कैसे मैं आपको अपनी बात का यक़ीन दिलाऊं?

(माशा धीरे से हंसती है)

(उसे उंगली दिखाकर) और हंसिये! **(वेर्शीनिन से)** दो सौ, तीन सौ साल के बाद ही नहीं, दस लाख साल के बाद भी ज़िन्दगी वैसी ही रहेगी जैसी थी। वह बदलती नहीं, अपने उन नियमों का पालन करते हुए जिनसे आपको कोई मतलब नहीं या कम से कम जिन्हें आप कभी नहीं जान पायेंगे, ज्यों की त्यों ही रहती है। मौसमी परिन्दे, मिसाल के तौर पर सारस, उड़ते रहते हैं, उड़ते रहते हैं। छोटे-बड़े कैसे भी विचार उनके दिमाग़ में क्यों न आते रहें, वे उड़ते रहेंगे और कभी यह नहीं जान पायेंगे कि किसलिये और किधर उड़ रहे हैं। उनके बीच चाहे कैसे भी फ़लसफ़ी क्यों न आ जायें, वे उड़ते हैं और उड़ते रहेंगे। और अगर वे उड़ते रहते हैं तो फ़लसफ़ी चाहे कैसा भी फ़लसफ़ा क्यों न बघारते रहें, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता ...

माशा : फिर भी ज़िन्दगी में कोई तुक तो होनी चाहिये?

तुज़ेनबाख़ : तुक ... देखिये वह बर्फ़ गिर रही है। क्या तुक है इसमें?

(ख़ामोशी)

माशा : मुझे लगता है कि आदमी की कोई आस्था होनी चाहिये या फिर उसे आस्था ढूंढ़नी चाहिये वरना उसकी ज़िन्दगी का कोई मतलब, कोई अर्थ नहीं ... आदमी जिये और यह न जाने कि सारस किसलिये उड़ते हैं, बच्चे किसलिये पैदा होते हैं, आकाश में किसलिये सितारे झिलमिलाते हैं ... या तो उसे

जीवन का उद्देश्य मालूम होना चाहिये या फिर सब बकवास है, सब बेकार है।

(**ख़ामोशी**)

वेर्शीनिन: फिर भी जवानी के बीत जाने का अफ़सोस होता है ...

माशा: गोगोल ने कहा है – बहुत उबानेवाला है इस दुनिया में जीना, महानुभावो!

तुज़ेनबाख़: और मैं कहूंगा – बहुत थकानेवाला है आप लोगों से बहस करना, महानुभावो! आप लोग तो बिल्कुल ...

चबुतीकिन (**अख़बार पढ़ते हुए**): बालज़ाक की शादी बेर्दीचेव में हुई थी।

(**इरीना धीरे-धीरे गुनगुनाती है**)

इसे तो मैं अपनी नोटबुक में भी लिख लेता हूं। (**लिखता है**) बालज़ाक की शादी बेर्दीचेव में हुई थी। (**अख़बार पढ़ता है**)

इरीना (**पेशेंस खेल के पत्ते लगाती, सोचती हुई**): बालज़ाक की शादी बेर्दीचेव में हुई थी।

तुज़ेनबाख़: पासा फ़ेंका जा चुका है। आप जानती हैं, मारीया सेर्गेयेव्ना, मैं फ़ौजी नौकरी छोड़ रहा हूं।

माशा: हां, मैंने सुना है। मुझे तो इसमें कोई ख़ास अच्छी बात नज़र नहीं आ रही। ग़ैरफ़ौजी मुझे पसन्द नहीं हैं।

तुज़ेनबाख़: ख़ैर, जो भी हो ... (**उठकर खड़ा होता है**) मैं बांका जवान नहीं हूं, क्या ख़ाक फ़ौजी हो सकता हूं? ख़ैर, जो भी हो ... काम करूंगा। काश, जीवन में एक दिन तो ऐसे काम करूं कि शाम को थक-टूटकर घर आऊं, बिस्तर पर गिरूं और उसी वक़्त मुरदे की नींद सो जाऊं। (**बड़े कमरे में**

जाते हुए) मेहनतकशों को ज़रूर गहरी नींद आती होगी !

फ़ेदोतिक (इरीना से) : अभी-अभी मैंने मास्को सड़क पर पीज़िकोव की दुकान से आपके लिये ये रंगीन पेंसिलें ख़रीद ली थीं। और यह चाक़ू भी ...

इरीना : आपको तो मुझे बच्ची मानने की आदत पड़ गयी है, लेकिन मैं बड़ी हो चुकी हूं ... **(पेंसिलें और चाक़ू लेकर ख़ुश होते हुए)** कितने अच्छे हैं !

फ़ेदोतिक : और अपने लिये मैंने यह चाक़ू ख़रीदा है ... देखिये, यह एक फल ... यह दूसरा फल, यह रहा तीसरा फल, यह है कान कुरेदनी, यह है कैंची और यह नाख़ून साफ़ करने का पिन ...

रोदे (ऊंची आवाज़ में) : डाक्टर साहब, आपकी उम्र कितनी है ?

चेबुतीकिन : मेरी उम्र ? बत्तीस साल।

(सभी हंसते हैं)

फ़ेदोतिक : मैं अभी आपको एक दूसरे ढंग का पेशेंस खेल दिखाता हूं ... **(मेज़ पर पत्ते लगाता है)**

(समोवार लाया जाता है। अनफ़ीसा चाय बनाने लगती है। थोड़ी देर बाद नताल्या आती है और मेज़ के पास खड़ी रहकर चाय की व्यवस्था में हाथ बंटाने लगती है। सोल्योनी आता है और सबका अभिवादन करके मेज़ के निकट बैठ जाता है)

वेर्शीनिन : हवा तो कितने ज़ोर से चल रही है !

माशा : हां, जाड़े से तंग आ गयी हूं। गर्मी कैसी होती है, मैं यह भूल ही चुकी हूं।

इरीना : मैं देख रही हूं कि पेशेंस के पत्ते हमारे अनुकूल निकल

रहे हैं। इसका मतलब है कि हम लोग मास्को जायेंगे।

फ़ेदोतिक: नहीं, ऐसा नहीं है। देखती हैं न कि हुक्म की दुक्की पर अट्ठा आ गया है। (**हंसता है**) इसका मतलब है कि आप लोग मास्को नहीं जायेंगे।

चेबुतीकिन (अख़बार पढ़ता है): त्सीत्सीकार। वहां चेचक का बहुत ज़ोर है।

अनफ़ीसा (माशा के पास आकर): चलो, चाय तैयार है, बिटिया। (**वेर्शीनिन से**) कृपया आप भी मेज़ पर चलें हुज़ूर, ... माफ़ कीजिये, मैं आपका नाम भूल गयी ...

माशा: यहां ले आओ, आया। मैं वहां नहीं जाऊंगी।

इरीना: आया!

अनफ़ीसा: आ-ई!

नताल्या (सोल्योनी से): गोद के बच्चे सभी कुछ बहुत अच्छी तरह से समझते हैं। "नमस्ते, मेरे प्यारे मुन्ने, नमस्ते!" मैंने बेटे से कहा। उसने एक ख़ास ढंग से मेरी तरफ़ देखा। आप समझते हैं कि मैं उसकी मां हूं, इसीलिये ऐसा कह रही हूं। ओह, नहीं, नहीं, आपको यक़ीन दिलाती हूं! यह तो अनूठा बच्चा है।

सोल्योनी: अगर वह मेरा बच्चा होता तो मैं उसे कड़ाही में तलकर हड़प जाता। (**चाय का गिलास लेकर दीवानख़ाने के एक कोने में जाकर बैठ जाता है**)

नताल्या (हाथों से मुंह ढांपकर): जाहिल, उजड्ड आदमी!

माशा: ख़ुशक़िस्मत तो वह है जो इस चीज़ की तरफ़ ध्यान ही नहीं देता कि अब गर्मी है या सर्दी। मुझे लगता है कि अगर मैं मास्को में होती तो मौसम की ज़रा भी परवाह न करती ...

वेर्शीनिन: कुछ ही दिन पहले मैंने जेल में लिखी गयी एक फ़्रांसीसी मन्त्री की डायरी पढ़ी। पानामा के मामले को लेकर

उसे सज़ा दी गयी थी। कितने उत्साह, कितने उल्लास से उसने जेल की खिड़की से नज़र आनेवाले पक्षियों की चर्चा की है जिनकी ओर उस वक़्त उसका ध्यान ही नहीं जाता था जब वह मन्त्री था। अब जब वह जेल से रिहा हो गया है तो पहले की तरह फिर पक्षियों की तरफ़ उसका ध्यान नहीं जाता। इसी तरह जब आप मास्को में रहेंगी तो उसकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं देंगी। हम सुखी नहीं हैं और न होते हैं, केवल उसकी कामना करते हैं।

तुज़ेनबाख़ (मेज़ से मिठाइयों का डिब्बा उठाता है): मिठाइयां कहां गयीं?

इरीना: सोल्योनी खा गया।

तुज़ेनबाख़: सारी की सारी?

अनफ़ीसा (चाय देते हुए): हुज़ूर, आपके लिये यह पत्र आया है।

वेर्शीनिन: मेरे लिये? **(पत्र लेता है)** बेटी ने भेजा है। **(पढ़ता है)** हां, वही बात है... माफ़ी चाहता हूं, मारीया सेर्गेयेव्ना, मैं चुपके से यहां से चला जाता हूं। मैं चाय नहीं पिऊंगा। **(विह्वलता से खड़ा होता है)** आये दिन के यही क़िस्से...

माशा: क्या बात है? कोई राज़ तो नहीं?

वेर्शीनिन (धीरे से): बीवी ने फिर से कोई ज़हर-वहर खा लिया। मुझे जाना होगा। मैं धीरे से खिसक जाऊंगा। यह सब बहुत ही बुरा लगता है। **(माशा का हाथ चूमता है)** मेरी प्यारी, बहुत भली, बहुत ही अच्छी... मैं दबे पांव यहां से चला जाता हूं... **(जाता है)**

अनफ़ीसा: यह किधर चल दिये? और मैंने तो इनके लिये चाय बना दी... ख़ूब हैं यह भी।

माशा (बिगड़ते हुए): अब चुप भी करो! पीछे ही पड़

जाती हो, कभी चैन नहीं लेने देतीं ... (**प्याला लेकर मेज़ पर जाती है**) तंग आ गयी मैं बुढ़िया तुमसे !

अनफ़ीसा : तुम नाराज़ क्यों हो रही हो ? मेरी लाड़ली !

अन्द्रेई की आवाज़ : अनफ़ीसा !

अनफ़ीसा (**नक़ल उतारते हुए**) : अनफ़ीसा ! ख़ुद वहां बैठा हुआ है ... (**जाती है**)

माशा (**बड़े कमरे में, झल्लाते हुए**) : मुझे भी कहीं बैठने देंगे ! (**मेज़ पर पत्तों को गड्डमड्ड कर देती है**) सारी मेज़ पर पत्ते फैला दिये। चाय पीजिये !

इरीना : माशा, तुम बड़ी जली-भुनी हुई हो।

माशा : अगर मैं जली-भुनी हुई हूं तो मुझसे बात नहीं करें। मुझे परेशान नहीं करें !

चेबुतीकिन (**हंसते हुए**) : इसे परेशान नहीं करें, इसे परेशान नहीं करें ...

माशा : आप साठ साल के हो चुके हैं और छोकरों की भांति हमेशा ही न जाने क्या अंट-शंट बोलते रहते हैं।

नताल्या (**आह भरकर**) : प्यारी माशा, तुम बातचीत में ऐसे शब्दों का क्यों उपयोग करती हो ? मैं तो साफ़-साफ़ कहे देती हूं कि अगर तुम ऐसे शब्द मुंह से न निकाला करो तो तुम जैसी शक्ल-सूरत के साथ तो ऊंचे समाज में तुम्हारी धाक होती। बुरा नहीं मानना माशा, तुम कुछ बदतमीज़ी से पेश आती हो।

तुज़ेनबाख़ (**हंसी को रोकते हुए**) : ज़रा वह सुराही मुझे दीजिये ... मेरी तरफ़ बढ़ाइये ... शायद उसमें कुछ ब्रांडी है ...

नताल्या : लगता है कि मेरा मुन्ना सो नहीं रहा, जाग गया है। आज उसकी तबीयत ढीली है। माफ़ कीजिये, मैं उसके पास जाती हूं ... (**जाती है**)

इरीना : कर्नल कहां चले गये ?

17*

माशा : घर। उनकी बीवी ने फिर कोई गुल खिला दिया है।

तुज़ेनबाख़ (ब्रांडी की सुराही लिये हुए सोल्योनी के पास जाता है) : आप हमेशा अकेले बैठे रहते हैं, किसी सोच में डूबे-डूबे – और समझ में नहीं आता कि किस बारे में। आइये, हम सुलह कर लें। आइये, ब्रांडी पियें।

(पीते हैं)

शायद आज मुझे सारी रात पियानो बजाना पड़ेगा, सभी तरह की उल्टी-सीधी धुनें बजानी पड़ेंगी ... मजबूरी है!

सोल्योनी : सुलह किसलिये की जाये? मेरा आपके साथ कोई झगड़ा ही नहीं हुआ।

तुज़ेनबाख़ : आप हमेशा मुझे कुछ ऐसा महसूस करवाते रहते हैं मानो हमारे बीच कोई झगड़ा हो गया हो। यह तो मानना होगा कि आपका मिज़ाज कुछ अजीब-सा है।

सोल्योनी (कविता-पाठ के अन्दाज़ में) : मेरा अजीब मिज़ाज है, लेकिन किसका अजीब नहीं! बुरा न मानो, अरे अलेको! *

तुज़ेनबाख़ : यह अलेको कहां से आ टपका ...

(ख़ामोशी)

सोल्योनी : जब मैं और मेरे साथ कोई एक अन्य व्यक्ति होता है तो कोई बात नहीं, लेकिन सोसाइटी में बुझ-सा जाता हूं, झेंपता-शर्माता हूं और ... सभी तरह की बकवास करने लगता हूं। लेकिन फिर भी मैं अनेक दूसरे लोगों के मुक़ाबले में कहीं ज़्यादा ईमानदार और भला हूं। मैं यह साबित कर सकता हूं।

तुज़ेनबाख़ : मैं अक्सर आप पर झुंझलाता रहता हूं, जब हम

---

* अलेको – अ० पुश्किन के 'जिप्सी' खण्ड-काव्य का एक पात्र। – अनु०

लोगों के बीच होते हैं तो हमेशा मुझ पर ही छींटाकशी करते रहते हैं। ख़ैर, आज मैं पिऊंगा। तो पियें।

सोल्योनी : हां, पियें!

(पीते हैं)

नवाब, आपके ख़िलाफ़ मुझे भी कभी कोई शिकवा-शिकायत नहीं रहा। लेकिन मेरा स्वभाव लेर्मोन्तोव जैसा है। **(धीरे से)** जैसा कि लोग कहते हैं ... मैं कुछ-कुछ लेर्मोन्तोव जैसा लगता भी हूं ... **(जेब से इत्र की शीशी निकालकर हाथों पर छिड़कता है)**

तुज़ेनबाख़ : तो मैं इस्तीफ़ा दे रहा हूं। बस, छुट्टी! पांच साल तक इरादा बनाता रहा और आख़िर फ़ैसला कर ही डाला। अब कोई काम करूंगा।

सोल्योनी (कविता-पाठ करते हुए) : बुरा न मानो, अरे अलेको ... भूलो, भूलो अपने सपने ...

(जब तक ये बातें करते हैं, अन्द्रेई अपनी किताब लेकर धीरे से आता है और मोमबत्ती के पास बैठ जाता है)

तुज़ेनबाख़ : काम करूंगा ...

चेबुतीकिन (इरीना के साथ मेहमानख़ाने में जाते हुए) : और उन्होंने खिलाया-पिलाया भी काकेशिया का असली तर माल – प्याज़वाला•शोरबा और मांस का चेख़ारतमा।

सोल्योनी : चेरेमशा तो मांस है ही नहीं। वह तो हमारे प्याज़ जैसा पौधा होता है।

चेबुतीकिन : नहीं, मेरे देवता! चेख़ारतमा प्याज़ नहीं, बल्कि भेड़ का तला हुआ मांस होता है।

सोल्योनी: और मैं आपसे कह रहा हूं कि चेरेमशा – प्याज़ है।

चेबुतीकिन: लेकिन मैं आपसे कह रहा हूं कि चेख़ारतमा – भेड़ का मांस होता है।

सोल्योनी: और मैं आपसे कहता हूं कि चेरेमशा – प्याज़ है।

चेबुतीकिन: आपसे बहस करने में तुक ही क्या है! आप न तो कभी काकेशिया गये हैं और न आपने चेख़ारतमा खाया है।

सोल्योनी: नहीं खाया, क्योंकि वह मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाता। उससे लहसुन जैसी ही बू आती है।

अन्द्रेई (मिन्नत करते हुए): बस, अब इस क़िस्से को ख़त्म करें, महानुभावो! आपसे अनुरोध करता हूं!

तुज़ेनबाख़: खेल-तमाशेवाले कब आयेंगे?

इरीना: उन्होंने नौ बजे तक आ जाने का वादा किया था। इसका मतलब है कि अभी आ जायेंगे।

तुज़ेनबाख़ (अन्द्रेई का आलिंगन करता है): ओह, ओसारो, मेरे नये-नये ओसारो ...

अन्द्रेई (नाचता और गाता है): मेरे नये-नये ओसारो, मेपलवालो ...

चेबुतीकिन (नाचता है): झंझरीवालो!

(सब हंसते हैं)

तुज़ेनबाख़ (अन्द्रेई को चूमता है): भाड़ में जाये सब कुछ। अन्द्रेई, आइये हम पियें, 'आप' की जगह 'तुम' कहने की घनिष्ठ मैत्री के लिये पियें। और अन्द्रेई मैं भी तुम्हारे साथ मास्को चलूंगा, विश्वविद्यालय में।

सोल्योनी: कौन-से विश्वविद्यालय में? मास्को में दो विश्व-विद्यालय हैं।

अन्द्रेई : मास्को में एक विश्वविद्यालय है।
सोल्योनी : और मैं तुमसे कहता हूं कि दो हैं।
अन्द्रेई : बेशक तीन हों। यह तो और भी अच्छा है।
सोल्योनी : मास्को में दो विश्वविद्यालय हैं!

(**झल्लाहट की भनभनाहट और सिसकारियां**)

मास्को में दो विश्वविद्यालय हैं – पुराना और नया। लेकिन अगर आप मेरी बात सुनना नहीं चाहते, अगर मेरे शब्दों से आपको चिढ़ होती है तो मैं चुप हो जाता हूं। मैं तो दूसरे कमरे में भी जा सकता हूं ... (**एक दरवाज़े से बाहर चला जाता है**)

तुज़ेनबाख़ : बहुत ख़ूब, बहुत ख़ूब! (**हंसता है**) तो महानुभावो, शुरू कीजिये, मैं पियानो बजाता हूं! हास्यास्पद आदमी है यह सोल्योनी ... (**पियानो बजाने बैठ जाता है, वाल्ज़ की धुन बजाता है**)

माशा (अकेली ही वाल्ज़ नाचती है) : नवाब को चढ़ गयी है, नवाब को चढ़ गयी है, नवाब को चढ़ गयी है!

(**नताल्या आती है**)

नताल्या (चेबुतीकिन से) : इवान रोमानोविच! (**चेबुतीकिन से कुछ कहती है और फिर धीरे से चली जाती है**)

(**चेबुतीकिन तुज़ेनबाख़ का कंधा छूता है और फुसफुसाकर उससे कुछ कहता है**)

इरीना : क्या बात है?
चेबुतीकिन : हमारे जाने का वक़्त हो गया। नमस्ते।
तुज़ेनबाख़ : शुभ रात्रि। अब जाना चाहिये।

इरीना : मगर सुनिये तो ... वे खेल-तमाशेवाले ?..

अन्द्रेई (झेंपता-सा) : खेल-तमाशेवाले नहीं आयेंगे। बात यह है, मेरी प्यारी बहन कि मुन्ने की तबीयत पूरी तरह से अच्छी नहीं है और इसलिये ... वैसे, मुझे कुछ मालूम नहीं और मेरी बला से।

इरीना (कंधे झटकती है) : हुंह ! मुन्ने की तबीयत अच्छी नहीं !

माशा : ख़ैर, जो भी हो ! मतलब यह है कि हमें निकाला जा रहा है, इसलिये जाना चाहिये। **(इरीना से)** मुन्ना नहीं, वह ख़ुद बीमार है ... उसके यहां कोई कीड़ा है। **(उंगली से माथे को ठोंकती है)** टुच्ची कहीं की !

(अन्द्रेई दायें दरवाज़े से अपने कमरे की तरफ़ जाता है, चेबुतीकिन उसके पीछे-पीछे उधर ही जाता है। बड़े कमरे में लोग विदा लेकर चले जाते हैं)

फ़ेदोतिक : ओह, कितने अफ़सोस की बात है ! मैंने तो सोचा था कि आज की शाम यहां ख़ूब अच्छी गुज़रेगी, लेकिन अगर बच्चा बीमार है तो ... कल उसके लिये खिलौने लाऊंगा ...

रोदे (ऊंची आवाज़ में) : मैंने तो दोपहर के खाने के बाद आज जान-बूझकर झपकी भी ले ली थी। ख़्याल था कि रात भर नाचता रहूंगा। और अभी तो सिर्फ़ नौ बजे हैं।

माशा : आइये, बाहर सड़क पर चलें, वहां इस मामले पर विचार कर लेंगे। वहीं यह तय करेंगे कि क्या किया जाये।

("नमस्ते !" "नमस्कार !" "शुभ रात्रि !" आदि शब्द सुनाई देते हैं। तुज़ेनबाख़ का ज़ोर से हंसना भी सुनाई पड़ता है। सभी जाते हैं। अनफ़ीसा और नौकरानी मेज़ को साफ़ करती हैं,

बत्तियां बुझाती हैं। आया के गाने की आवाज़ सुनाई देती रहती है। ओवरकोट और टोप पहने अन्द्रेई तथा चेबुतीकिन चुपके से आते हैं)

चेबुतीकिन : शादी मैं इसलिये नहीं कर पाया कि ज़िन्दगी बिजली की कौंध की तरह तेज़ी से बीत गयी। और हां, इस कारण भी कि तुम्हारी मां के प्यार में बिल्कुल दीवाना था और उसकी किसी दूसरे से शादी हो चुकी थी ...

अन्द्रेई : शादी करनी ही नहीं चाहिये। जो अपने को इस जंजाल में फंसाता है, वही पछताता है।

चेबुतीकिन : यह तो ठीक है, लेकिन एकाकीपन। तुम चाहे फ़लसफ़े की कितनी ही टांग क्यों न तोड़ो, एकाकीपन बड़ी भयानक चीज़ है, मेरे भैया ... वैसे कुल मिलाकर ... न यह जन्नत, न वह जन्नत !

अन्द्रेई : आइये, जल्दी से चलें।

चेबुतीकिन : जल्दी करने की क्या ज़रूरत है? इतमीनान से पहुंच जायेंगे।

अन्द्रेई : कहीं बीवी न रोक ले।

चेबुतीकिन : ओह, यह बात है !

अन्द्रेई : आज मैं जुआ खेलूंगा नहीं, बस, यों ही बैठा रहूंगा। तबीयत कुछ अच्छी नहीं ... मेरी सांस फूलने लगती है, इसका क्या इलाज किया जाये, इवान रोमानोविच ?

चेबुतीकिन : मुझसे यह पूछना बेकार है। मुझे कुछ याद नहीं, मेरे प्यारे। मुझे कुछ मालूम नहीं।

अन्द्रेई : आइये, रसोईघर में से निकले चलें।

(जाते हैं)

(दरवाज़े की घण्टी बजती है, कुछ देर बाद फिर से बजती है। बाहर आवाज़ें और हंसी सुनाई देती है)

इरीना (आती है) : क्या बात है?
अनफ़ीसा (फुसफुसाकर) : खेल-तमाशेवाले आये हैं!

(दरवाज़े की घण्टी बजती है)

इरीना : प्यारी आया, उनसे कह दो कि घर पर कोई नहीं है। वे हमें माफ़ कर दें।

(अनफ़ीसा जाती है। विचारों में डूबी हुई इरीना कमरे में इधर-उधर आती-जाती है। वह बहुत बेचैन है। सोल्योनी आता है)

सोल्योनी (हैरान होकर) : कोई भी नहीं... कहां हैं सब?
इरीना : घर चले गये।
सोल्योनी : बड़ी अजीब बात है। आप यहां अकेली हैं?
इरीना : हां, अकेली हूं।

(ख़ामोशी)

नमस्ते।

सोल्योनी : अभी-अभी मैंने कुछ अच्छा व्यवहार नहीं किया था, अपने को क़ाबू में नहीं रखा था। लेकिन आप तो दूसरों जैसी नहीं हैं, आप उनसे बहुत ऊंची और निर्मल हैं, सचाई की तह में जा सकती हैं... केवल आप ही मुझे समझने में समर्थ हैं। मैं आपको प्यार करता हूं, बेहद प्यार करता हूं, जी-जान से प्यार करता हूं...

इरीना : नमस्ते ! चले जाइये।

सोल्योनी : आपके बिना मैं ज़िन्दा नहीं रह सकता। (**उसके पीछे-पीछे जाते हुए**) ओह, मेरे दिल की ख़ुशी ! (**आंसू भरकर**) ओह, मेरे सौभाग्य ! कैसी प्यारी, अद्भुत, कितनी सुन्दर आंखें हैं आपकी। ऐसी आंखें तो मैंने कभी किसी औरत की देखी ही नहीं ...

इरीना (रुखाई से) : बस, रहने दीजिये यह सब, वसीली वसील्येविच !

सोल्योनी : पहली बार मैं आपसे अपने प्यार की चर्चा कर रहा हूं और अपने को इस धरती पर नहीं, किसी दूसरी दुनिया में पहुंचा हुआ अनुभव कर रहा हूं। (**अपने माथे को मलता है**) लेकिन ख़ैर, हटाइये। ज़ाहिर है कि ज़बर्दस्ती तो किसी का प्यार हासिल नहीं किया जा सकता ... लेकिन कोई और आपको लेकर सुख की बंसी बजाये, यह नहीं होगा ... ऐसा नहीं हो पायेगा ... मेरे लिये जो कुछ भी पवित्र-पावन है, उस सबकी क़सम खाकर कहता हूं कि अपने प्रतिद्वन्द्वी को मैं ज़िन्दा नहीं छोड़ूंगा ... ओह, सुन्दरता की साकार प्रतिमा !

(**मोमबत्ती लिये हुए नताल्या आती है**)

नताल्या (एक दरवाज़े, फिर दूसरे दरवाज़े में झांकती है और पति के कमरे के दरवाज़े के पास से गुज़रती है) : अन्द्रेई यहां है। पढ़ रहा है, पढ़ता रहे। क्षमा कीजिये, वसीली वसील्येविच, मुझे मालूम नहीं था कि आप यहां हैं, मैं तो सोने के कपड़े पहने ही चली आयी ...

सोल्योनी : मुझे इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है। नमस्ते। (**जाता है**)

नताल्या : और तुम बेचारी बहुत थक गयी हो, मेरी प्यारी बहन! (**इरीना को चूमती है**) तुम्हें बहुत देर न करके जल्दी ही सो जाना चाहिये।

इरीना : मुन्ना सो गया?

नताल्या : हां, लेकिन बेचैनी महसूस कर रहा है। अरे हां, मेरी प्यारी बहन, मैं तुमसे कुछ कहना चाहती थी, मगर कभी तुम बाहर होती थीं और कभी मुझे फ़ुरसत नहीं होती थी... मुझे लगता है कि इस वक़्त हमने मुन्ने को जो कमरा दे रखा है, उसमें ठण्ड और सीलन रहती है। बच्चे के लिये तुम्हारा कमरा अच्छा है। मेरी प्यारी, मेरी रानी, फ़िलहाल तुम ओल्गा के कमरे में चली जाओ न!

इरीना (**उसकी बात न समझते हुए**) **:** कहां चली जाऊं?

(घर के पास आती हुई तीन घोड़ोंवाली स्लेज की घण्टियां सुनाई देती हैं)

नताल्या : तुम फ़िलहाल ओल्गा के कमरे में चली जाओ और हम मुन्ने को तुम्हारा कमरा दे देंगे। वह बड़ा ही प्यारा खिलौना-सा है। मैंने आज उससे कहा: "मुन्नू, तू मेरा है। मेरा है न!" और वह अपनी प्यारी-प्यारी आंखों से मुझे एकटक देखता रहा।

(दरवाज़े की घण्टी बजती है)

यह तो ओल्गा होनी चाहिये। कितनी देर से आती है!

(नौकरानी नताल्या के पास आकर उसके कान में कुछ फुस-फुसाती है)

नताल्या : प्रोतोपोपोव ? कैसा अजीब आदमी है। प्रोतोपोपोव आया है, चाहता है कि मैं उसके साथ स्लेज में सैर करने चलूं। (**हंसती है**) कैसे अजीब प्राणी होते हैं ये पुरुष ...

(दरवाज़े की घण्टी बजती है)

कोई आया है। शायद पन्द्रह मिनट के लिये हवाख़ोरी को चली ही जाती हूं ... (**नौकरानी से**) कह दो कि मैं अभी आ रही हूं।

(घण्टी बजती है)

घण्टी बजती है ... ओल्गा होगी ... (**जाती है**)

(नौकरानी भागकर जाती है। इरीना विचारों में खोई हुई बैठी है। कुलीगिन, ओल्गा और इनके पीछे-पीछे वेर्शीनिन आते हैं)

कुलीगिन : यह भी ख़ूब रही। हमसे कहा गया था कि आज रात को यहां महफ़िल जमेगी।

वेर्शीनिन : अजीब मामला है, मैं अभी, कोई आध घण्टा पहले यहां से गया था और उस वक़्त खेल-तमाशेवालों का इन्तज़ार था ...

इरीना : सब चले गये।

कुलीगिन : और माशा भी चली गयी ? कहां गयी है वह ? और तीन घोड़ोंवाली स्लेज-गाड़ी में बैठा प्रोतोपोपोव क्यों प्रतीक्षा कर रहा है ? किसकी राह देख रहा है वह ?

इरीना : मुझसे कुछ नहीं पूछिये ... मैं थक गयी हूं।

कुलीगिन : तुम्हारे मूड को तुम ही जानो ...

ओल्गा : परिषद की बैठक अभी ख़त्म हुई है। बुरा हाल हो

रहा है मेरा थकान से। हमारी बड़ी अध्यापिका बीमार है और अब मैं उसकी जगह काम कर रही हूं। ओह मेरा सिर, मेरा सिर दर्द से फटा जा रहा है... (**बैठती है**) अन्द्रेई कल जुए में दो सौ रूबल हार गया... सारे शहर में इसकी चर्चा हो रही है...

कुलीगिन: हां, और मैं भी थक गया परिषद की बैठक में। (**बैठता है**)

वेर्शीनिन: मेरी बीवी ने अभी-अभी मेरे होश हवा करने की कोशिश की, ज़हर खाते-खाते रह गयी। लेकिन मुसीबत टल ही गयी और मुझे ख़ुशी है कि अब मैं चैन की सांस ले रहा हूं... हां, यहां से तो हमें जाना ही होगा? ख़ैर, ठीक है, नमस्कार। फ़्योदर इल्यीच, आइये हम दोनों कहीं चलें! मैं घर पर नहीं रह सकता, बिल्कुल नहीं रह सकता... आइये, चलें!

कुलीगिन: थक गया हूं। नहीं जाऊंगा। (**उठकर खड़ा होता है**) थक गया हूं। मेरी बीवी घर गयी है?

इरीना: ख़्याल तो यही है।

कुलीगिन (**इरीना का हाथ चूमता है**): तो मैं चल दिया। कल और परसों – दो दिन पूरी तरह आराम करूंगा। नमस्कार! (**जाता है**) चाय के लिये बहुत मन हो रहा है। सोचा तो यह था कि यहां आज ख़ूब मज़ा रहेगा, लेकिन ओह, लोगों को हमेशा छलनेवाली आशा! विस्मय प्रकट करने के लिये कर्म कारक का उपयोग किया जाता है...

वेर्शीनिन: मतलब यह कि अकेला जाऊंगा। (**सीटी बजाते हुए कुलीगिन के साथ चला जाता है**)

ओल्गा: सिर फटा जा रहा है, दर्द से सिर फटा जा रहा है... चलकर लेटती हूं। (**जाती है**) कल छुट्टी है, फ़ुरसत ही फ़ुरसत

है ... हे भगवान, कितनी ख़ुशी की बात है यह ... सिर फटा जा रहा है, सिर फटा जा रहा है ... (**जाती है**)

इरीना (अकेली अपने से): सब चले गये। कोई भी नहीं रहा।

(सड़क पर अकार्डियन बाजे की आवाज़ सुनाई देती है, आया गाती है)

नताल्या (फ़र का कोट और टोपी पहने हुए बड़े कमरे में से गुज़रती है, उसके पीछे-पीछे नौकरानी है): आध घण्टे बाद मैं घर लौट आऊंगी। बस, थोड़ी देर घूम आती हूं। (**जाती है**)

इरीना (अकेली रह जाने पर, हुड़कते मन से): ओह, मास्को चलना चाहिये! मास्को! मास्को! मास्को!

(परदा गिरता है)

तीसरा अंक

(ओल्गा और इरीना का कमरा। बायीं और दायीं ओर परदों से घिरे हुए दो पलंग। रात के तीन बजे हैं। मंच के पीछे काफ़ी देर पहले लगी आग की सूचना देनेवाली घण्टी के बजने की आवाज़ सुनाई देती है। साफ़ दिखाई दे रहा है कि घर में अभी तक कोई नहीं सोया है। हमेशा की तरह काली पोशाक पहने माशा सोफ़े पर लेटी है।)

(ओल्गा और अनफ़ीसा आती हैं)

अनफ़ीसा : अब ज़ीने के नीचे बैठी हैं... मैं कहूं: "ऊपर चलिये, इसी तरह यहां बैठे रहना अच्छा नहीं।" वे रोने लगीं। "पिता जी न जाने कहां चले गये। भगवान न करे, आग में जल गये हों।" हाय, कैसी बात सोचती हैं! बाहर, अहाते में भी कुछ लड़कियां हैं... उनके पास भी कपड़े-लत्ते नहीं हैं...

ओल्गा (अलमारी से कपड़े निकालती है) : लो, यह सलेटी रंग की पोशाक ले जाओ... यह... ब्लाउज़ भी... यह स्कर्ट भी... हे भगवान, कैसी मुसीबत आयी है! लगता है कि किरसानोव्स्की कूचा पूरे का पूरा जल गया... यह भी ले लो... यह लो... **(आया के हाथ पर कपड़े फेंकती है)** वेर्शीनिन की बच्चियां बिल्कुल डर गयीं बेचारी... उनका घर तो जलते-जलते बचा। उन्हें तो हमारे यहां ही रात बितानी चाहिये... उनका घर जाना ठीक नहीं... बेचारे फ़ेदोतिक का सभी कुछ जल गया, कुछ भी तो नहीं बचा।

अनफ़ीसा : फ़ेरापोन्त को बुला लो ओल्गा, मुझसे ये सब कपड़े न उठेंगे...

ओल्गा (बुलाने के लिये घण्टी बजाती है) : कोई नहीं सुनता घण्टी ... **(दरवाज़े पर जाकर पुकारती है)** कोई वहां है तो यहां आ जाये !

(खुले दरवाज़े से आग की लपटों के कारण लाल झलक देती खिड़की और घर के पास से आग बुझानेवाली मोटर जाती दिखाई देती है)

कैसी मुसीबत है यह ! कैसे जी तंग आ गया है !

(फ़ेरापोन्त आता है)

लो, ये कपड़े नीचे ले जाओ ... वहां ज़ीने के नीचे कोलोतीलिन परिवार की लड़कियां खड़ी हैं ... उन्हें दे दो। और यह भी दे दो ...

फ़ेरापोन्त : जो हुक्म । १८१२ में मास्कों भी जला था। हे भगवान, कैसे जला था। फ़्रांसीसी तो मुंह बाये देखते रह गये थे।

ओल्गा : अच्छा, तुम अब जाओ ...

फ़ेरापोन्त : जो हुक्म। **(जाता है)**

ओल्गा : प्यारी आया, सब कुछ दे दो। हमें कुछ नहीं चाहिये, सब कुछ दे दो ... मैं बेहद थक गयी हूं, बड़ी मुश्किल से पैरों पर खड़ी रह पा रही हूं ... वेर्शीनिन परिवारवालों को उनके घर नहीं जाने दिया जा सकता ... बच्चियां मेहमानख़ाने में सो जायेंगी और कर्नल* नीचे नवाब के पास ... फ़ेदोतिक भी नवाब के कमरे में या फिर हमारे बड़े कमरे में सो सकता है ... डाक्टर को भी जैसे आज जान-बूझकर ही नशे में धुत्त होना था, उनके कमरे में किसी को भी सोने के लिये नहीं भेजा जा सकता। वेर्शीनिन की बीवी भी दीवानख़ाने में सो सकती है।

18-912

अनफ़ीसा (थकी-हारी-सी) : ओल्गा, मेरी बिटिया, तुम मुझे घर से नहीं निकालो! नहीं निकालो!

ओल्गा : ये कैसी उल्टी-सीधी बातें कर रही हो, आया। कोई भी तुम्हें नहीं निकाल रहा।

अनफ़ीसा (ओल्गा की छाती पर सिर रखकर) : मेरी लाड़ली, मेरी बहुत अच्छी बिटिया, मैं तो बहुत मेहनत, बहुत काम करती हूं... शरीर में ताक़त न रहेगी तो सभी कहेंगे – भाग यहां से! लेकिन मैं कहां जाऊंगी? कहां? अस्सी बरस की हो चुकी। बयासीवां साल जा रहा है..

ओल्गा : तुम बैठ जाओ, आया दादी... तुम थक गयी हो, बेचारी... **(उसे बिठा देती है)** थोड़ा आराम कर लो, मेरी अच्छी आया दादी। कैसा पीला चेहरा हो गया है तुम्हारा!

(नताल्या आती है)

नताल्या : वहां चर्चा हो रही है कि जिनके घर-बार जल गये हैं, उनकी मदद के लिये जल्दी से कोई कमेटी बना लेनी चाहिये। क्यों न बनायी जाये? बहुत अच्छा विचार है। यों भी ग़रीबों की मदद करना अमीरों का कर्त्तव्य है। मुन्ना बोबिक और हमारी मुन्नी सोफ़्या तो ख़ूब मज़े से सो रहे हैं मानो कुछ हुआ ही न हो। हमारे यहां तो लोग ही लोग हैं, घर भरा पड़ा है। शहर में फ़्लू फैला हुआ है, मुझे डर है कि कहीं बच्चों को इसकी छूत न लग जाये।

ओल्गा (नताल्या की बात न सुनते हुए) : इस कमरे से आग नज़र नहीं आ रही, यहां चैन है...

नताल्या : हां, मेरे बाल तो शायद बुरी तरह से बिखर गये होंगे। **(दर्पण के सामने जाकर)** कहते हैं कि मैं मोटी हो गयी

हूं... बिल्कुल झूठ! ज़रा भी तो मोटी नहीं हुई! माशा सो गयी, थक गयी बेचारी... (**अनफ़ीसा से रुखाई से**) ख़बरदार, जो मेरे सामने बैठने की जुर्रत की! उठो! भागो यहां से!

(अनफ़ीसा जाती है, ख़ामोशी)

तुम इस बुढ़िया को किसलिये घर में रखे हुए हो, मेरी समझ में नहीं आता!

ओल्गा (स्तम्भित): माफ़ करना, मैं भी तुम्हें नहीं समझ सकती...

नताल्या: यहां इसकी कोई ज़रूरत नहीं। वह किसान औरत है, उसे देहात में रहना चाहिये... किसलिये लोगों को सिर चढ़ाया जाये! घर में मुझे तौर-तरीक़ा पसन्द है! फालतू लोगों को यहां नहीं होना चाहिये। (**ओल्गा का गाल सहलाती है**) तुम बेचारी, थक गयी हो। हमारी बड़ी अध्यापिका थक गयी है! और जब मेरी मुन्नी सोफ़्या बड़ी होकर तुम्हारे स्कूल में पढ़ने जायेगी तो मुझे तुमसे डर लगेगा।

ओल्गा: मैं बड़ी अध्यापिका नहीं बनूंगी।

नताल्या: तुम्हें ही चुना जायेगा, ओल्गा। यह तय हो चुका है।

ओल्गा: मैं इन्कार कर दूंगी। मुझसे यह काम नहीं निभेगा। यह मेरे बस की बात नहीं... (**पानी पीती है**) तुम अभी-अभी बहुत बुरी तरह से पेश आयीं आया के साथ... माफ़ करना, मुझसे यह बर्दाश्त नहीं हो सकता... मेरी आंखों के सामने तो अंधेरा छा गया...

नताल्या (बेचैनी से): माफ़ कर दो, ओल्गा, माफ़ कर दो... मैं तुम्हारे दिल को ठेस नहीं लगाना चाहती थी।

(माशा उठती है, तकिया लेकर झल्लाती-सी बाहर चली जाती है)

ओल्गा : इतनी बात समझ लो प्यारी ... हो सकता है कि हमारा पालन-पोषण अजीब ढंग से हुआ हो, लेकिन ऐसी हरकत मुझसे बर्दाश्त नहीं होती। इस तरह का बुरा बर्ताव मुझे बेहद परेशान कर डालता है, मेरी तबीयत ख़राब होने लगती है ... मेरा तो दिल डूबने लगता है !..

नताल्या : माफ़ कर दो, माफ़ कर दो। **(उसे चूमती है)**

ओल्गा : सभी तरह का, यहां तक कि मामूली-सा बुरा बर्ताव, बुरे ढंग से कहा गया एक शब्द भी मुझे अच्छा नहीं लगता ...

नताल्या : मैं अक्सर फ़ालतू बोलती रहती हूं, यह सच है, लेकिन, मेरी प्यारी, तुम्हें यह तो मानना होगा कि वह गांव में रह सकती है।

ओल्गा : वह तीस साल से हमारे यहां है ...

नताल्या : लेकिन अब तो वह काम नहीं कर सकती ! या तो मेरे दिमाग़ में बात नहीं घुसती या फिर तुम मुझे समझना नहीं चाहतीं। वह अब काम करने के लायक नहीं रही, वह या तो सोती या हाथ पर हाथ धरे बैठी रहती है।

ओल्गा : तो बैठी रहे।

नताल्या (हैरान होकर) : क्या मतलब कि बैठी रहे ? लेकिन वह तो नौकरानी है। **(आंखों में आंसू भरकर)** मैं तुम्हें समझ नहीं पा रही हूं, ओल्गा। मेरे यहां आया है, धाय है, हमारे पास नौकरानी है, बावर्चिन है ... इस बुढ़िया की हमें किसलिये ज़रूरत है ? किसलिये ?

(मंच के पीछे ख़तरे की घण्टी की आवाज़ सुनायी देती है)

ओल्गा: इस एक रात में मैं दस साल बुढ़ा गयी।

नताल्या: हमें मामले को तय कर लेना चाहिये, ओल्गा। तुम स्कूल चली जाती हो, मैं घर पर रहती हूं, तुम पढ़ाती-लिखाती हो, मैं घर-गिरस्ती चलाती हूं। इसलिये अगर मैं नौकरों की बात करती हूं तो जानती हूं कि क्या कह रही हूं, जानती हूं कि क्या कह रही हूं... इस बूढ़ी चोर, इस खूसट की कल इस घर में छाया भी नहीं रहनी चाहिये... (**पांव पटकती है**) इस चुड़ैल की!.. इसे देखकर मेरा खून खौलने लगता है! खून खौलता है! (**सम्भलकर**) सच, जब तक तुम नीचेवाले कमरे में नहीं चली जाओगी, हम हमेशा ऐसे ही झगड़ती रहेंगी। यह बहुत बुरी है।

(**कुलीगिन आता है**)

कुलीगिन: माशा कहां है? घर चलना चाहिये। कहते हैं कि आग शान्त हो रही है। (**अंगड़ाई लेता है**) जला तो सिर्फ़ एक मुहल्ला ही है, लेकिन चूंकि हवा थी, इसलिये शुरू में ऐसा लगता था कि सारा शहर जल रहा है। (**बैठता है**) बहुत थक गया हूं मैं ओल्गा, मेरी प्यारी ओल्गा... मैं अक्सर सोचता हूं कि अगर माशा से शादी न करता तो मैंने तुमसे शादी की होती। तुम बहुत अच्छी हो... बुरा हाल है मेरा। (**कान लगाकर सुनता है**)

ओल्गा: क्या बात है?

कुलीगिन: डाक्टर ने आज खूब डटकर पी है, नशे में धुत्त है। उसे भी आज ही यह करना था! (**उठता है**) लगता है कि इधर ही आ रहा है... सुनती हो? हां, इधर ही... (**हंसता है**) सच, क्या आदमी है यह भी... मैं छिप जाता

हूं। (**अलमारी के पास जाकर कोने में खड़ा हो जाता है**) शैतान कहीं का!

ओल्गा : दो साल से उसने शराब नहीं पी थी और आज अचानक ख़ूब चढ़ा ली ... (**नताल्या के साथ कमरे के पिछले भाग में चली जाती है**)

(**चेबुतीकिन आता है, लड़खड़ाये बिना मानो नशे में न हो, कमरे को लांघता है, रुकता है, इधर-उधर देखता है और इसके बाद हाथ-मुंह धोने के स्टैंड के पास जाकर हाथ धोने लगता है**)

चेबुतीकिन (दुखी मन से) : सब भाड़ में चले जायें ... जहन्नुम में दफ़ा हो जायें ... ये समझते हैं कि मैं डाक्टर हूं, हर तरह की बीमारी का इलाज कर सकता हूं, लेकिन मुझे ख़ाक भी तो नहीं आता, जो कुछ जानता था, सब कुछ भूल-भाल गया, कुछ भी तो याद नहीं रहा, कुछ भी तो नहीं।

(**ओल्गा और नताल्या उसकी नज़र में आये बिना चली जाती हैं**)

बुरा हो शैतान का! पिछले बुधवार को ज़ासिप सड़क पर मैंने एक औरत का इलाज किया – वह मर गयी। वह मर गयी, इसके लिये मैं भी दोषी हूं। हां ... पच्चीस साल पहले कुछ थोड़ा बहुत जानता था, लेकिन अब तो सब कुछ दिमाग़ से निकल गया। सब कुछ ... दिमाग़ में कुछ नहीं, दिल पत्थर हो गया ... शायद मैं तो इन्सान ही नहीं रहा, सिर्फ़ यह ढोंग करता हूं कि मेरे हाथ, पांव और सिर भी है। शायद मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं है, सिर्फ़ ऐसा लगता है कि मैं चलता-फिरता, खाता-पीता और सोता हूं। (**रोता है**) काश, मेरा अस्तित्व ही

ख़त्म हो जाता! (**रोना बन्द कर देता है, दुखी मन से**) बुरा हो शैतान का... तीन दिन पहले क्लब में शेक्सपियर और वोल्टेयर की चर्चा होने लगी... मैंने उन्हें नहीं पढ़ा, बिल्कुल नहीं पढ़ा, लेकिन सूरत ऐसी बना ली मानो सभी कुछ पढ़े हुए हूं। दूसरों ने भी ऐसा ही किया। कैसा घटियापन है! कैसी नीचता है! और पिछले बुधवार को मरनेवाली वह औरत तो दिमाग़ से निकलती ही नहीं... सब कुछ याद आ गया और मन ऐसा भारी हो गया, अपने आप से ऐसी घिन्न, ऐसी आत्म-ग्लानी-सी होने लगी कि जाकर... बुरी तरह चढ़ा ली...

(**इरीना, वेर्शीनिन और तुज़ेनबाख़ आते हैं। तुज़ेनबाख़ ग़ैर-फ़ौजियों का नया और फ़ैशनदार सूट पहने हुए है**)

इरीना: यहां बैठ जाते हैं। यहां कोई नहीं आयेगा।

वेर्शीनिन: अगर फ़ौजी न आते तो सारा शहर जलकर राख हो जाता। शाबाश है उन्हें! (**ख़ुशी से हाथ मलता है**) ग़ज़ब के लोग हैं ये फ़ौजी! अहा, बहुत ही कमाल के!

कुलीगिन (**इनके पास आकर**): क्या वक़्त हुआ है, महानुभावो?

तुज़ेनबाख़: तीन बजकर कुछ मिनट हुए हैं। उजाला होने लगा है।

इरीना: सभी बड़े कमरे में बैठे हैं, कोई भी तो नहीं जाता। और आपका वह सोल्योनी भी बैठा है... (**चेबुतीकिन से**) डाक्टर साहब, आप तो जाकर सो जायें।

चेबुतीकिन: मेरी फ़िक्र नहीं करें... शुक्रिया आपका। (**दाढ़ी पर हाथ फेरता है**)

कुलीगिन (**हंसता है**): ख़ूब छककर पी है आज तो डाक्टर साहब! (**उसका कंधा थपथपाता है**) शाबाश है आपको!

हमारे पुरखों ने ठीक कहा है – सुरा में ही सत्य है।

तुज़ेनबाख़: सभी मुझसे अनुरोध कर रहे हैं कि मैं उनकी मदद के लिये, जिनका सब कुछ आग की नज़र हो गया है, कन्सर्ट का आयोजन करूं।

इरीना: कैसे आयोजन किया जा सकता इसका...

तुज़ेनबाख़: अगर चाहें तो ऐसा आयोजन किया जा सकता है। मिसाल के तौर पर, माशा बहुत बढ़िया पियानो बजाती है।

कुलीगिन: हां, बहुत बढ़िया बजाती है!

इरीना: वह तो भूल भी चुकी है। तीन साल से उसने पियानो नहीं बजाया... या चार साल से।

तुज़ेनबाख़: इस शहर में किसी को, एक भी आदमी को यह मालूम नहीं कि संगीत है किस चिड़िया का नाम। लेकिन मैं, मैं उसे समझता हूं और क़सम खाकर आपको यक़ीन दिलाता हूं कि माशा बहुत ही अच्छा पियानो बजाती है, लगभग किसी बड़े गुणी की तरह।

कुलीगिन: आपकी बात सोलह आने सही है, नवाब। मैं उसे बहुत प्यार करता हूं, अपनी माशा को। वह बहुत अच्छी है।

तुज़ेनबाख़: इतना अच्छा पियानो बजाना आता हो और साथ ही यह चेतना भी हो कि भैंस के आगे वीन बजायी जा रही है।

कुलीगिन (आह भरकर): हां... लेकिन उसका कन्सर्ट में हिस्सा लेना उसे शोभा भी देगा?

(ख़ामोशी)

महानुभावो, मैं तो कुछ भी जानता-वानता नहीं। शायद उसके लिये यह शोभनीय ही हो। लेकिन मैं यह कहे बिना नहीं रह

सकता कि हमारे स्कूल का डायरेक्टर एक अच्छा, बहुत अच्छा आदमी, एक अत्यधिक बुद्धिमान आदमी है। हां, उसके दृष्टिकोण कुछ ऐसे-वैसे ही हैं... ज़ाहिर है कि उसका इस चीज़ से कोई मतलब नहीं, फिर भी, अगर आप चाहें, तो मैं उससे बातचीत कर सकता हूं।

(चेबुतीकिन चीनी की घड़ी लेकर उसे बहुत ग़ौर से देखने लगता है)

वेर्शीनिन : इस आग के चक्कर में मैं तो सिर से पांव तक भूत बन गया हूं। मेरी सूरत तो देखते ही बनती होगी।

(ख़ामोशी)

कल मैंने उड़ती-उड़ती-सी यह ख़बर सुनी थी कि हमारे ब्रिगेड को यहां से कहीं दूर ले जाया जा रहा है। कुछ का कहना है कि पोलैंड ले जाया जायेगा और दूसरे कहते हैं कि चीता नगर में।

तुज़ेनबाख़ : मैंने भी यह सुना है। तब क्या होगा? यह शहर तो तब बिल्कुल सुनसान हो जायेगा।

इरीना : और हम भी यहां से चले जायेंगे!

चेबुतीकिन (घड़ी गिरा देता है जो टूट जाती है) : टुकड़े-टुकड़े हो गयी!

(ख़ामोशी। सभी परेशानी और अटपटापन महसूस करते हैं)

कुलीगिन (टुकड़े उठाते हुए) : कितनी क़ीमती चीज़ तोड़ डाली, इवान रोमानोविच! ओह, कितने अफ़सोस की बात है, कितने अफ़सोस की। ऐसे आचरण के लिये आपको माइनस ज़ीरो मिलना चाहिये!

इरीना : यह हमारी स्वर्गीया अम्मां की घड़ी थी।

चेबुतीकिन : होगी ... आपकी अम्मां की थी तो अम्मां की ही होगी। हो सकता है कि मैंने इसे तोड़ा ही न हो और सिर्फ़ ऐसे लगता हो मानो मैंने तोड़ दिया है। शायद हमें ऐसा प्रतीत ही होता है कि हम ज़िन्दा हैं, लेकिन वास्तव में हमारा अस्तित्व ही न हो। मैं कुछ भी नहीं जानता, कोई भी कुछ नहीं जानता। (**दरवाज़े के पास जाकर**) क्या देख रहे हैं? नताल्या की प्रोतोपोपोव के साथ थोड़ी इश्क़बाज़ी चल रही है और आप यह नहीं देखते हैं ... आप लोग यहां बैठे हैं और कुछ नहीं देखते हैं, मगर नताल्या की प्रोतोपोपोव के साथ मुहब्बत की आंख-मिचौनी चल रही है ... (**गाता है**) नहीं चाहते हैं यह खजूर लेना ... (**जाता है**)

वेर्शीनिन : हां ... (**हंसता है**) सचमुच यह सब कितना अजीब है!

(**ख़ामोशी**)

जब आग शुरू हुई तो मैं बेतहाशा घर की तरफ़ भाग चला। निकट पहुंचने पर मैंने देखा कि हमारा घर सही-सलामत है, उसे ज़रा भी नुक़सान नहीं पहुंचा तथा उसके लिये यों भी कोई ख़तरा नहीं। लेकिन मेरी दोनों बच्चियां सिर्फ़ शमीज़ें पहने हुए दहलीज़ पर खड़ी थीं, उनकी मां का कहीं पता नहीं था, लोग-बाग दौड़-धूप कर रहे थे, घोड़े और कुत्ते भागे जा रहे थे। बच्चियों के चेहरों पर बेहद घबराहट, भय और विनती, कह नहीं सकता कि क्या भाव था। इन चेहरों को देखकर मेरा दिल बैठ गया। मैं सोचने लगा कि हे भगवान, अपने लम्बे जीवन में इन बच्चियों को न जाने और क्या-क्या दुख-मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा! मैंने झपटकर इन्हें गोद में उठा लिया, भागता

जा रहा था और यही सोचता जाता था – इस दुनिया में इन्हें क्या कुछ सहन करना पड़ेगा!

(आग के ख़तरे की घण्टी की आवाज़, ख़ामोशी)

मैं यहां पहुंचा तो इनकी मां को यहीं पाया, वह चीख़-चिल्ला रही थी, झल्ला रही थी।

(माशा तकिया लिये हुए आती है और सोफ़े पर बैठ जाती है)

और जब मेरी बच्चियां सिर्फ़ शमीज़ें पहने हुए दहलीज़ पर खड़ी थीं, सड़क आग की लपटों से लाल हो रही थी, भयानक शोर-शराबा था तो मैंने सोचा कि अनेक साल पहले भी कुछ ऐसा ही होता था जब कोई दुश्मन अचानक हल्ला बोल देता था, सब कुछ लूट लिया जाता था, जला दिया जाता था... फिर भी जो अब है और जो उस समय था, उसमें कितना अन्तर है! कुछ और समय बीतेगा – कोई दो सौ, तीन सौ साल, और हमारे आज के जीवन को भी लोग ऐसे ही भय से देखेंगे, इसका मज़ाक़ उड़ाते हुए मुस्करायेंगे, उन्हें आज की हर चीज़ भद्दी, भोंडी, अटपटी और अजीब लगेगी। ओह, कैसी अद्भुत, कैसी अच्छी ज़िन्दगी होगी वह! **(हंसता है)** माफ़ी चाहता हूं, मैं फिर से फ़लसफ़े के फेर में पड़ गया। आपसे अपनी बात जारी रखने की इजाज़त चाहता हूं, महानुभावो! इस वक़्त मेरा कुछ ऐसा ही मूड है कि मैं फ़लसफ़ा बघारना चाहता हूं।

(ख़ामोशी)

लगता है कि आप सब तो ऊंघ रहे हैं। तो मैं कह रहा था – कैसी अद्भुत होगी तब ज़िन्दगी! आप केवल इसकी कल्पना

कर सकते हैं... देखिये इस समय इस शहर में आपके जैसे केवल तीन व्यक्ति हैं, लेकिन आनेवाली पीढ़ियों में उनकी संख्या अधिकाधिक होती जायेगी और वह वक़्त आयेगा जब कुछ वैसा ही हो जायेगा जैसा आप चाहती हैं, ज़िन्दगी आपके सपनों का रूप ले लेगी। मगर बाद में आप भी पुरानी पड़ जायेंगी, आपसे बेहतर लोगों का इस दुनिया में जन्म होगा... (**हंसता है**) आज तो कुछ ख़ास ही मूड है मेरा। कैसे मन ललक रहा है ज़िन्दगी के मज़े लूटने को... (**गाता है**) प्यार किसी भी उम्र में कर सकता इन्सान, उसके लिये सदा अच्छा है उसका यह तूफ़ान... (**हंसता है**)

माशा : तूम .... ताना-ना-तूम ...

वेर्शीनिन : तोम-ताना-ना तोम ...

माशा : तम-ता-ना-ना ?

वेर्शीनिन : ता-ना-ना-ना। (**हंसता है**)

(**फ़ेदोतिक आता है**)

फ़ेदोतिक (**नाचता है**) : जल गया, जी, जल गया! मेरा सब कुछ जल गया!

(**सभी हंसते हैं**)

इरीना : यह भी अजीब मज़ाक़ है। सब कुछ जल गया?

फ़ेदोतिक (**हंसता है**) : सब कुछ जल गया। कोई भी चीज़ नहीं बची। गिटार जल गयी, फ़ोटो जल गया और मेरे सारे ख़त-पत्र जल गये... और आपको जो नोटबुक भेंट करना चाहता था, वह भी जल गयी।

(**सोल्योनी आता है**)

इरीना : कृपया आप यहां से चले जाइये, वसीली वसील्येविच। आपका यहां आना ठीक नहीं।

सोल्योनी : नवाब आ सकता है, मगर मैं नहीं, भला क्यों?

वेर्शीनिन : हम लोगों को सचमुच ही यहां से चले जाना चाहिये। आग का क्या हाल है?

सोल्योनी : कहते हैं कि कम होती जा रही है। मुझे तो सचमुच यह बात बहुत अजीब लग रही है कि नवाब यहां आ सकता है, लेकिन मैं नहीं! (**इत्र की शीशी निकालकर अपने ऊपर छिड़कता है**)

वेर्शीनिन : तूम-ता-ना-ना ...

माशा : ता-ना-ना ...

वेर्शीनिन (हंसता है, सोल्योनी से) : आइये, बड़े कमरे में चलें।

सोल्योनी : अच्छी बात है, हम इस चीज़ को याद रखेंगे। इस मामले को और ज़्यादा साफ़ किया जा सकता था, लेकिन डरता हूं कि कहीं कलहंस न चिढ़ जायें ... (**तुज़ेनबाख़ की तरफ़ देखकर**) कुड़, कुड़, कुड़ ...

(वेर्शीनिन और फ़ेदोतिक के साथ जाता है)

इरीना : किस बुरी तरह से कमरे को सिगरेट के धुएं से भर दिया है इस सोल्योनी ने ... (**हैरान होकर**) नवाब साहब सो रहे हैं! नवाब! नवाब!

तुज़ेनबाख़ (जागकर) : मैं बहुत थक गया हूं ... ईंटों का भट्ठा ... मैं यह सरसाम में नहीं बोल रहा हूं, वास्तव में ही बहुत जल्द ईंटों के भट्ठे पर जाकर काम करने लगूंगा ... बातचीत हो चुकी है। (**इरीना को प्यार से**) आप ऐसी पीली-पीली, इतनी

सुन्दर, इतनी मनमोहिनी हैं... मुझे लगता है कि आपका पीलापन प्रकाश-किरण की भांति अंधेरे को दूर भगा रहा है... आप उदास हैं, ज़िन्दगी से नाख़ुश हैं... ओह, आइये, हम दोनों साथ-साथ काम करें!

माशा: नवाब साहब, अब आप यहां से तशरीफ़ ले जाइये।

तुज़ेनबाख़ (हंसते हुए): आप यहां हैं? मुझे तो नज़र नहीं आ रहीं। **(इरीना का हाथ चूमता है)** नमस्कार, मैं जा रहा हूं... मैं अब आपको देखता हूं और मुझे यह याद आ रहा है कि कैसे कभी, बहुत पहले, अपने जन्मदिन पर आपने बड़े जोश से और बड़े रंग में आकर मेहनत करने की ख़ुशी की चर्चा की थी... और तब कितने सुखद-सौभाग्यशाली जीवन का सपना मेरी आंखों के सामने उभरा था! कहां है वह जीवन? **(उसका हाथ चूमता है)** आपकी आंखें छलछला आयीं। आप सो जाइये, उजाला होने लगा है... भोर की किरण फूटने लगी है... काश, मैं आप पर अपनी ज़िन्दगी निछावर कर सकता!

माशा: नवाब साहब, तशरीफ़ ले जाइये! सच, कमाल कर रहे हैं...

तुज़ेनबाख़: जा रहा हूं... **(जाता है)**

माशा (लेटते हुए): तुम सो गये, फ़्योदर?

कुलीगिन: क्या?

माशा: घर चले जाओ न!

कुलीगिन: मेरी प्यारी माशा, मेरे दिल की रानी माशा...

इरीना: वह बेहद थक गयी है। उसे थोड़ा आराम करने दो, फ़्योदोर।

कुलीगिन: अभी चला जाता हूं... मेरी अच्छी बीवी, मेरी बहुत भली बीवी... तुम मेरी सब कुछ हो, मैं तुम्हें प्यार करता हूं...

माशा (खीभते हुए प्यार क्रिया के रूप बोलने लगती है) : मैं प्यार करता हूं, तुम प्यार करते हो, वह प्यार करता है, आप प्यार करते हैं, वे प्यार करते हैं!

कुलीगिन (हंसता है) : नहीं, सचमुच, अद्‌भुत औरत है माशा। हमारी शादी हुए सात साल हो गये, लेकिन ऐसे लगता है मानो कल की बात हो। क़सम खाकर कहता हूं। नहीं, सचमुच तुम अद्‌भुत औरत हो। मैं खुश हूं, खुश हूं, खुश हूं!

माशा : मैं ऊब गयी हूं, ऊब गयी हूं, ऊब गयी हूं... (**उठकर बैठ जाती है और बैठे-बैठे ही कहती है**) मेरे दिमाग़ से यह बात निकलती ही नहीं... दिल में आग लगानेवाली बात है। दिमाग़ में जैसे किसी ने कील ठोंक दी हो। मैं किसी तरह चुप नहीं रह सकती। मैं अन्द्रेई की चर्चा कर रही हूं... उसने मकान बैंक में गिरवी रख दिया और सारी रक़म उसकी बीवी ने ले ली। लेकिन मकान तो सिर्फ़ उसी का नहीं है, वह हम चारों का है! अगर उसमें ज़रा-सी भी शराफ़त है तो उसे यह चीज़ नहीं भूलनी चाहिये।

कुलीगिन : तुम्हें क्या लेना-देना है इस बात से माशा! तुम किसलिये परेशान हो रही हो? अन्द्रेई बुरी तरह से क़र्ज़ में दबा हुआ है, सो मारो गोली इस चीज़ को।

माशा : फिर भी यह बेहूदा बात तो है। (**लेट जाती है**)

कुलीगिन : हम-तुम ग़रीब नहीं हैं। मैं काम करता हूं, हाई स्कूल में पढ़ाने जाता हूं, उसके बाद ट्यूशनें करता हूं... मैं ईमानदार आदमी हूं, सीधा-सादा... जैसा कि कहा जाता है—मेरा जो कुछ है, मेरे पास है।

माशा : मुझे कुछ नहीं चाहिये, लेकिन बेइन्साफ़ी से मेरे तन-बदन में आग लग जाती है।

तो जाओ फ़्योदर।

कुलीगिन (उसे चूमता है) : तुम थक गयी हो, आधेक घण्टा आराम कर लो। मैं तब तक उधर बैठा रहूंगा, इन्तज़ार कर लूंगा। सो जाओ ... **(जाता है)** मैं ख़ुश हूं, मैं ख़ुश हूं, मैं ख़ुश हूं। **(जाता है)**

इरीना : वास्तव में ही हमारा अन्द्रेई कितना अधिक बदल गया है, इस औरत की संगत में कैसा दब्बू और बूढ़ा-सा हो गया है! कभी तो वह प्रोफ़ेसर बनने की तैयारी कर रहा था और कल इस बात की डींग हांक रहा था कि आख़िर तो नगर-पंचायत की प्रबन्ध-समिति का सदस्य बन गया। वह प्रबन्ध समिति का सदस्य और प्रोतोपोपोव अध्यक्ष है ... सारे शहर में चर्चा हो रही है, सभी लोग फब्तियां कसते हैं, लेकिन सिर्फ़ अन्द्रेई की आंखों पर ही परदा पड़ा हुआ है, वह न कुछ जानता और न देखता है ... इस आग को ही ले लो – सभी उसे बुझाने के लिये हाथ बंटाने को दौड़ पड़े, लेकिन वह अपने कमरे में बैठा रहा जैसा उसका इससे कोई वास्ता ही न हो। बस, वायलिन बजाता रहता है। **(झल्लाकर)** ओह, बहुत भयानक, बहुत भयानक, बहुत भयानक है यह! **(रोती है)** मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती, मैं और बर्दाश्त नहीं कर सकती! .. नहीं कर सकती, नहीं कर सकती! ..

(ओल्गा आती है, अपनी छोटी-सी मेज़ को ठीक-ठाक करती है)

(इरीना ज़ोर से सिसकते हुए) मुझे यहां से निकाल फेंकिये, निकाल फेंकिये, मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती! ..

ओल्गा (घबराकर) : क्या बात है, क्या बात है, मेरी प्यारी बहन?

इरीना (सिसकते हुए): कहां गया? कहां चला गया वह सब? कहां गया? हे भगवान, हे मेरे भगवान! मैं सब कुछ भूल गयी, सब कुछ ... मेरे दिमाग़ में सब कुछ गड्डमड्ड हो गया ... मुझे तो यह भी याद नहीं रहा कि इतालवी भाषा में खिड़की या छत को क्या कहते हैं ... सब कुछ भूलती जा रही हूं, हर दिन भूलती जा रही हूं, लेकिन ज़िन्दगी तो बीतती जा रही है, लौटकर नहीं आयेगी, कभी नहीं लौटेगी, हम कभी मास्को नहीं जायेंगे ... मैं देख़ रही हूं कि कभी नहीं जायेंगे ...

ओल्गा: मेरी प्यारी बहन, प्यारी बहन ...

इरीना (कुछ संयत होकर): ओह कितनी दुखी हूं मैं ... मैं काम नहीं कर सकती, मैं काम नहीं करूंगी। बस, बहुत काम कर चुकी, बहुत। तारघर में काम करती रही और अब नगर-परिषद में काम करती हूं। मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाता यह काम, मैं उस सारे काम से नफ़रत करती हूं जो मुझे करने को दिया जाता है ... मुझे चौबीसवां साल चल रहा है, मैं बहुत अरसे से काम कर रही हूं। मेरा दिमाग़ जैसे निचुड़ गया है, हड्डियां निकलती आ रही हैं, शक्ल-सूरत बिगड़ती जा रही है, बूढ़ी होती जा रही हूं और मन को किसी तरह, किसी भी तरह का सुख-सन्तोष नहीं। वक़्त बीतता जा रहा है और ऐसे लगता है कि वास्तविक, सुन्दर जीवन से दूर हटती जा रही हूं, दूर ही दूर होती जाती हूं, किसी गहरे खड्ड में उतरती जा रही हूं। मैं बिल्कुल निराश-हताश हो चुकी हूं, समझ नहीं पा रही कि अभी तक कैसे ज़िन्दा हूं, क्यों मैंने आत्महत्या नहीं कर ली ...

ओल्गा: नहीं रोओ, मेरी रानी बहन, नहीं रोओ ... मेरे दिल पर बहुत भारी गुज़र रही है।

इरीना: मैं रो नहीं रही हूं, रो नहीं रही हूं ... बस, काफ़ी

19-912

है ... देखो तो मैं रो नहीं रही हूं। बस, बहुत है ... बहुत है!

ओल्गा : मेरी लाड़ली, बहन के नाते, एक मित्र के नाते मेरी सलाह मानो और नवाब से शादी कर लो!

(इरीना धीरे-धीरे रोती है)

तुम उसकी इज़्ज़त करती हो न, उसके बारे में ऊंचे विचार रखती हो ... यह सच है कि वह सुन्दर नहीं, लेकिन बहुत ढंग का, सलीकेदार और शरीफ़ आदमी है ... आख़िर प्यार के लिये ही नहीं, बल्कि अपना कर्त्तव्य पूरा करने को भी शादी की जाती है। कम से कम मैं तो ऐसा ही समझती हूं और प्यार के बिना भी मैंने शादी कर ली होती। अगर कोई भी मुझसे शादी का प्रस्ताव करता तो मैं उसे स्वीकार कर लेती बशर्ते कि वह आदमी भला होता। मैंने तो बुड्ढे से भी ब्याह कर लिया होता ...

इरीना : मैं तो इसी इन्तज़ार में रही कि हम मास्को जा बसेंगे, वहां मुझे मेरा सच्चा जीवन-साथी मिल जायेगा, मैं उसकी कल्पना और उसे प्यार करती रही ... लेकिन अब पता चला कि यह सब बकवास है, बेसिर-पैर की बातें हैं ...

ओल्गा (बहन का आलिंगन करती है) : मेरी प्यारी, मेरी बहुत अच्छी बहन, मैं सब कुछ समझती हूं। नवाब ने जब अपनी फ़ौजी नौकरी छोड़ी और आम कोट पहने हुए हमारे घर आया तो वह मुझे ऐसा कुरूप लगा कि मैं तो रो भी पड़ी ... उसने मुझसे पूछा : "किसलिये रोती हैं आप?" मैं उसे क्या जवाब देती! लेकिन अगर भगवान की कृपा से तुम दोनों की जोड़ी मिल जाये तो मुझे बड़ी ख़ुशी हो। यह दूसरी बात है, बिल्कुल दूसरी।

(नताल्या मोमबत्ती लिये हुए दायें दरवाज़े से निकलती है और मंच पार करके बायीं ओर के दरवाज़े में चुपचाप ग़ायब हो जाती है)

माशा (उठकर बैठ जाती है) : वह ऐसे घूम रही है मानो उसी ने आग लगायी हो।

ओल्गा : माशा, तुम बड़ी बुद्धू हो। हमारे परिवार में अगर कोई सबसे ज़्यादा बुद्धू है तो वह तुम ही हो। ऐसा कहने के लिय माफ़ी चाहती हूं।

(ख़ामोशी)

माशा : मेरी प्यारी बहनो, मैं तुम दोनों के सामने अपने एक पाप का प्रायश्चित करना चाहती हूं। मेरी आत्मा मुझे चैन नहीं लेने दे रही। तुम्हारे सामने प्रायश्चित कर लेती हूं और अन्य किसी के सामने कभी ऐसा नहीं करूंगी... अभी, इसी क्षण कहे देती हूं। **(धीरे से)** यह मेरा राज़ है, लेकिन तुम्हें इसे जानना चाहिये... मैं इसे छिपा नहीं सकती...

(ख़ामोशी)

मुझे प्यार हो गया है, प्यार हो गया है... इस व्यक्ति से प्यार हो गया है... अभी वह तुम्हारे सामने था... पहेलियां बुझाने में क्या रखा है... थोड़े में यह कि मैं वेर्शीनिन को प्यार करती हूं...

ओल्गा (अपने पलंग की तरफ़ परदे के पीछे चली जाती है) : बेकार की बातें नहीं करो। मैं तो कुछ सुन ही नहीं रही हूं।

माशा : मेरे दिल पर मेरा बस नहीं! **(सिर थामकर)** शुरू में वह मुझे अजीब-सा लगा, फिर मैं उस पर तरस खाने

लगी ... और फिर प्यार करने लगी ... उसकी आवाज़, उसके शब्दों, उसके दुख-दर्दों उसकी दो बच्चियों को प्यार करने लगी ...

ओल्गा (परदे के पीछे से) : मैं तो कुछ भी नहीं सुन रही। तुम चाहे कैसी भी बेवक़ूफ़ी की बातें क्यों न करो, मैं कुछ भी नहीं सुन रही।

माशा : ओह, कैसी अजीब हो तुम, ओल्गा। मैं प्यार करती हूं – इसका मतलब यह है कि मेरे भाग्य में ऐसा ही बदा है ... कि होनी को कोई नहीं टाल सकता ... और वह भी मुझे प्यार करता है ... यह सब भयानक है। है न? यह बुरी बात है न? **(इरीना का हाथ खींचकर उसे अपने निकट कर लेती है)** ओह, मेरी प्यारी बहन ... कैसे बीतेगी हमारी ज़िन्दगी, क्या बनेगा हम लोगों का ... जब हम कोई उपन्यास पढ़ते हैं तो हमें लगता है कि यह सब कुछ घिसा-पिटा है और सभी कुछ बहुत आसानी से समझ में आ जाता है, लेकिन जब हम ख़ुद प्यार करने लगते हैं तो पता चलता है कि कोई कुछ नहीं जानता और हर किसी को ख़ुद ही अपने भाग्य का निर्णय करना होता है ... मेरी बहनो, मेरी प्यारी बहनो ... तुम्हारे सामने अपना दिल खोल दिया और अब ख़ामोश रहूंगी ... अब गोगोल के पागल जैसी हो जाऊंगी ... ख़ामोश ... एकदम ख़ामोश ...

(अन्द्रेई, उसके पीछे-पीछे फ़ेरापोन्त आता है)

अन्द्रेई (झुंझलाकर) : आख़िर तुम मुझसे चाहते क्या हो? मेरी समझ में नहीं आता।

फ़ेरापोन्त (दरवाज़े के पास, अधीर होकर) : अन्द्रेई सेर्गेये-विच, आपको दस बार तो बता चुका हूं।

अन्द्रेई : पहली बात तो यह है कि तुम्हारे लिये मैं अन्द्रेई सेर्गेयेविच नहीं, हुज़ूर हूं!

फ़ेरापोन्त : हुजूर, आग बुझानेवाले बाग़ में से होकर नदी पर जाने की इजाज़त चाहते हैं। वरना उन्हें बहुत बड़ा चक्कर काटना पड़ता है जो बड़ी मुसीबत है।

अन्द्रेई : अच्छी बात है। कह दो उनसे कि वे ऐसा कर सकते हैं।

(फ़ेरापोन्त जाता है)

जान खा ली कमबख़्तों ने ! ओल्गा कहां है ?

(ओल्गा परदे के पीछे से बाहर आती है)

मैं तुमसे अलमारी की चाबी लेने आया हूं। मेरी चाबी कहीं खो गयी। मुझे मालूम है कि तुम्हारे पास ऐसी छोटी-सी चाबी है।

(ओल्गा उसे चुपचाप चाबी देती है। इरीना अपने परदे के पीछे जाती है)

ओह, कैसी भयानक आग है। अब शान्त होने लगी है। बेड़ा ग़र्क़, इस फ़ेरापोन्त ने मुझे आपे से बाहर कर दिया। मैंने उससे बड़ी बेतुकी बात कह दी... तुम्हारे लिये मैं हुज़ूर हूं...

(ख़ामोशी)

तुम कुछ बोलती क्यों नहीं, ओल्गा ?

(ख़ामोशी)

बस, काफ़ी हो चुकी ये बेवक़ूफ़ियां और इस तरह रूठना, मुंह फुलाये रहना। माशा तुम यहां हो, इरीना तुम भी, बहुत अच्छी बात है – तो हम अभी, हमेशा के लिये सारी बात साफ़ कर

लेते हैं। क्या शिकायत है तुमको मुझसे? क्या?

ओल्गा: अन्द्रूशा, रहने दो इस चर्चा को। कल बात कर लेंगे। (**बहुत विह्वलता से**) कैसी मनहूस रात है!

अन्द्रेई (चकराया-सा): तुम परेशान नहीं होओ। मैं बिल्कुल शान्ति से यह पूछ रहा हूं कि तुम लोगों को क्या शिकायत है मुझसे? साफ़-साफ़ कहो।

(**वेर्शीनिन की आवाज़: "तूम-त्राम्-त्राम!"**)

माशा (उठकर बैठ जाती है, ऊंची आवाज़ में): त्राम-त्रा-त्रा! (**ओल्गा से**) नमस्ते ओल्गा, भगवान तुम्हें सुखी रखे। (**परदे के पीछे जाकर इरीना को चूमती है**) चैन से सोओ... नमस्ते अन्द्रेई। अब जाओ, ये बहुत थकी हुई हैं... कल सब कुछ तय कर लेना... (**जाती है**)

ओल्गा: हां सचमुच अन्द्रूशा, कल ही सारी बातें कर लेंगे... (**परदे के पीछे अपने पलंग पर जाती है**) अब सोना चाहिये।

अन्द्रेई: मुझे जो कुछ कहना है, मैं वह अभी कहकर चला जाऊंगा... पहली बात तो यह है कि तुम लोगों को नताल्या, मेरी पत्नी से कुछ शिकायत है और यह मैं आपनी शादी के दिन से ही देख रहा हूं। नताल्या बहुत अच्छी, ईमानदार, खरी-खरी बात करनेवाली और नेक औरत है – यह है उसके बारे में मेरी राय। अपनी बीवी को मैं प्यार करता हूं, उसे इज़्ज़त की नज़र से देखता हूं। तुम लोग समझती हो, मैं उसकी इज़्ज़त करता हूं और यह मांग करता हूं कि दूसरे लोग भी उसकी इज़्ज़त करें। मैं दोहराता हूं कि वह ईमानदार और नेक औरत है तथा तुम लोगों के शिकवे-शिकायत महज़ सनकें हैं...

(**ख़ामोशी**)

दूसरे, तुम लोग मानो इस बात से नाराज़ हो कि मैं प्रोफ़ेसर नहीं हूं, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में कोई काम नहीं कर रहा हूं। लेकिन मैं नगर-पंचायत में काम करता हूं, नगर-पंचायत की प्रबन्ध-समिति का सदस्य हूं और अपने इस काम को भी पढ़ने-लिखने के काम की तरह ही पावन और बहुत ऊंचा मानता हूं। मैं नगर-पंचायत की प्रबन्ध-समिति का सदस्य हूं और अगर सुनना ही चाहती हो तो सुन लो कि मैं अपने इस काम पर गर्व करता हूं...

•

(ख़ामोशी)

अब सुनो तीसरी बात... मुझे यह भी कहना ही है... तुम लोगों की सहमति लिये बिना मैंने मकान गिरवी रख दिया... मैं इसके लिये क़ुसूरवार हूं और माफ़ी चाहता हूं... लेकिन मेरे क़र्ज़ों ने मुझे ऐसा करने को मजबूर कर दिया... मैं अब जुआ नहीं खेलता हूं, मुद्दत हो गयी मुझे उसे छोड़े हुए, लेकिन अपनी सफ़ाई पेश करने के लिये मैं जो सबसे बड़ी बात कह सकता हूं, वह यह है कि मेरी बहनो, तुम्हें तो पेंशन मिल जाती है, जबकि यों कहना चाहिये, मेरी तो कोई आमदनी नहीं थी...

(ख़ामोशी)

कुलीगिन (दरवाज़े के पास आकर): माशा यहां नहीं है? **(चिन्तित होकर)** कहां है वह? बड़ी अजीब बात है यह... **(जाता है)**

अन्द्रेई: नहीं सुनतीं मेरी बात। नताल्या बहुत अच्छी और ईमानदार औरत है। **(मंच पर चुपचाप चलता है और फिर रुकता है)** जब मैंने शादी की थी तो सोचा था कि हम सुखी

होंगे ... सभी सुखी होंगे ... लेकिन हे भगवान ... (**रोता है**) मेरी अच्छी, मेरी प्यारी बहनो, मेरी बातों पर यक़ीन नहीं करो, मेरी बातों को सच नहीं मानो ... (**जाता है**)

कुलीगिन (दरवाज़े पर, चिन्तित-सा): माशा कहां है? माशा यहां नहीं है? अजीब बात है। (**जाता है**)

(आग बुझानेवालों की घण्टी सुनाई देती है, मंच पर कोई नहीं)

इरीना (परदे के पीछे से): ओल्गा! यह फ़र्श को कौन ठकठका रहा है?

ओल्गा: डाक्टर इवान रोमानोविच नशे में बिल्कुल धुत्त है।

इरीना: कैसी मनहूस रात है!

(ख़ामोशी)

ओल्गा! (**परदे के पीछे से झांकती है**) सुना तुमने? फ़ौजी ब्रिगेड को यहां से हटाया जा रहा है, कहीं बहुत दूर भेजा जा रहा है।

ओल्गा: ये तो सिर्फ़ अफ़वाहें हैं।

इरीना: तब तो हम अकेली ही रह जायेंगी ... ओल्गा!

ओल्गा: क्या बात है?

इरीना: मेरी बहुत अच्छी, बहुत प्यारी बहन, मैं नवाब तुज़ेनबाख़ का बहुत आदर करती हूं, बड़े ऊंचे ख़्याल हैं मेरे उसके बारे में। वह हीरा आदमी है, मैं उससे शादी कर लूंगी, मैं सहमत हूं इसके लिये, लेकिन मास्को चलो चलो। तुम्हारी मिन्नत करती हूं, चली चलो! मास्को से बढ़कर दुनिया में कुछ भी नहीं! चलो ओल्गा! आओ, मास्को चलें!

(परदा गिरता है)

चौथा अंक

(प्रोज़ोरोव परिवार के मकान का पुराना बाग़। फ़र वृक्षों की एक लम्बी वीथिका, जिसके सिरे पर नदी दिखाई दे रही है। नदी के उस पार जंगल है। दायीं ओर मकान का बरामदा है जहां एक मेज़ पर बोतलें और गिलास रखे हैं। इससे पता चलता है कि वहां अभी-अभी शेम्पेन पी गयी है। दिन के बारह बजे हैं। सड़क से इक्के-दुक्के •राहगीर बाग़ को लांघते हुए नदी की ओर जाते हैं। पांच फ़ौजी तेज़ी से क़दम बढ़ाते हुए जा रहे हैं।)

(चेबुतीकिन बहुत अच्छे मूड में है और उसका यह मूड सारे अंक में बना रहता है। वह बाग़ में एक आरामकुर्सी पर बैठा हुआ यह इन्तज़ार कर रहा है कि उसे कब बुलाया जाता है। वह छज्जेदार टोपी पहने है और उसके हाथ में छड़ी है। इरीना, मूंछों के बिना और गले में पदक लटकाये कुलीगिन तथा तुज़ेनबाख़ बरामदे में खड़े हुए फ़ेदोतिक और रोदे को विदा कर रहे हैं जो नीचे उतर रहे हैं। दोनों अफ़सर कूच की वर्दी पहने हैं।)

तुज़ेनबाख़ (फ़ेदोतिक को चूमता है) : आप बहुत अच्छे हैं, हम लोग यहां बहुत प्यार-मुहब्बत से रहे। **(रोदे को चूमता है)** एक बार फिर... नमस्कार, विदा प्यारे दोस्त !

इरीना : फिर मिलने तक नमस्ते !

फ़ेदोतिक : फिर मिलने तक नहीं, बल्कि हमेशा के लिये। हम अब फिर कभी नहीं मिलेंगे !

कुलीगिन कौन जाने ! **(आंखें पोंछता है, मुस्कराता है)** लीजिये, मैं तो रो भी पड़ा।

इरीना : कभी न कभी तो मिलेंगे।

फ़ेदोतिक : दस-पन्द्रह साल बाद ? लेकिन तब तो शायद ही हम एक-दूसरे को पहचान पायेंगे, बुझे-बुझे मन से एक-दूसरे का अभिवादन करेंगे ... (**फ़ोटो खींचता है**) ज़रा रुकिये ... आख़िरी बार एक और फ़ोटो खींच लूं।

रोदे (तुज़ेनबाख़ को बांहों में भर लेता है) : अब फिर कभी नहीं मिलेंगे ... (**इरीना का हाथ चूमता है**) आपकी सभी मेहरबानियों के लिये बहुत बहुत शुक्रिया !

फ़ेदोतिक (खीझकर) : ज़रा खड़े तो रहो।

तुज़ेनबाख़ : भगवान ने चाहा तो हम फिर मिलेंगे। हमें ख़त लिखिये। ज़रूर लिखिये।

रोदे (बाग़ पर चारों तरफ़ नज़र डालते हुए) : विदा पेड़-पौधो ! (**ऊंची आवाज़ में**) हो-हो !

(**ख़ामोशी**)

विदा, प्रतिध्वनि !

कुलीगिन : शायद पोलैंड में आप शादी ही कर लें ... आपकी पोलैंडी बीवी आपको बांहों में भरकर कहेगी : "कोखान्ये !" (**हंसता है**)

फ़ेदोतिक (घड़ी पर नज़र डालकर) : एक घण्टे से भी कम समय रह गया है। हमारे तोपख़ाने में से तो सिर्फ़ सोल्योनी ही बजरे के साथ जायेगा और हम सब पैदल सेना के साथ। तोपख़ाने के तीन डिवीजन आज चले जायेंगे और तीन कल। इसके बाद शहर में शान्ति और चैन हो जायेगा।

तुज़ेनबाख़ : और उल्लू बोलने लगेंगे।

रोदे : मारीया सेर्गेयेव्ना कहां हैं ?

कुलीगिन : माशा तो बाग़ में है।

फ़ेदोतिक : उससे विदा लेनी चाहिये।

रोदे : तो विदा, चलना चाहिये, नहीं तो मैं रो पड़ूंगा ... **(जल्दी से तुज़ेनबाख़ और कुलीगिन को गले लगाता है, इरीना का हाथ चूमता है)** बहुत ही अच्छे दिन बीते हैं आपके यहां ...

फ़ेदोतिक (कुलीगिन से) : यह आपको अपनी याद की निशानी के तौर पर ... नोटबुक और पेंसिल ... हम यहां से नदी की ओर चले जायेंगे ...

(जाते हैं, मुड़कर देखते हैं)

रोदे (ऊंची आवाज़ में) : हो-हो !

कुलीगिन (इसी तरह ऊंची आवाज़ में) : विदा !

(नेपथ्य में फ़ेदोतिक और रोदे माशा से मिलकर उससे विदा लेते हैं। माशा उनके साथ ही चली जाती है)

इरीना : चले गये। **(बरामदे की नीचेवाली पैड़ी पर बैठ जाती है)**

चेबुतीकिन : मुझसे विदा लेना तो भूल ही गये।

इरीना : और आप किस दुनिया में खोये रहे ?

चेबुतीकिन : हां, मुझे भी ध्यान नहीं रहा। ख़ैर, कोई बात नहीं, जल्द ही इनसे मेरी मुलाक़ात हो जायेगी, मैं भी कल जा रहा हूं। हां ... बस, एक दिन और रह गया। एक साल बाद रिटायर होकर फिर से यहां आ जाऊंगा, अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी दिन आप लोगों के साथ बिताऊंगा ... पेंशन पाने के लिये सिर्फ़ एक ही साल बाक़ी रह गया ... **(एक अख़बार जेब में डालकर दूसरा निकालता है)** आप लोगों के पास लौटकर अपनी ज़िन्दगी का ढर्रा बिल्कुल बदल डालूंगा ... बहुत शान्त, भला ... भलामानस, बहुत अच्छा बन जाऊंगा ...

इरीना : डाक्टर साहब, आपको तो ज़िन्दगी का ढर्रा बदलना ही चाहिये। सचमुच, किसी तरह ऐसा करना चाहिये।

चेबुतीकिन : हां। महसूस करता हूं। (**धीरे-धीरे गाता है**) तारा-रा-रा-तान-तरा – सचमुच मेरा हाल बुरा ...

कुलीगिन : कुत्ते की दुमवाला हाल है आपका डाक्टर साहब ! कुत्ते की दुमवाला !

चेबुतीकिन : हां, आप जैसे किसी उस्ताद की शागिर्दी करनी चाहिये। तब मैं रास्ते पर आ जाऊंगा।

इरीना : फ़्योदर ने अपनी मूंछें मुंडवा डालीं। अब तो इसकी तरफ़ देखने को भी मन नहीं होता !

कुलीगिन : इसमें क्या बात है ?

चेबुतीकिन : आपकी सूरत अब कैसी लगती है, मैंने यह बता तो दिया होता, लेकिन ऐसा कर नहीं सकता।

कुलीगिन : हटाइये भी ! आजकल यही चलन, यही फ़ैशन है ! हमारे स्कूल में डायरेक्टर सफ़ाचट हैं और जैसे ही मैं इन्स्पेक्टर बना, मैंने भी मूंछें मुंडा दीं। किसी को भी यह पसन्द नहीं, लेकिन मेरी बला से। मैं ख़ुश हूं। मूंछें हों या न हों, मैं हर हाल में ख़ुश हूं ... (**बैठता है**)

(नेपथ्य में अन्द्रेई बच्चागाड़ी के साथ नज़र आता है जिसमें बच्चा सो रहा है)

इरीना : डाक्टर साहब, प्यारे इवान रोमानोविच, मैं बहुत परेशान हूं। आप कल छायादार सड़क पर थे, यह बताइये कि कल वहां क्या हुआ था ?

चेबुतीकिन : क्या हुआ था ? कुछ भी नहीं। कोई ख़ास बात नहीं। (**अख़बार पढ़ता है**) क्या फ़र्क़ पड़ता है !

कुलीगिन : ऐसा कहा जाता है कि सोल्योनी और नवाब कल छायादार सड़क पर थियेटर के पास मिले ...

तुज़ेनबाख़ : छोड़िये भी ! यह सब क्या है ... (**हाथ झटककर घर में चला जाता है**)

कुलीगिन : थियेटर के पास ... सोल्योनी नवाब को खिझाने-चिढ़ाने लगा, नवाब से यह बर्दाश्त न हुआ और उसने भी कोई जली-कटी बात कह दी ...

चेबुतीकिन : मुझे तो मालूम नहीं। सब बकवास है।

कुलीगिन : किसी धार्मिक स्कूल में अध्यापक ने रूसी में 'बकवास' लिखा, किन्तु छात्र ने यह समझते हुए कि वह लातीनी भाषा में लिखा गया है, उसे 'लिबास' पढ़ा ... (**हंसता है**) है न हंसी की बात। कहते हैं कि सोल्योनी मानो इरीना पर लट्टू है और नवाब से नफ़रत करता है ... यह बात समझ में आती है। इरीना बहुत अच्छी लड़की है। वह तो कुछ कुछ माशा जैसी भी है, उसी की तरह विचारों में खोयी-खोयी रहने-वाली। हां, इरीना, तुम्हारा स्वभाव कुछ नर्म है। वैसे तो माशा का स्वभाव भी बहुत अच्छा है। मैं उसको, माशा को प्यार करता हूं।

(**नेपथ्य में दूरी पर : "हो-हो !"**)

इरीना (चौंक उठती है) : आज मैं हर चीज़ से भयभीत हो उठती हूं।

(**ख़ामोशी**)

मेरी पूरी तैयारी हो चुकी है, दोपहर के खाने के बाद मैं अपना सारा सामान भेज दूंगी। नवाब के साथ कल मेरी शादी हो जायेगी, कल ही हम ईंटों के भट्ठे पर चले जायेंगे और परसों

मैं स्कूल में पढ़ाने लगूंगी। नया जीवन शुरू हो रहा है। भगवान मेरी मदद करे! जब मैंने अध्यापिका बनने की परीक्षा पास की तो ख़ुशी से, उल्लास से मेरी आंखें भी छलछला आयीं ...

(**ख़ामोशी**)

अभी वे लोग सामान ले जाने के लिये गाड़ी लेकर आ जायेंगे ...

कुलीगिन :वैसे तो यह सब ठीक है, लेकिन मामला कुछ संजीदा नहीं लगता। बस, विचार ही विचार हैं, किन्तु गम्भीरता की कमी है। ख़ैर, मैं तुम्हारे लिये हार्दिक शुभ कामना करता हूं।

चेबुतीकिन (भावुक होकर) : मेरी लाड़ली ... मेरी अच्छी ... मेरी फ़रिश्ते-सी गुड़िया ... इतनी आगे चली गयी हो तुम सब तो कि मेरे लिये साथ निभाना सम्भव नहीं। मैं उस बूढ़े मौसमी पंछी की तरह पीछे रह गया जिसके पंखों में उड़ने की ताक़त नहीं रही। उड़िये, मेरी प्यारी, उड़िये, भगवान भला करे आपका!

(**ख़ामोशी**)

फ़्योदोर इल्यीच, आपने तो व्यर्थ ही अपनी मूंछें साफ़ करवा दीं।

कुलीगिन : अब हटाइये भी इस बात को! **(आह भरकर)** आज फ़ौजी लोग चले जायेंगे और फिर से सब कुछ पहले जैसा हो जायेगा। बेशक लोग कुछ भी कहें, माशा बहुत अच्छी, वफ़ादार औरत है। मैं उसे बहुत प्यार करता हूं और अपने भाग्य को सराहता हूं ... लोगों के भाग्य भी भिन्न-भिन्न हैं ... यहां चुंगी के दफ़्तर में कोज़िरेव नाम का एक क्लर्क काम करता है। वह कभी मेरा सहपाठी था, उसे पांचवें दर्जे में इसलिये हाई स्कूल से निकाल दिया गया था कि वह लातीनी भाषा का वाक्य-

विन्यास किसी भी तरह नहीं समझ पाता था। अब वह बहुत ग़रीब है, बीमार रहता है और मैं जब भी उससे मिलता हूं तो कहता हूं: "नमस्ते, वाक्य-विन्यास।" "हां," वह जवाब देता है, "सचमुच, मैं वाक्य-विन्यास ही हूं," और खुद खांसने लगता है। लेकिन मैं हमेशा तक़दीर का सिकन्दर रहा हूं, खुश-क़िस्मत हूं, स्तानीस्लाव का दूसरी श्रेणी का पदक भी मुझे मिल चुका है और अब दूसरों को यही वाक्य-विन्यास सिखाता हूं। इसमें कोई शक नहीं कि मैं बुद्धिमान व्यक्ति हूं, दूसरों से अधिक बुद्धिमान हूं, लेकिन इसी में तो खुशनसीबी का राज़ नहीं है...

(घर में पियानो पर कुंवारी मरियम की प्रार्थना बजती है)

इरीना: कल शाम को मैं 'कुंवारी मरियम' की यह प्रार्थना नहीं सुनूंगी, मुझे प्रोतोपोपोव से नहीं मिलना पड़ेगा...

(ख़ामोशी)

और प्रोतोपोपोव वहां दीवानख़ाने में बैठा है। वह आज भी आया हुआ है...

कुलीगिन: हमारी बड़ी अध्यापिका अभी तक नहीं आयी?

इरीना: नहीं। बुलवा भेजा है। काश, आप जानते कि ओल्गा के बिना यहां कितनी कठिन ज़िन्दगी है मेरी... वह अब हाई स्कूल की बड़ी अध्यापिका हो गयी है, स्कूल में ही रहने लगी है, दिन भर काम में जुटी रहती है और मैं यहां अकेली रह गयी हूं, मुझे ऊब महसूस होती है, करने-कराने को कुछ नहीं, जिस कमरे में मैं रहती हूं, वह मुझे काटने को दौड़ता है... मैंने यही तय कर लिया है—अगर मेरे भाग्य में मास्को जाना नहीं लिखा है तो ऐसा ही सही। तक़दीर तो

तक़दीर ठहरी। किसकी चलती है उसके सामने। सब कुछ भगवान के हाथ में है, यही सचाई है। नवाब ने प्रस्ताव किया कि मैं उससे शादी कर लूं ... तो क्या किया जाये? मैंने विचार किया और ऐसा करने का फ़ैसला कर लिया। वह भला आदमी है, इतना भला कि हैरानी होती है ... मेरी आत्मा को तो मानो पंख लग गये, मेरी ख़ुशी लौट आयी, मन हल्का हो गया और फिर से दिल यही चाहने लगा कि काम किया जाये, काम किया जाये ... लेकिन कल कोई बात हो गयी, कोई राज़ है जो मेरे मन पर हावी हो गया है ...

चेबुतीकिन: लिबास। बकवास।

नताल्या (खिड़की से): बड़ी अध्यापिका!

कुलीगिन: आ गयी बड़ी अध्यापिका। आओ, चलें।

(इरीना के साथ घर में जाता है)

चेबुतीकिन (धीरे-धीरे गाता हुआ अख़बार पढ़ता है): तूम-त्रा-त्रा ... मेरा हाल बुरा ...

(माशा उसके पास आती है, दूरी पर अन्द्रेई बच्चागाड़ी चलाता दिखाई देता है)

माशा: बैठे हुए हैं, न कोई चिन्ता, न फ़िक्र ...

चेबुतीकिन: क्या बात है?

माशा (बैठ जाती है): कोई बात नहीं ...

(ख़ामोशी)

आप मेरी मां को प्यार करते थे?

चेबुतीकिन : बेहद।

माशा : और वह आपको ?

चेबुतीकिन (ज़रा रुककर) : यह तो अब मुझे याद नहीं।

माशा : मेरा साजन यहां है ? कभी हमारे यहां काम करनेवाली एक बावर्चिन मार्फ़ा अपने पुलिसमैन के बारे में ऐसे ही कहा करती थी – मेरा साजन ! मेरा साजन यहां है ?

चेबुतीकिन : अभी तो नहीं।

माशा : जब हमें कभी-कभी, छोटे-छोटे अंशों में ख़ुशी मिलती है और हम उसे भी खो बैठते हैं, जैसे कि मेरे साथ हो रहा है, तो आदमी धीरे-धीरे चिड़चिड़ा हो जाता है, दूसरों को काटने को दौड़ता है ... **(अपनी छाती की ओर संकेत करती है)** यहां, मेरे भीतर कुछ धधकता है ... **(बच्चागाड़ी को चला रहे अन्द्रेई पर नज़र डालते हुए)** हमारे इस अन्द्रेई भैया को देखिये ... हमारी सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया। हज़ारों लोग मानो मिलकर एक भारी घण्टे को ऊपर उठाते हैं, बहुत पैसा और लोगों का पसीना बहता है उसे ऊपर उठाने के लिये और वह अचानक धड़ाम से नीचे आ गिरता है, टुकड़े-टुकड़े, चूर-चूर हो जाता है। यही हाल अन्द्रेई का है ...

अन्द्रेई : आख़िर हमारे इस घर में शान्ति कब होगी। इतना शोर-शराबा है।

चेबुतीकिन : जल्दी ही। **(घड़ी पर नज़र डालता है)** मेरी यह घड़ी पुराने वक़्तों की है, घण्टे बजानेवाली ... **(घड़ी को चाबी देता है, वह घण्टे बजाती है)** पहला, दूसरा और पांचवां तोपख़ाना आज दिन के ठीक एक बजे चले जायेंगे ...

(ख़ामोशी)

और मैं कल।

20-912

अन्द्रेई : हमेशा के लिये ?

चेबुतीकिन : कह नहीं सकता। हो सकता है कि एक साल बाद लौट आऊं। वैसे शैतान ही जाने... क्या फ़र्क़ पड़ता है...

(कहीं दूरी पर आर्फ़ा और वायलिन-वादन सुनाई देता है)

अन्द्रेई : शहर में सन्नाटा छा जायेगा। ठीक वैसे, मानो किसी ने ढक्कन से उसे बन्द कर दिया हो।

(ख़ामोशी)

कल थियेटर के पास कोई बात हो गयी, सभी उसकी चर्चा कर रहे हैं, मगर मुझे कुछ मालूम ही नहीं।

चेबुतीकिन : कोई ख़ास बात नहीं। यों ही बकवास है। सोल्योनी नवाब को चिढ़ाने लगा, वह भड़क उठा, उसने सोल्योनी से कोई उल्टी-सीधी बात कह दी और आख़िर यह हुआ कि सोल्योनी को उसे द्वन्द्व-युद्ध के लिये चुनौती देनी पड़ी। **(घड़ी पर नज़र डालता है)** लगता है कि वक़्त हो गया... साढ़े बारह बजे उस झुरमुट में जो यहां से नदी के पार दिखाई दे रहा है – ठांय-ठांय होगी। **(हंसता है)** सोल्योनी को यह ग़लतफ़हमी है कि वह लेर्मोन्तोव है, वह तो कुछ कविता भी लिखता-लिखाता है। ख़ैर, मज़ाक़ को गोली मारिये, यह उसका तीसरा द्वन्द्व-युद्ध है।

माशा : किसका ?

चेबुतीकिन : सोल्योनी का।

माशा : और नवाब का ?

चेबुतीकिन : नवाब का क्या ?

(**ख़ामोशी**)

माशा : मेरे दिमाग़ में सब कुछ गड्डमड्ड हो गया है ... फिर भी मैं कहती हूं कि यह नहीं होने देना चाहिये। वह नवाब को घायल कर सकता है या उसकी जान भी ले सकता है।

चेबुतीकिन : नवाब अच्छा आदमी है, लेकिन एक नवाब ज़्यादा या कम हुआ – इससे क्या बनता-बिगड़ता है? होने दो! कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता!

(**बाग़ के पार से : "हो! हो!" की आवाज़ सुनाई देती है**)

कोई बात नहीं, इन्तज़ार कर लेगा। यह द्वन्द्व-साक्षी स्कवोर्त्सोव चिल्ला रहा है। नाव में बैठा है।

(**ख़ामोशी**)

अन्द्रेई : मेरे ख़्याल में तो द्वन्द्व-युद्ध में हिस्सा लेना, डाक्टर के नाते उसमें उपस्थित रहना भी अनैतिक है।

चेबुतीकिन : ऐसा तो सिर्फ़ लगता ही है ... हम तो हैं ही नहीं, इस दुनिया में कुछ भी नहीं, हमारा अस्तित्व ही नहीं, यह तो केवल ऐसा लगता है कि हमारा अस्तित्व है ... और फिर किसी चीज़ से कोई फ़र्क़ ही क्या पड़ता है!

माशा : बस, ऐसे दिन भर लोग बोलते रहते हैं, बोलते रहते हैं ... (**जाती है**) ऐसे जलवायु में रहते हैं कि जहां किसी भी क्षण बर्फ़ पड़ने लग सकती है और ऊपर से ऐसी बातें सुनने को मिलती हैं ... (**रुकती है**) मैं घर में नहीं जाऊंगी, मैं वहां जा ही नहीं सकती ... जब वेर्शीनिन आये तो मुझे बता दीजियेगा ... (**वीथिका पर जाती है**) मौसमी परिन्दे तो दक्षिण को उड़े भी जा रहे हैं ... (**ऊपर देखती है**) हंस हैं

या कलहंस ... मेरे प्यारो, अच्छी क़िस्मतवालो ... (**जाती है**)

अन्द्रेई : हमारा घर ख़ाली हो जायेगा। फ़ौजी अफ़सर चले जायेंगे, आप चले जायेंगे, इरीना बहन की शादी हो जायेगी और घर में बस, मैं अकेला ही रह जाऊंगा।

चेबुतीकिन : और तुम्हारी बीवी ?

(फ़ेरापोन्त काग़ज़ लिये हुए आता है)

अन्द्रेई : बीवी तो बीवी है। वह वफ़ादार है, अच्छी है, दयालु है। इस सब के बावजूद उसमें कुछ बहुत ही घटियापन, जानवर जैसा अन्धापन और खुरदरापन है। कम से कम वह इन्सान तो नहीं है। आपसे दोस्त के नाते, एकमात्र ऐसे व्यक्ति के नाते जिसके सामने अपना दिल खोलकर रख सकता हूं, यह कह रहा हूं। मैं नताल्या को प्यार करता हूं, यह सही है। लेकिन कभी-कभी वह मुझे बहुत ही कमीनी लगती है और उस वक़्त मेरी अक़्ल काम नहीं करती, मैं यह नहीं समझ पाता कि मैं क्यों, किसलिये उसे इतना प्यार करता हूं या कम से कम पहले प्यार करता था ...

चेबुतीकिन (उठकर खड़ा हो जाता है) : भैया मेरे, मैं तो कल जा रहा हूं और बहुत सम्भव है कि हमारी फिर कभी मुलाक़ात न हो। तुम्हें मैं यही सलाह देना चाहता हूं कि अपनी टोपी पहनो, हाथ में छड़ी लो और चल दो ... चल दो और चलते जाओ, चलते जाओ, मुड़कर नहीं देखो। तुम जितनी दूर चले जाओगे, उतना ही अच्छा है।

(नेपथ्य में सोल्योनी दो फ़ौजी अफ़सरों के साथ गुज़रता है, सोल्योनी को देखकर वह उसकी ओर मुड़ जाता है। फ़ौजी अफ़सर आगे चले जाते हैं)

सोल्योनी : डाक्टर, चलने का वक़्त हो गया! साढ़े बारह बज चुके हैं। (**अन्द्रेई को नमस्कार करता है**)

चेबुतीकिन : अभी चलता हूं। तुम सब के मारे नाक में दम आ गया है। (**अन्द्रेई से**) अन्द्रूशा, अगर कोई मेरे बारे में पूछे तो कह देना कि मैं अभी वापस आ रहा हूं ... (**गहरी सांस लेता है**) ओहो-हो-हो!

सोल्योनी : वह तो आह न भरने पाया, भालू ने आ उसे दबाया। (**उसके साथ जाता है**) बूढ़े मियां, यह आप हाय-वाय क्या कर रहे हैं?

चेबुतीकिन : तुम्हें इससे मतलब!

सोल्योनी : कैसा हाल-चाल है?

चेबुतीकिन (खीझकर) : ज़िन्दगी जंजाल है।

सोल्योनी : बुढ़ऊ व्यर्थ परेशान हो रहे हो। मैं कोई ख़ास बात नहीं करूंगा, सिर्फ़ तीतर की तरह उसे गोली मार दूंगा।(**इत्र निकालकर उसे हाथों पर छिड़कता है**) आज पूरी शीशी हाथों पर छिड़क ली, मगर इनसे फिर भी बू आ रही है। लाश की बू।

(**ख़ामोशी**)

यह बात है जनाब ... वह कविता याद है? "वह विद्रोही तूफ़ानों का दीवाना, तूफ़ानों में मानो चैन उसे मिलता ..."

चेबुतीकिन : हां। वह तो आह न भरने पाया, भालू ने आ उसे दबाया। (**सोल्योनी के साथ जाता है**)

(**ऊंची आवाज़ें : "हो! हो! हलो!" सुनाई देती हैं। अन्द्रेई और फ़ेरापोन्त आते हैं**)

फ़ेरापोन्त : आपके हस्ताक्षर होने हैं इन काग़ज़ों पर ...

अन्द्रेई (झल्लाते हुए) : मेरा पिंड छोड़ो! मेरा पिंड छोड़ दो! मिन्नत करता हूं! **(बच्चागाड़ी के साथ चला जाता है)**

फ़ेरापोन्त : काग़ज़ तो इसलिये होते हैं कि उन पर हस्ताक्षर किये जायें। **(नेपथ्य में चला जाता है)**

(इरीना और पुआल का टोप पहने हुए तुज़ेनबाख़ आते हैं। कुलीगिन : "माशा, अरी ओ माशा!" पुकारता हुआ मंच पार कर जाता है)

तुज़ेनबाख़ : लगता है कि शहर में सिर्फ़ यही एक आदमी है जो फ़ौजियों के यहां से जाने पर ख़ुश हो रहा है।

इरीना : यह समझना भी कुछ मुश्किल नहीं।

(ख़ामोशी)

हमारा शहर अब सुनसान हो जायेगा।

तुज़ेनबाख़ : मेरी रानी, मैं अभी आ जाऊंगा।

इरीना : तुम कहां जा रहे हो?

तुज़ेनबाख़ : मुझे शहर जाना है, उसके बाद... साथियों को विदा भी करना है।

इरीना : तुम झूठ बोल रहे हो... निकोलाई, तुम आज ऐसे उखड़े-उखड़े क्यों हो?

(ख़ामोशी)

थियेटर के पास कल क्या हुआ था?

तुज़ेनबाख़ (अधीरता का संकेत करते हुए) : एक घण्टे बाद मैं लौट आऊंगा और फिर से हम साथ होंगे। **(उसके हाथ चूमता है)** मेरी अनूठी रूप-रानी... **(उसके चेहरे को बहुत**

ध्यान से देखता है) पांच साल हो गये मुझे तुमको प्यार करते हुए और किसी तरह भी मेरे प्यार की यह बेचैनी कम नहीं होती। तुम मुझे पहले से भी ज़्यादा प्यारी लगती हो। कितने सुन्दर, कितने अद्भुत हैं तुम्हारे बाल! कैसी आंखें हैं तुम्हारी! कल मैं तुम्हें अपने साथ ले जाऊंगा, हम काम करेंगे, धनी हो जायेंगे, मेरे सपने साकार हो उठेंगे। तुम सुखी रहोगी। बस, एक ही बात का, सिर्फ़ एक ही बात का दुख है—तुम मुझे प्यार नहीं करतीं।

इरीना : यह मेरे बस की बात नहीं। मैं तुम्हारी वफ़ादार बीवी बनूंगी, तुम्हारी हर बात मानूंगी, लेकिन मेरे दिल में प्यार नहीं तो मैं क्या करूं। **(रोती है)** जीवन में एक बार भी तो मैंने प्यार नहीं जाना। ओह, कितने अधिक सपने देखती रही हूं मैं प्यार के, एक ज़माने से, दिन-रात इसके सपने देखती रही हूं, किन्तु मेरी आत्मा उस क़ीमती पियानो की तरह है जिसे ताला लगा हुआ और जिसकी चाबी खो गयी है।

(ख़ामोशी)

तुम परेशान नज़र आ रहे हो।

तुज़ेनबाख़ : मुझे सारी रात नींद नहीं आयी। मेरी ज़िन्दगी में कोई ऐसी भयानक बात नहीं जो मुझमें दहशत पैदा कर सके। सिर्फ़ यह खोई हुई चाबी ही मेरे दिल के टुकड़े-टुकड़े किये देती है, मेरी नींद उड़ा ले जाती है... मुझसे कुछ कहो।

(ख़ामोशी)

मुझसे कुछ कहो...

इरीना : क्या? क्या कहूं? क्या?

तुज़ेनबाख़ : कुछ भी कहो।

इरीना : बस, बस, हटाओ यह सब!

(**ख़ामोशी**)

तुज़ेनबाख़ : जीवन में कभी-कभी कैसी छोटी-छोटी, कैसी बेवक़ूफ़ी की बातें अचानक, अनजाने ही महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं। पहले की भांति हमें उन पर हंसी आती है, हम उन्हें बकवास भी समझते हैं, लेकिन फिर भी हम उनकी अवहेलना नहीं कर पाते। पर ख़ैर, हम इसकी चर्चा नहीं करेंगे! मेरा मन खिला हुआ है। मैं तो मानो जीवन में पहली बार इन फ़र वृक्षों को, मेपल और भोज वृक्षों को देख रहा हूं और सब कुछ मुझे उत्सुकता से देख रहा है, मेरी प्रतीक्षा कर रहा है। कितने सुन्दर पेड़ हैं ये और अगर सोचा जाये तो कितनी सुन्दर ज़िन्दगी होनी चाहिये इनके आस-पास!

(**कोई पुकारता है : "हो! हो!"**)

चलना चाहिये, वक़्त हो गया ... देखिये, यह पेड़ सूख गया, फिर भी वह दूसरों के साथ हवा में झूमता है। तो मुझे ऐसा लगता है कि अगर मैं मर भी गया तो किसी न किसी रूप में जीवन में भाग लेता रहूंगा। तो विदा, मेरी प्यारी ... (**उसके हाथ चूमता है**) तुमने मुझे जो काग़ज़ दिये थे, वे कैलेण्डर के नीचे मेरी मेज़ पर रखे हैं।

इरीना : मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी।

तुज़ेनबाख़ (**घबराकर**) : नहीं, नहीं। (**जल्दी से जाता है, वीथिका पर रुकता है**) इरीना!

इरीना : क्या बात है?

तुज़ेनबाख़ (यह न जानते हुए कि क्या कहे) : मैंने आज कॉफ़ी नहीं पी। ज़रा कह देना कि मेरे लिये कॉफ़ी तैयार कर दें... **(जल्दी से जाता है)**

(इरीना सोच में डूबी हुई खड़ी रहती है, इसके बाद मंच के पिछले भाग में जाकर झूले पर बैठ जाती है। बच्चागाड़ी के साथ अन्द्रेई आता है, फ़ेरापोन्त की झलक मिलती है)

फ़ेरापोन्त : अन्द्रेई सेर्गेयेविच, ये काग़ज़ तो मेरे नहीं, सरकारी हैं। मैंने तो इन्हें नहीं बनाया है।

अन्द्रेई : ओह, कहां गया मेरा वह बीता ज़माना जब मैं जवान था, हंसमुख और समझदार था, जब मैं प्यारे-प्यारे सपने देखता था, मेरे ऊंचे-ऊंचे विचार थे, जब मेरा वर्त्तमान और भविष्य आशा की किरणों से आलोकित थे? किसलिये हम जीवन आरम्भ करते ही बुझ-से जाते हैं, रूखे, ग़ैरदिलचस्प, काहिल, उदासीन, निकम्मे और क़िस्मत के मारे हो जाते हैं... हमारे शहर को बसे हुए दो सौ साल हो गये हैं, उसकी एक लाख की आबादी है, लेकिन उसमें एक भी आदमी तो ऐसा नहीं जो दूसरों से अलग हो, न तो पहले था और न आज ही कोई महान व्यक्ति है, न कोई विद्वान है, न चित्रकार है, कोई इतना-सा भी उल्लेखनीय व्यक्ति नहीं है जो ईर्ष्या पैदा करे या अपने पद-चिह्नों पर चलने की प्रेरणा दे... सब सिर्फ़ खाते, पीते, सोते और उसके बाद मर जाते हैं... दूसरे जन्म लेते हैं और वे भी खाते, पीते और सोते हैं तथा इसलिये कि ज़िन्दगी ऊब के मारे बोझ न बन जाये, सभी तरह की बेहूदा निन्दा-चुग़लियों, वोद्का, जुए और मुक़-दमेबाज़ी से अपनी ज़िन्दगी में रंगीनी लाते हैं। पत्नियां अपने पतियों की आंखों में धूल झोंकती हैं, पति झूठ बोलते हैं और ऐसा ढोंग करते हैं कि वे न तो कुछ देखते हैं, न सुनते हैं। इस सारी

गन्दगी का बच्चों पर अवश्य ही बुरा प्रभाव पड़ता है, उनमें ईश्वरीय आलोक की किरण बुझ जाती है और वे भी अपने माता-पिताओं की भांति दयनीय तथा मुरदे-से बन जाते हैं ... (**फ़ेरापोन्त से खीझते हुए**) क्या चाहते हो ?

फ़ेरापोन्त : ऐं ..? काग़ज़ों पर हस्ताक्षर कर दीजिये।

अन्द्रेई : जान खा गये तुम मेरी।

फ़ेरापोन्त (काग़ज़ सामने रखते हुए) : नगर-पालिका का दरबान अभी-अभी कह रहा था ... कह रहा था मानो जाड़े में पीटर्सबर्ग में दो सौ डिग्री तक की ठण्ड पड़ी।

अन्द्रेई : वर्तमान घृणा पैदा करता है, लेकिन जब मैं भविष्य की बात सोचता हूं तो कितना अच्छा लगता है ! मन से बोझ हट जाता है, विस्तारों की अनुभूति होती है, चमकते हुए क्षितिज उभरते हैं, मुझे स्वतन्त्रता के दर्शन होते हैं, यह देखता हूं कि कैसे मैं और मेरे बच्चे काहिली, क्वास पेय, बत्तख़ के साथ गोभी के चटख़ारों, दोपहर के भोजन के बाद झपकी और सभी तरह की हरामख़ोरी से मुक्त हो जाते हैं ...

फ़ेरापोन्त : कहते हैं कोई दो हज़ार आदमी ठण्ड से मर गये। लोगों का बुरा हाल हो गया, हाय-तोबा मच गयी। याद नहीं कि पीटर्सबर्ग में ऐसा हुआ या मास्को में।

अन्द्रेई (कोमल भावनाओं के आवेग में) : मेरी प्यारी बहनो, मेरी अनूठी बहनो ! (**आंसू भरकर**) माशा, मेरी प्यारी बहन ...

नताल्या (खिड़की से) : कौन यहां इतने ऊंचे-ऊंचे बातचीत कर रहा है ? यह तुम हो अन्द्रूशा ? सोफ़्या बिटिया को जगा दोगे। शोर नहीं करो, सोफ़्या सो गयी है। तुम तो निरे भालू हो। (**खीझते हुए**) अगर बातें ही करना चाहते हो तो बच्चागाड़ी किसी और को दे दो। फ़ेरापोन्त, मालिक से बच्चागाड़ी ले लो !

फ़ेरापोन्त : जो हुक्म ! (**बच्चागाड़ी ले लेता है**)

अन्द्रेई (चकराते हुए) : मैं धीरे-धीरे बात कर रहा हूं।

नताल्या (खिड़की के पीछे कमरे में अपने बेटे को सहलाते हुए) : बेटे बोबिक, ओ शरारती बोबिक! दुष्ट बोबिक!

अन्द्रेई (काग़ज़ों पर नज़र डालते हुए) : अच्छी बात है, मैं इन सभी काग़ज़ों को देख लेता हूं, इन पर हस्ताक्षर कर देता हूं और तुम इन्हें दफ़्तर में वापस ले जाना ... **(काग़ज़ों को पढ़ता हुआ घर में जाता है। फ़ेरापोन्त बच्चागाड़ी को दूर बाग़ में ले जाता है)**

नताल्या (कमरे में) : बोबिक, तुम्हारी अम्मां का क्या नाम है? मेरे प्यारे, राज दुलारे! यह कौन है? यह है भूआ ओल्गा। कहो भूआ से : नमस्ते, भूआ ओल्गा!

(भीख मांगनेवाला एक पुरुष और एक युवती वायलिन और आर्फ़ा बजाते हुए आते हैं। वेर्शीनिन, ओल्गा और अनफ़ीसा घर से बाहर निकलते हैं और घड़ी भर को चुपचाप संगीत सुनते रहते हैं। इरीना पास आती है)

ओल्गा : हमारा बाग़ तो अब आम रास्ता हो गया, सभी यहां से पैदल और घोड़ों पर आते-जाते हैं। आया, इन गाने-बजानेवालों को कुछ दे दो! ..

अनफ़ीसा (देती है) : अब जाओ भले लोगो, भगवान तुम्हारा भला करे। **(गायक-वादक सिर झुकाकर चले जाते हैं)** दुख-दर्दों के मारे हैं बेचारे। अगर पेट भरा हो तो कौन ऐसे गलियों की धूल छानता और गाता-बजाता फिरेगा। **(इरीना से)** नमस्ते, इरीना बेटी! **(उसे चूमती है)** रानी बिटिया, जी रही हूं। बड़े मज़े से जी रही हूं! प्यारी ओल्गा के साथ हाई स्कूल के सरकारी घर में रह रही हूं, मेरी गुड़िया। भगवान ने बुढ़ापे में मेरी सुन ली। मैं पापिन तो कभी ऐसे ठाठ से रही ही नहीं थी ...

बड़ा, सरकारी घर, उसमें मेरा अलग कमरा और चारपाई। सब कुछ सरकारी। रात को आंख खुल जाती है तो सोचती हूं – हे भगवान, हे मां मरियम, मुझसे बढ़कर ख़ुशक़िस्मत भी क्या कोई आदमी है इस दुनिया में!

वेर्शीनिन (घड़ी पर नज़र डालकर) : हम लोग अब जानेवाले हैं, ओल्गा सेर्गेयेव्ना। मेरे जाने का वक़्त हो गया।

(ख़ामोशी)

मैं आपके लिये सभी तरह की हार्दिक शुभ कामनायें करता हू ... मारीया सेर्गेयेव्ना कहां है?

इरीना : कहीं बाग़ में ही है ... मैं जाकर ढूंढ़ लाती हूं उसे।

वेर्शीनिन : बड़ी मेहरबानी होगी। मैं जल्दी में हूं।

अनफ़ीसा : मैं भी जाकर ढूंढ़ती हूं। (**पुकारती है**) बिटिया माशा, कहां हो तुम?

(इरीना के साथ बाग़ में दूर चली जाती है)

बिटिया माशा, हो ... हो!

वेर्शीनिन : हर चीज़ का कभी तो अन्त होता ही है। अब हम लोग जुदा हो रहे हैं। (**घड़ी पर नज़र डालता है**) शहरवालों ने एक तरह से हमें विदाई-भोज दिया, हम वहां शेम्पेन पीते रहे, शहर के मेयर ने भाषण दिया। मैं खाता-पीता और भाषण सुनता रहा, मगर मेरा दिल यहां था, आप लोगों के पास ... (**बाग़ में सभी ओर दृष्टि दौड़ाता है**) आप लोगों के साथ बहुत घुल-मिल गया था।

ओल्गा : क्या फिर कभी हमारी भेंट होगी या नहीं?

वेर्शीनिन : शायद नहीं होगी।

(**ख़ामोशी**)

मेरी बीवी और दोनों बच्चियां कोई दो महीने तक अभी यहां और रहेंगी। अगर कोई बात हो जाये या उन्हें किसी तरह की ज़रूरत पड़ जाये तो कृपया ...

ओल्गा: हां, हां, यह भी कोई कहने की बात है। आप बिल्कुल बेफ़िक्र रहे।

. (**ख़ामोशी**)

शहर में कल एक भी फ़ौजी नहीं रहेगा, सब कुछ बीती कहानी बनकर रह जायेगा और, ज़ाहिर है, हमारे लिये नयी ज़िन्दगी शुरू होगी ...

(**ख़ामोशी**)

सब कुछ हमारे मन के उलट हो रहा है। मैं मुख्य अध्यापिका नहीं बनना चाहती थी, लेकिन फिर भी बन गयी। मतलब यह कि मास्को जाना हमारी क़िस्मत में नहीं है ...

वेर्शीनिन: तो ... सभी मेहरबानियों के लिये आप सबका बहुत बहुत शुक्रिया ... अगर मुझसे कोई भूल-चूक हो गयी हो तो माफ़ कर दीजिये ... मैं बहुत, बहुत ज़्यादा बातें करता था – इसके लिये भी क्षमा चाहता हूं, मेरे बारे में कुछ भी बुरा नहीं सोचियेगा।

ओल्गा (आंखें पोंछकर): माशा क्यों नहीं आती ...

वेर्शीनिन: विदा के इन क्षणों में आपसे और क्या कहूं? किस चीज़ के बारे में फ़लसफ़ा झाड़ूं? ... (**हंसता है**) ज़िन्दगी कठिन है। हममें से बहुतों को वह सूनी-सूनी और निराशाजनक लगती है। फिर भी यह मानना होगा कि वह अधिकाधिक स्पष्ट और

आसान होती जा रही है तथा सम्भवतः वह समय दूर नहीं जब वह एकदम स्पष्ट, रोशन हो जायेगी। (**घड़ी पर नज़र डालता है**) मेरे चलने का वक़्त हो गया! पहले मानवजाति युद्धों में जुटी रहती थी, जंगी कूचों, हमलों, जीतों में अपने को उलझाये रहती थी। लेकिन अब तो यह सब पुरानी बात हो गयी है, इसने बहुत बड़ी ख़ाली जगह छोड़ दी है जिसे भरने के लिये हमारे पास अभी कुछ नहीं है। मानवजाति बड़े जोश से इसकी खोज कर रही है और, ज़ाहिर है, कि वह ढूंढ़ लेगी, खोज लेगी। काश, वह जल्दी से ही ऐसा कर ले!

(**ख़ामोशी**)

जानती हैं, अगर कठिन श्रम के साथ शिक्षा और शिक्षा के साथ कठिन श्रम का मेल हो जाता तो कितना अच्छा होता। (**घड़ी पर नज़र डालता है**) लेकिन ख़ैर, मुझे जाना चाहिये ...

ओल्गा: लो वह आ रही है।

(**माशा आती है**)

वेर्शीनिन: मैं विदा लेने आया हूं ...

(**ओल्गा एक ओर को हट जाती है ताकि वह इनके विदा लेने में बाधक न हो**)

माशा (ध्यान से उसके चेहरे को देखते हुए): तो विदा ...

(**बड़े प्यार से एक-दूसरे को चूमते हैं**)

ओल्गा: बस, बस ...

(माशा ज़ोर से सिसकती है)

वेर्शीनिन : मुझे पत्र लिखना ... भूलना नहीं ! अब जाने दो ... वक़्त हो गया ... ओल्गा सेर्गेयेव्ना, इसे सम्भालिये, मुझे ... जाना चाहिये ... देर हो गयी ... **(भाव-विह्वल होकर ओल्गा के हाथ चूमता है, फिर से माशा का आलिंगन करता है और जल्दी से चला जाता है)**

ओल्गा : बस करो, माशा ! अब और नहीं रोओ, मेरी प्यारी बहन ...

•

(कुलीगिन आता है)

कुलीगिन (परेशानी अनुभव करते हुए) : कोई बात नहीं, रो लेने दीजिये, रो लेने दीजिये ... मेरी अच्छी माशा, मेरी प्यारी माशा ... तुम मेरी बीवी हो और सब कुछ के बावजूद मैं बहुत ख़ुशक़िस्मत हूं ... मैं कोई शिकवा-शिकायत नहीं करता हूं, किसी तरह का कोई ताना-बोली नहीं देता हूं ... ओल्गा इस बात की गवाह है ... हम फिर से पहले की तरह रहने लगेंगे और मैं तुम्हें कभी एक भी भला-बुरा शब्द नहीं कहूंगा, कभी इसका इशारा तक नहीं करूंगा ...

माशा (सिसकियों को दबाते हुए) : सागर के उस ढालू तट पर शाहबलूत का पेड़ हरा ... सोने की ज़ंजीर बंधी उस पर ... मैं पागल हो रही हूं ... सागर के उस ढालू तट पर ... शाहबलूत का पेड़ हरा ...

ओल्गा : अपने को सम्भालो माशा ... शान्त हो जाओ ... उसे पानी पिलाओ।

माशा : मैं अब रो ही नहीं रही हूं ...

कुलीगिन : वह अब रो नहीं रही है ... वह तो बहुत दयालु है ...

(दूरी पर गोली चलने की दबी-घुटी आवाज़ सुनाई देती है)

माशा : सागर के उस ढालू तट पर शाहबलूत का पेड़ हरा, सोने की ज़ंजीर बंधी उस पर ... बिल्ला हरा हरा ... शाहबलूत का पेड़ हरा ... सब कुछ गड्डमड्ड हुआ जा रहा है ... **(पानी पीती है)** असफल जीवन ... मुझे अब कुछ भी तो नहीं चाहिये ... मैं अभी शान्त हो जाऊंगी ... अब किसी चीज़ से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता ... सागर के उस ढालू तट पर, क्या मतलब है इसका ? किसलिये ये शब्द मेरे दिमाग़ में हैं ? विचार गड्डमड्ड हो रहे हैं।

(इरीना आती है)

ओल्गा : अपने को शान्त करो, माशा। देखो न, कैसी समझदार बहन हो तुम मेरी ... आओ, हम कमरे में चलें।

माशा (खीझते हुए) : नहीं जाऊंगी मैं वहां। **(सिसकती है, किन्तु उसी क्षण सिसकना बन्द कर देती है)** मैं अब इस घर में नहीं जाती हूं और नहीं जाऊंगी ...

इरीना : आओ हम तीनों मिलकर यहां बैठ जायें और चुप रहें। कल तो मैं जा रही हूं न ...

(ख़ामोशी)

कुलीगिन : कल तीसरे दर्जे के एक छात्र से मैंने ये मूंछ-दाढ़ी छीन ली ... **(मूंछ-दाढ़ी लगाता है)** जर्मन भाषा के अध्यापक जैसा लगता हूं ... **(हंसता है)** ठीक कहता हूं न ? ये लड़के भी अच्छे ख़ासे मसखरे होते हैं।

माशा : सचमुच आप अपने स्कूल के जर्मन भाषा के अध्यापक जैसे लगते हैं।

ओल्गा (हंसती है) : हां।

(माशा रोती है)

इरीना : बस करो, माशा !

कुलीगिन : एकदम वैसा ही लगता हूं ...

(नताल्या आती है)

नताल्या (नौकरानी से) : क्या कहा ? सोफ़्या बिटिया के पास प्रोतोपोपोव बैठेंगे और बोबिक को अन्द्रेई घुमाने ले जाये। कितने झंझट हैं बच्चों के साथ ... **(इरीना से)** इरीना, तुम कल चली जाओगी – कितने अफ़सोस की बात है। ज़्यादा नहीं तो एक हफ़्ता तो और रुक जाओ। **(कुलीगिन को देखकर चीख़ती है। वह दाढ़ी-मूंछ उतारता है)** आप भी ख़ूब हैं, बिल्कुल ही डरा दिया मुझे ! **(इरीना से)** तुम्हारे साथ तो मेरा मन लग गया था और तुम क्या समझती हो कि तुमसे बिछुड़ते हुए मुझे दुख नहीं होगा ? वायलिन के साथ अन्द्रेई को तुम्हारे कमरे में भेज दूंगी – वहां बैठा हुआ वायलिन के तारों को रगड़ता रहे ! उसका कमरा हम सोफ़्या को दे देंगी। कैसी अद्भुत, कैसी अनूठी बच्ची है ! कितनी प्यारी बिटिया है ! आज उसने अपनी प्यारी-प्यारी आंखों से मुझे देखा और बोली : " अम्मा ! "

कुलीगिन : बहुत ही प्यारी बच्ची है, यह सही है।

नताल्या : तो इसका मतलब यह हुआ कि कल मैं यहां अकेली ही रह जाऊंगी। **(गहरी सांस लेती है)** सबसे पहले तो मैं फ़र वृक्षों की इस वीथिका को काट डालने का आदेश दूंगी और फिर इस मेपल वृक्ष को कटवा डालूंगी ... शामों को यह इतना भद्दा लगता है ... **(इरीना से)** प्यारी बहन, यह पेटी तो तुम्हें कुछ फबती नहीं ... अच्छी पसन्द नहीं है तुम्हारी ... कोई हल्के रंग की पेटी होनी चाहिये थी। और यहां हर जगह मैं फूल

ही फूल लगा देने का हुक्म दूंगी। महक ही महक हो जायेगी ... **(बिगड़ते हुए)** यहां बेंच पर यह कांटा क्यों पड़ा हुआ है? **(घर में जाकर नौकरानी से)** मैं पूछती हूं कि यहां बेंच पर यह कांटा क्यों पड़ा हुआ है? **(चिल्लाते हुए)** ख़बरदार जो ज़बान खोली!

कुलीगिन : लो, हो गयी चालू!

(नेपथ्य में कूच का संगीत बजाता है, सब ध्यान से सुनते हैं)

ओल्गा : तो फ़ौजी जा रहे हैं।

(चेबुतीकिन आता है)

माशा : हमारे लोग जा रहे हैं। तो ख़ैर ... उनकी यात्रा शुभ हो! **(पति से)** हमें घर चलना चाहिये ... मेरी टोपी और लबादा कहां गये?

कुलीगिन : मैंने उन्हें भीतर घर में ले जाकर रख दिया था ... अभी ले आता हूं। **(घर में जाता है)**

ओल्गा : हां, अब सभी अपने-अपने घर जा सकते हैं। जाने का वक़्त हो गया।

चेबुतीकिन : ओल्गा सेर्गेयेव्ना!

ओल्गा : क्या बात है?

(ख़ामोशी)

क्या बात है?

चेबुतीकिन : कुछ नहीं ... मालूम नहीं कि कैसे आपसे कहूं ... **(कान में कुछ फुसफुसाता है)**

ओल्गा (घबराकर) : नहीं, ऐसा नहीं हो सकता!

चेबुतीकिन : हां ... ऐसी ही बात है ... बिल्कुल थक-टूट गया हूं मैं, बहुत बुरी हालत है मेरी, मैं और बात नहीं करना चाहता ... (**दुखी मन से**) वैसे, कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता किसी भी चीज़ से !

माशा : क्या हो गया ?

ओल्गा (इरीना को बांहों में भरकर) : बड़ा ही मनहूस दिन है आज ... समझ में नहीं आता कि कैसे तुमसे कहूं, मेरी प्यारी बहन ...

इरीना : क्या हो गया ? जल्दी से कहिये – क्या हो गया ? भगवान के लिये जल्दी से ! (**रोती है**)

चेबुतीकिन : नवाब द्वन्द्व-युद्ध में मारा गया ...

इरीना (धीरे-धीरे रोती है) : मैं जानती थी, मैं जानती थी ...

चेबुतीकिन (मंच पर पीछे की ओर दूर जाकर बेंच पर बैठ जाता है) : थकान से दम निकला जा रहा है ... (**जेब से अख़बार निकालता है**) अच्छा है रो-धो ले ... (**धीरे-धीरे गुनगुनाता है**) तूम-त्रा ... त्रा ... त्रा ... मेरा हाल बुरा ... पर क्या फ़र्क़ पड़ता है किसी भी चीज़ से !

(तीनों बहनें एक-दूसरी से सटी खड़ी हैं)

माशा : ओह, कैसे संगीत बज रहा है ! वे हमसे दूर जा रहे हैं। एक तो बिल्कुल, बिल्कुल ही चला गया, हमेशा के लिये चला गया। फिर से अपनी ज़िन्दगी शुरू करने के लिये हम अकेली रह जायेंगी। जीना चाहिये ... जीना चाहिये ...

इरीना (ओल्गा की छाती पर सिर रखकर) : वह वक़्त आयेगा, जब सभी जान जायेंगे कि यह सब किसलिये है, किस कारण हैं ये दुख-दर्द, कोई राज़-रहस्य नहीं रहेंगे, लेकिन अभी

तो जीना चाहिये... काम करना, सिर्फ़ काम करना चाहिये! कल मैं अकेली ही जाऊंगी, स्कूल में पढ़ाऊंगी और अपनी सारी ज़िन्दगी उन्हीं को अर्पित कर दूंगी जिन्हें शायद इसकी ज़रूरत हो। अभी पतझर है, जल्द ही जाड़ा आ जायेगा, वह अपने साथ ढेरों बर्फ़ लायेगा, और मैं काम करूंगी, काम करूंगी...

ओल्गा (दोनों बहनों को बांहों में भरकर): ख़ुशी की स्वर-लहरियां हैं संगीत में, ऐसे उत्साह बढ़ा रहा है संगीत कि जीने को मन होता है! हे मेरे भगवान! वक़्त बीतेगा, हम सदा के लिये इस दुनिया से चले जायेंगे, हमें भुला दिया जायेगा, लोग हमारी शक्ल-सूरत, हमारी आवाज़ों को, और यह भी भूल जायेंगे कि कितने थे हम लोग। किन्तु हमारी व्यथायें-वेदनायें उनके लिये, जो हमारे बाद इस धरती पर रहेंगे, ख़ुशियों में बदल जायेंगी। इस दुनिया में सुख-शान्ति का राज होगा और जो आज जी रहे हैं वे उन्हें प्यार के शब्दों में याद करेंगे, उनके आभारी होंगे। अरी प्यारी बहनो, हमारी ज़िन्दगी का अभी अन्त नहीं हुआ। हम जियेंगी। इतनी ख़ुशीभरी, इतनी सुखद हैं संगीत की स्वर-लहरियां और ऐसे लगता है कि किसी भी क्षण हम यह जान जायेंगी कि किसलिये हम जीती हैं, किस-लिये दुख-दर्द सहती हैं... काश, हम यह जान सकतीं, जान सकतीं!

(संगीत अधिकाधिक धीमा होता जाता है। बहुत ख़ुश और मुस्कराता हुआ कुलीगिन माशा की टोपी और लबादा लाता है। अन्द्रेई उस बच्चागाड़ी को चलाता हुआ दिखाई देता है जिसमें बोबिक बैठा है)

चेबुतीकिन (धीरे-धीरे गाता है): तूम-त्रा-त्रा... मेरा हाल

बुरा ... (**अख़बार पढ़ता है**) मुझे किसी चीज़ से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता ! कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता !

ओल्गा : काश, हम जान सकतीं, जान सकतीं !

(परदा गिरता है)

•